स्वर्ण जयन्ती प्रकाशन 2013

BIHAR YOGA

सत्यम् आराधना

श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को समर्पित स्तुत्यावलि



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

सत्यम् आराधना

ॐ, प्रेम, मंगलम्

स्वामी निरंजन

सत्यम् आराधना

श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को समर्पित स्तुत्यावलि



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

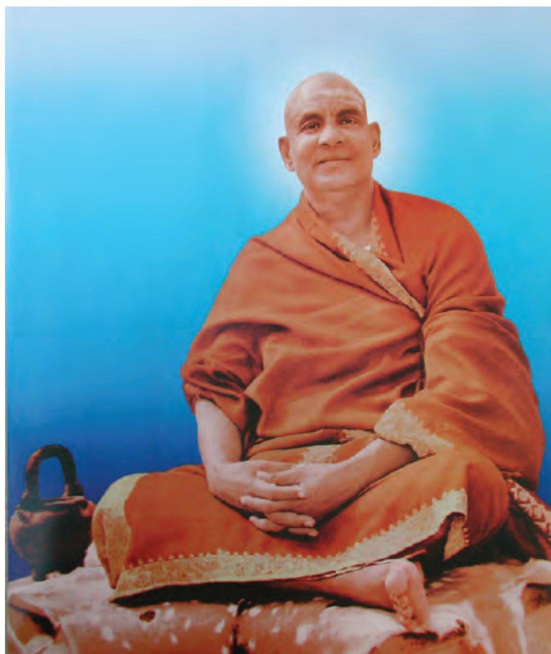
योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट द्वारा

प्रथम संस्करण 2013
द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण 2013
पुनर्मुद्रण 2014

ISBN: 978-93-81620-39-7

प्रकाशक एवं वितरक—योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट,
मुंगेर, बिहार, भारत
मुद्रक—एजीएन ऑफसेट प्रिंटर्स,
ग्रेटर नोएडा

वेबसाइट : www.biharyoga.net



सविनय समर्पण

स्वामी शिवानन्द सरस्वती के चरणों में
जिन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को योग के रहस्यों की शिक्षा दी



नमो नारायण

योगविद्या भारतवर्ष की सबसे प्राचीन संस्कृति और जीवन-पद्धति है तथा इसी विद्या के बल पर भारतवासी प्राचीनकाल में सुखी, समृद्ध और स्वस्थ जीवन बिताते थे। जब से भारत में योग विद्या का ह्रास हुआ, तभी से भारतवासी गरीब, दु:खी और अस्वस्थ हैं। पूजा-पाठ, धर्म-कर्म से शान्ति मिलती है और योगाभ्यास से धन-धान्य, समृद्धि और स्वास्थ्य। भारत में सुख, समृद्धि, शक्ति और स्वास्थ्य के लिए हर व्यक्ति को योगाभ्यास करना चाहिए।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
रिखियापीठ, 2005

अनुक्रमणिका

परिचय

शिष्य के जीवन में गुरु प्रकाशस्तम्भ की भूमिका निभाते हैं। गुरु शब्द की व्याख्या है – *'गुकार: तमसि प्रोक्तो रुकार: तन्निवर्तक:'* मतलब 'गु' का अर्थ अंधकार है और 'रु' का अर्थ हटाने वाला। गुरु जीवन से अंधकार को हटाते हैं। कुछ मनीषियों का मत है कि गुरु शब्द में 'गु' गुण-व्यंजक है तथा 'रु' रूप-व्यंजक। गुण और रूप में कारण-कार्य सम्बन्ध है। परमात्मा के गुण जब मनुष्य में अवतरित होते हैं तो उसका रूप परमात्मा का ही बन जाता है। ब्रह्म की निर्गुण-निराकार सत्ता मनुष्य के सगुण-साकार स्वरूप में ढल जाती है। इस दृष्टि से गुरु सूक्ष्म परब्रह्म की स्थूल अभिव्यक्ति का ही नाम है। करुणावश अवतरित होकर माया के दुस्तर महासमुद्र में डूबते-उतराते जीव को बाँह पकड़कर पार लगा देना उनका महान् प्रयोजन होता है।

भारतीय संस्कृति में गुरु को संसार में सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है। किसी व्यक्ति में यह शक्ति नहीं कि वह गुरु की महिमा के मूल्य को निर्धारित कर सके। हमारी शक्ति केवलमात्र इस निश्चय पर जा पाती है कि गुरु श्रेष्ठ होते हैं और सचमुच प्रशंसनीय होते हैं। वैदिक ऋषियों ने जहाँ एक ओर *'यस्य देवे पराभक्ति: यथा देवे तथा गुरौ, तस्यैते कथिता ह्यर्था प्रकाशन्ते महात्मन:'* कहकर गुरु-भक्ति की अनिवार्यता को ईश्वर-भक्ति के समान बताया, वहीं कबीर जैसे संतों ने *'गुरु गोविंद दोऊ खड़े काकें लागूँ पाय, बलिहारी गुरु आपनो जिन गोविंद दियो मिलाय'* कहकर गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा दर्जा दिया। सच तो यह है कि गुरु अपने समान कई शिष्य बना सकते हैं, लेकिन कई शिष्य मिलकर भी एक गुरु का निर्माण नहीं कर सकते।

विश्वगुरु श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

ऐसे दुर्लभ सद्‌गुरुओं की श्रेणी में एक नाम ऐसा आता है, जिसके श्रवण मात्र से श्रांति, पुकार मात्र से पुण्य और स्मरण मात्र से सर्वसिद्धि अनायास प्राप्त हो जाती है। वह नाम है – *सत्यम्*, जिस नाम से भूमण्डलेश्वर स्वामी शिवानन्द सरस्वती अपने प्रिय

शिष्य, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को पुकारा करते थे। यही नाम पूरे विश्व में गूँजने लगा, जब गुरु का आदेश और आशीष पाकर, स्वामी सत्यानन्द जी अध्यात्म-गगन के दीप्तिमान् नक्षत्र बन, सर्वत्र अपनी प्रकाश-रश्मियाँ बिखेरने लगे। निशा-गगन में जगमगाते तारों को शायद कोई गिन भी ले, मगर इस आधुनिक ऋषि की कृतियों, उपलब्धियों और विभूतियों का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह पाना असम्भव है। लेखक की लेखनी रुक जाती है, कवि की वाणी थम जाती है, पर सत्यम्-सागर की अतुलित अमृतराशि की थाह नहीं ले पाती।

न भूतो न भविष्यति

स्वामी सत्यानन्द जी का योग, अध्यात्म एवं संस्कृति-नवनिर्माण के क्षेत्र में अद्भुत और अभूतपूर्व योगदान अविस्मरणीय रहेगा। उनके जैसा सर्वगुण-सम्पन्न युगद्रष्टा विश्वगुरु, *न भूतो न भविष्यति।*

शायद ये शब्द शिष्यों के चपल उद्गार मात्र प्रतीत हों। वैसे भी शिष्यों द्वारा वंदित-वीजित होना किसी भी गुरु के लिए बड़ी बात नहीं। पर सच तो यह है कि स्वामी सत्यानन्द जी उन विरले महात्माओं में से हैं, जिन्हें न केवल शिष्यों की शंसा प्राप्त हुई, बल्कि गुरु की गँभीर गिरा भी। अपने पट्टशिष्य के बारे में स्वामी शिवानन्द जी की लेखनी से उद्गार निकले –

'इतनी कम उम्र में ऐसा प्रखर वैराग्य दुर्लभ है। स्वामी सत्यानन्द नचिकेता तत्त्व से ओत-प्रोत हैं। तथापि वे जो भी काम हाथ में लेते हैं, उसे निपुणता और कुशलता से पूरा करके ही छोड़ते हैं। चार-चार लोगों का काम वे अकेले ही कर जाते हैं, पर कभी शिकायत नहीं करते। उनकी विभूति सर्वांगीण है, फिर भी वे विनम्र और सीधे-सादे हैं। वे एक आदर्श साधक और निष्काम सेवक हैं, दिव्य जीवन संघ के साक्षात् आधारस्तम्भ हैं!'

समर्थ गुरु ने अपने आदर्श शिष्य को 'अध्यात्मरत्न', 'ज्ञानयज्ञोपभृत्', 'प्रवचन-प्रवीण' और 'प्रेस-स्तम्भ' जैसी महिमामण्डित उपाधियों से भी अलंकृत किया। ऐसे ही एक अवसर पर उन्होंने कहा था, 'प्रभु की कृपा से यह सिद्ध हो चुका है कि आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में अपनी उत्कृष्ट सेवाओं, तथा सत्य, प्रेम और पवित्रता पर दृढ़ आस्था के कारण श्री स्वामी सत्यानन्द 'ज्ञानयज्ञोपभृत्' की उपाधि के परम पात्र हैं। अत: अपनी शुभकामनाओं के साथ मैं उन्हें यह सम्मान प्रदान करता हूँ, और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे स्वामी सत्यानन्द को स्वास्थ्य, दीर्घायु, शान्ति, समृद्धि, परमानन्द, सर्वांगीण सफलता, विद्या, तुष्टि, पुष्टि और दैवी ऐश्वर्य से सम्पन्न करें।'

शिष्य की श्लाघा को शिवानन्द जी ने शब्दों तक ही सीमित न रखा, बल्कि शिष्य के इकतीसवें जन्मदिवस पर एक भव्य समारोह आयोजित कर, गुरु-शिष्य-परम्परा में एक नया अध्याय जोड़ दिया। शिष्यों को गुरु का जन्मदिवस मनाते तो कई बार देखा है, परन्तु गुरु द्वारा शिष्य का जन्मदिवस मनाया जाना... *न भूतो न भविष्यति।*

बात यहीं समाप्त नहीं होती, सत्यम् की लीला ही है कुछ ऐसी निराली। उनके गुरु ने न केवल उनका जन्मदिवस धूमधाम से मनाया, बल्कि इस शुभ अवसर पर एक विशेष स्मारक-ग्रंथ, *'स्वामी सत्यानन्द– हिज़ लाइफ एण्ड वर्क'* भी प्रकाशित किया, जिसमें उनके गुरु-भाइयों एवं शुभचिन्तकों ने भावभीनी श्रद्धांजलियों और स्तुतियों की झड़ी लगा दी। किसी ने गगनगामी होमा पक्षी की उपमा दी तो किसी ने बुद्ध भगवान की तो किसी ने विदेहराज जनक के अभिनव अवतार की। शिष्य की शंसा पाना सरल है, गुरु की कठिनतर। पर जहाँ तक गुरु-भाइयों का प्रश्न है, यह असम्भव-सा है। वहाँ प्राय: स्पर्धा, ईर्ष्या और पिशुनता की कुभावनाएँ ही देखने में आती हैं। ऐसे में गुरु-भाइयों की सहज सद्भावना और मुक्तकण्ठ महिमागान का पात्र बनना... *न भूतो न भविष्यति।*

सत्यम् आराधना

आराध्य की आराधना के लिए, साधना में भावना लाने के लिए, शास्त्रों में स्तुति को अनिवार्य साधन माना गया है। माहेश्वर तंत्र में भगवान शिव माता पार्वती को स्तुति की महिमा बतलाते हुए कहते हैं–

जपसेवादिकं चापि विना स्तोत्रं न सिद्ध्यति ।
स्तुति प्रसादनकरी तस्मात् स्तोत्रं वदामि ते ॥

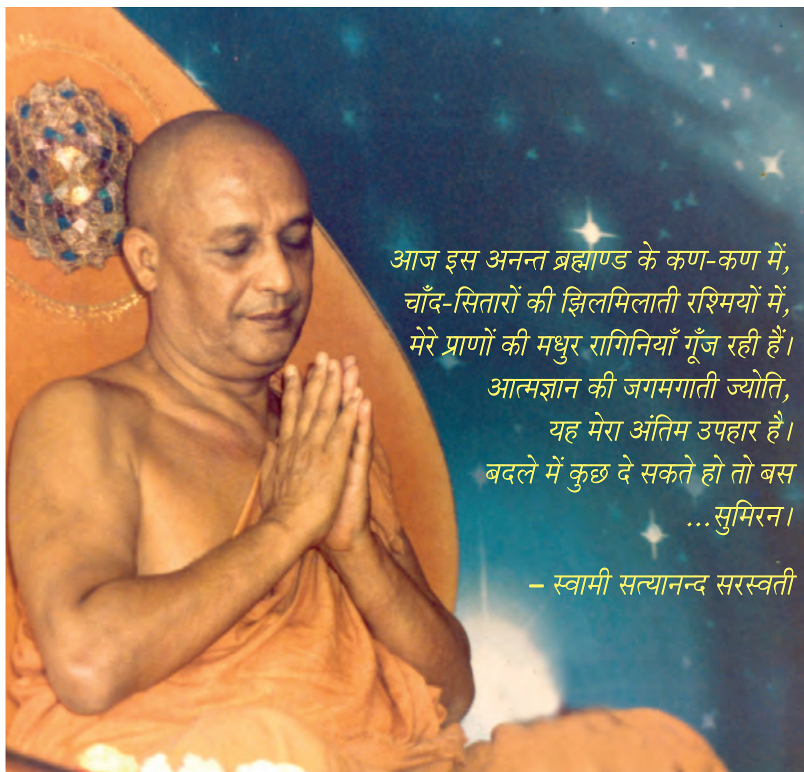
'स्तुति के बिना मंत्र-जप, ईश-सेवा, आदि साधनाएँ भी सिद्ध नहीं होतीं। स्तुति से भक्त और भगवान, दोनों प्रसन्न होते हैं। इसलिए अब मैं तुम्हें स्तुति सुनाता हूँ।'

अपने गुरु, गुरु-भाइयों और शिष्यों की त्रिविध-स्तुति-धारा से अभिषिक्त इस यशस्वी महापुरुष का कीर्तिगान करने वाली कतिपय स्तुतियों का संग्रह है यह सत्यम् आराधना। महासमाधि में लीन होकर भले ही श्री स्वामीजी का पार्थिव देह दृष्टि से ओझल हो गया है, पर अपने व्योमवद्-व्याप्त-देह में वे आज सर्वत्र विराजमान हैं। उनका कालजयी नाम अंतरिक्ष में तैरती आकाशगंगाओं में तराशा गया है; आसमान में उड़ते रंग-बिरंगे बादलों में उनके चिर-परिचित चेहरे की झलक नजर आती है; मुस्कुराते मुकुलों पर डोलते तुषार-कणों में उनकी आँखों की जगमगाहट दिखलाई देती है; हवा में झूमते वट-वृक्ष उनकी वरदहस्त मुद्राओं को परिलक्षित करते हैं। बहती

पवन बुदबुदाती है – *सत्यम्*, सरिताओं का चपल सलिल गुनगुनाता है – *सत्यम्*, रवि-रश्मियों में छवि झिलमिलाती है – *सत्यम्*, मन्थर गति से उड़ते-पड़ते हिमकणों का स्वरूप है – *सत्यम्*। कोयल की मीठी बोली सत्यम् की अमृत-वाणी को गिरि-कानन-ग्राम-नगर पहुँचाती है, महकती मंजरियाँ सत्यम् की आत्म-सुरभि को चहुँ ओर फैला देती हैं, और अंधियारी रातों में सत्यम् की आभा सितारों की जगमगाती किरणों से उतरकर शीतलता प्रदान करती है। सत्यम् की विशेष रूप से प्रतिष्ठा अपने भक्तों और शिष्यों के हृदय में है, जहाँ वेदान्ताम्बुजसूर्यवत् वे नित-निरंतर तमोहारी प्रकाश बिखेरते हुए, ज्ञान का सुन्दर कमल पुष्पित कर रहे हैं।

अपने परमप्रिय गुरु, इष्ट एवं आराध्य के सुमिरन को अगर यह स्तुति-संग्रह सुगम बना सके तो इसका प्रयोजन सिद्ध हो जाएगा।

– सम्पादक





गुरु-स्तोत्रम्

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 1 ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 2 ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 3 ॥

स्थावरं जंगमं व्याप्तं यत्किञ्चित् सचराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 4 ॥

चिन्मयं व्यापितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 5 ॥

सर्वश्रुतिशिरोरत्न विराजितपदाम्बुजः।
वेदान्ताम्बुजसूर्याय तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 6 ॥

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनः।
बिन्दुनादकलातीतः तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 7 ॥

ज्ञानशक्ति-समारूढः तत्त्व-माला विभूषितः।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदाता च तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 8 ॥

अनेक जन्मसम्प्राप्त कर्मबन्धविदाहिने।
आत्मज्ञान प्रदानेन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 9 ॥

शोषणं भव-सिन्धोश्च ज्ञापनं सार-संपदः।
गुरोर्पादोदकं सम्यक् तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 10 ॥

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः।
तत्त्व-ज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 11 ॥

मन्नाथः श्री जगन्नाथः मद्गुरुः श्री जगद्गुरुः।
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 12 ॥

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परम-दैवतम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 13 ॥

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्त्तिः पूजामूलं गुरोर्पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोर्कृपा ॥ 14 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥



गुरु-पादुका-स्तोत्रम्

अनन्तसंसारसमुद्रतार-नौकायिताभ्यां गुरुभक्तिदाभ्याम्।
वैराग्यसाम्राज्यदपूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 1 ॥

कवित्ववाराशिनिशाकराभ्यां दौर्भाग्यदावाम्बुदमालिकाभ्याम्।
दूरीकृतानम्रविपत्तिताभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 2 ॥

नता ययोः श्रीपतितां समीयुः कदाचिदप्याशु दरिद्रवर्याः।
मूकाश्च वाचस्पतितां हि ताभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 3 ॥

नालीकनीकाशपदाहृताभ्यां नानाविमोहादि निवारिकाभ्याम्।
नमज्जनाभीष्टततिप्रदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 4 ॥

नृपालिमौलिव्रजरत्नकान्ति-सरिद्विराजज्झषकन्यकाभ्याम्।
नृपत्वदाभ्यां नतलोकपङ्क्तेः नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 5 ॥

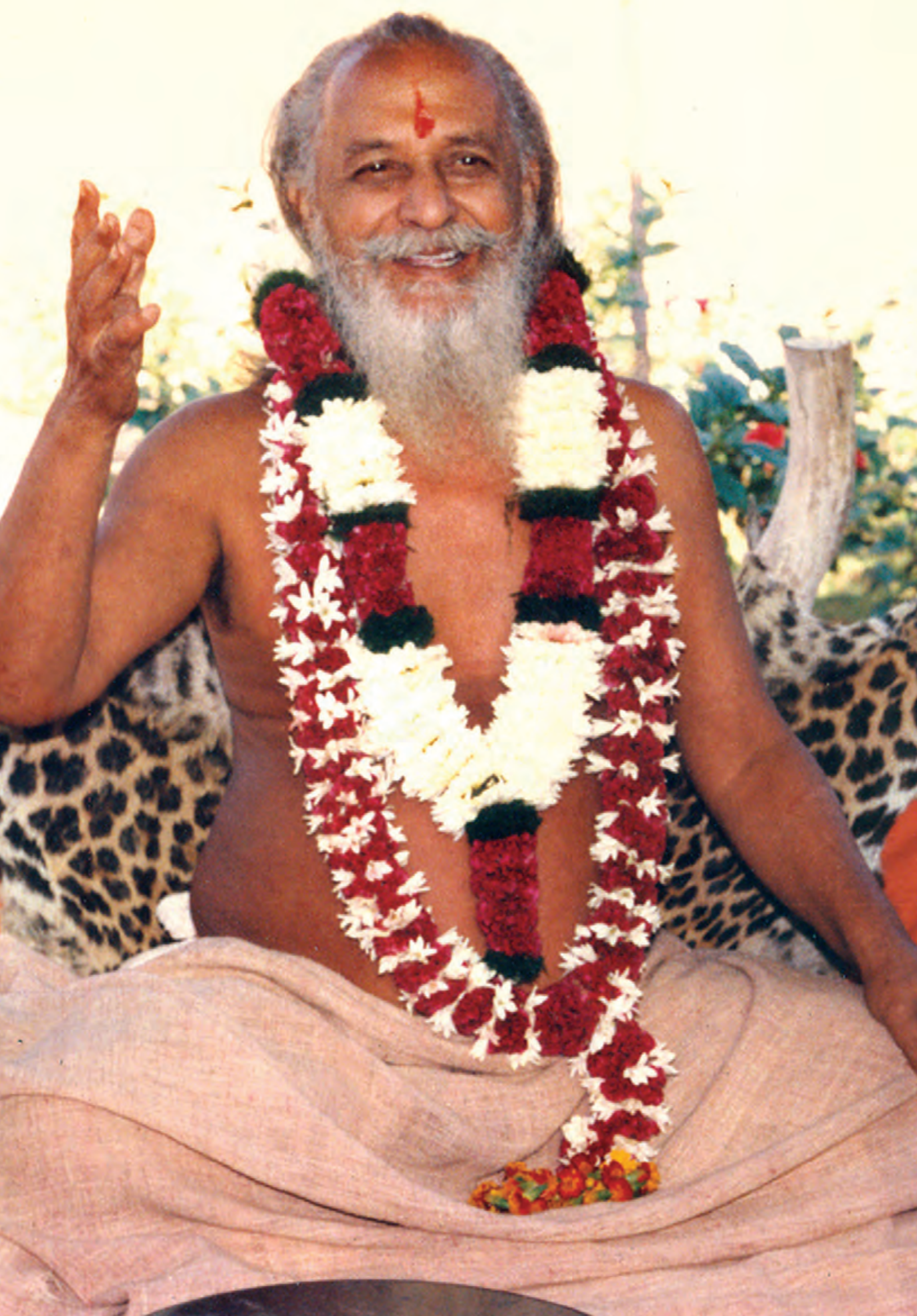
पापान्धकारार्क परम्पराभ्यां तापत्रयाहीन्द्रखगेश्वराभ्याम्।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 6 ॥

शमादिषट्कप्रदवैभवाभ्यां समाधिदानव्रतदीक्षिताभ्याम्।
रमाधवाङ्घ्रिस्थिरभक्तिदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 7 ॥

स्वार्चापराणामखिलेष्टदाभ्यां स्वाहासहायाक्षधुरन्धराभ्याम्।
स्वान्ताच्छभावप्रद पूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 8 ॥

कामादिसर्पव्रजगारुडाभ्यां विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्याम्।
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 9 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



सद्गुरु वन्दना

भवसागर तारण कारण हे,
रविनन्दन बन्धन खण्डन हे ।
शरणागत किंकर भीत मने,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥ x 2

हृदि कन्दर तामस भास्कर हे,
तुम विष्णु प्रजापति शंकर हे।
परब्रह्म परात्पर वेद भणे,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥ x 2

मन-वारण कारण अंकुश हे,
नर त्राण करे हरि चाक्षुष हे।
गुणगान परायण देवगणे,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥ x 2

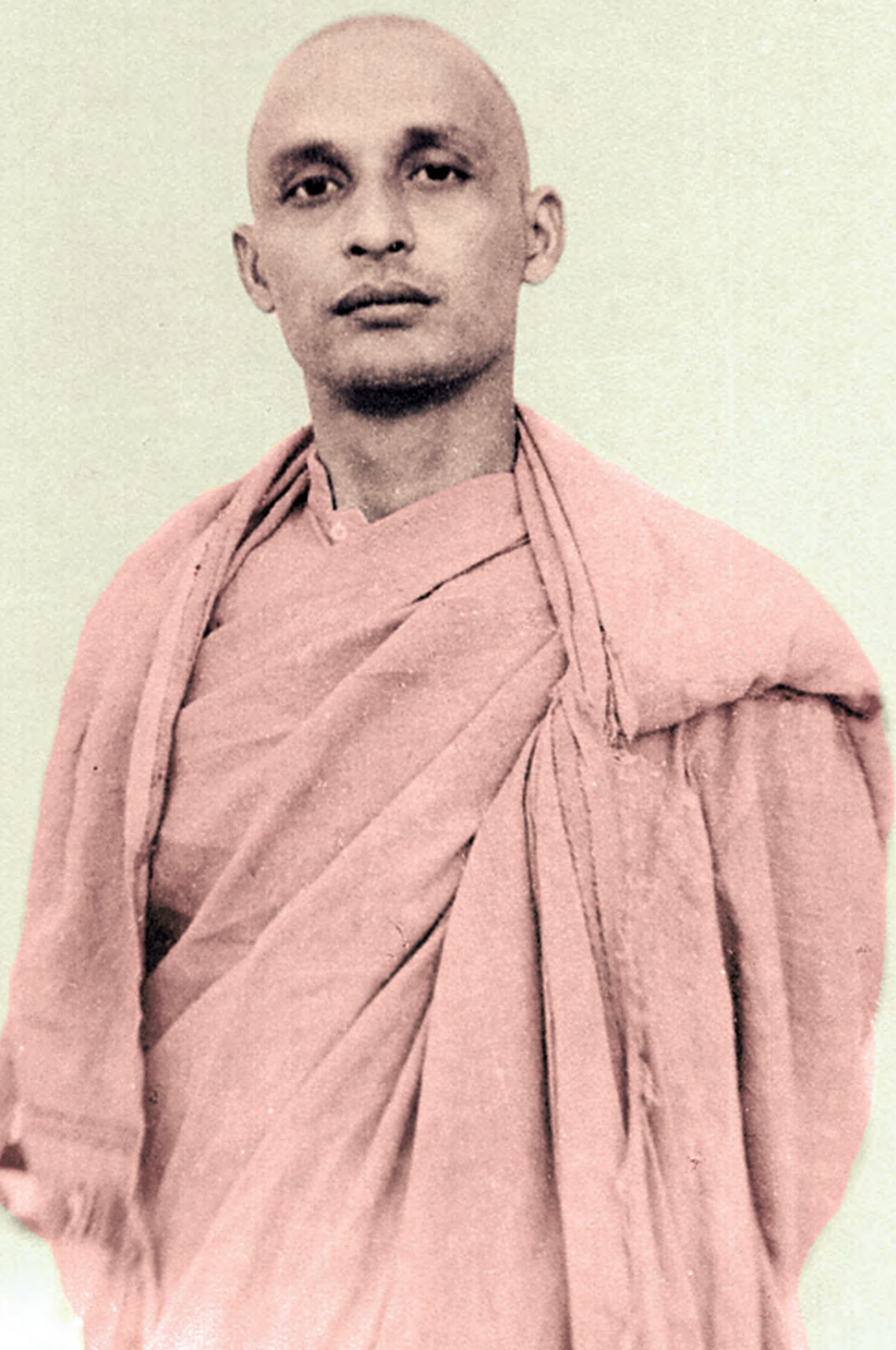
कुल-कुण्डलिनी तुम भञ्जक हे,
हृदि-ग्रन्थि विदारण कारण हे।
महिमा तव गोचर शुद्ध मने,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥ x 2

अभिमान प्रभाव विमर्दक हे,
अति दीन जने तुम रक्षक हे ।
मन कम्पित वञ्चित भक्ति धने,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥ x 2

रिपुसूदन मंगल नायक हे,
सुख शान्ति वराभय दायक हे।
त्रय ताप हरे तव नाम गुणे,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥ x 2

तव नाम सदा सुख साधक हे,
पतिताधम मानव पावक हे ।
मम मानस चंचल रात्रि-दिने,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥ x 2

जय सद्गुरु! ईश्वर प्रापक हे!
भव-रोग-विकार विनाशक हे!
मन लीन रहे तव श्री चरणे,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥ x 2



सत्यम् चालीसा

दोहा

सुमिरौं श्री गुरु पद कमल, महिमा अपरम्पार ।
बरनौं सत्यम् बिमल जस, जो तारक भव भार ॥
मात-पिता गुरु बन्धु सब, तुम्हीं हमारे नाथ ।
किस मुख से विनती करौं, चरण कमल में माथ ॥

जै जै सत्यम् लोक महेश्वर। बल धन ऐश्वर्य विदु सर्वेश्वर ॥
तेरो आश्रित यह जग माया। योग यज्ञ जन हेतु रचाया ॥

सर्वाधार सत्य तुम एका। भिन्न भिन्न युग नाम अनेका ॥
आदि काल कँह यह इतिहासा। युग युग प्रकटहि ईश प्रकाशा ॥

सतयुग मांहि महेश कहाये। त्रेता रामचन्द्र बनि आए ॥
द्वापर कृष्णचन्द्र अवतारा। भक्तन भरण हरन महि भारा ॥

तुम गीता अर्जुनहिं सुनाए। ब्रह्मयोग विधि सहित सिखाए ॥
कलियुग सत्यम् योग प्रणेता। गुरुदेव तुम कृपा निकेता ॥

ऋषिकेश में दीक्षा पाये। शिवानन्द सम गुरु अपनाये ॥
संस्कृति गगनहि एक सितारा। गुरु पहिचानहिं एकहिं बारा ॥

सेवा भाव उगा मन माहिं। सभी राम-सिय दूसर नाहिं ॥
चली साधना सतत कठोरा। बीतहि युग तब होईहहिं भोरा ॥

गुरु संदेश हृदय-सिर धारे। चले प्रभञ्जन द्वारे-द्वारे ॥
जग-जीवन दुख क्लेश अपारा। केहि विधि मिलहिं सबहि छुटकारा ॥

चंचल मन चेतन गतिहीना। करहु कृपा गुरुवर मैं दीना ॥
विषयासक्ति मोह मद माना। षट विकार विष तत्व समाना ॥

काह कहूँ नहि हटत हटाये। बैरी बुरे बुद्धि बौराये ॥
शक्तिमान् मैं खुद से हारा। बस सत्यम् तव नाम अधारा ॥

मम दुख से नहिं तुम अनजाना। परमहंस-विभु ब्रह्म समाना ॥
चरन कमल भव तारन हारे। मंत्र मूल हैं शब्द तुम्हारे ॥



तुम्हरो शरण सदा सुख-कारक। ताप-पाप-भव-व्याधि विदारक ॥
मंगल नायक तव अभिनन्दन। दूर करो जन मानस क्रंदन ॥

सत्यम् सीख एक अपनाओ। हर हालत में मस्ती लाओ ॥
प्रभु प्रसादमय जीवन सारा। इसीलिए सब कुछ है प्यारा ॥

योगी होकर जग में जीना। जगदीश्वर बन सब रस पीना ॥
भाव अधार कर्म फल आवा। बिनु करनी कहूँ केहि का पावा ॥

कहीं नहीं फिर कोई बाधा। देख लिया यह जिसने साधा ॥
आत्मस्वरूपहिं देव चिन्हाई। महानन्द हृदय उमगाई ॥

बहु बिधि करहिं योग प्रचारा। जन-जन देत मंत्र निस्तारा ॥
आज विश्व मँह अस कह कोना। जहाँ न सत्यम् योग सलोना ॥

अखिल विश्व योगेश्वर स्वामी। दो वरदान बनूँ सतकामी ॥
स्वर्णिम वदन नयन चमकीले। गीता सम तव वचन रसीले ॥

पंचतत्त्व जिमि पंचअगन जली। त्यागी निवृत्ति निवृत्ति कर सजी ॥
भस्म विभूषित शिव सम अंगा। भोलेनाथ सर्वदा संगा ॥

अविरल राम नाम आराधन। प्रतिदिन राम चरित अवगाहन ॥
शिवानन्द गुरुदेव मगन मन। सेवा प्रेम दान संस्थापन ॥

राजसूय संकल्पित स्वामी। महाराजन के राज नमामी ॥
चित्रकूट जिमि राम निवासा। तिमि गुरुवर तव रिखिया वासा ॥

सतगुरु चरण सदा चित लाऊँ। हरदम गुरुवर सत्यम् ध्याऊँ ॥
सत्यानन्द महा अवतारा। आए कलि हरण महि भारा ॥

योग स्थापन हेतु जग, आए गुरु महान् ।
अखिल रसामृत सिन्धु तुम, लो शतकोटि प्रणाम ॥

गुरुवर सत्यानन्द की जय

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्रीमत्सत्यानन्द-मंगलम्

गुरूणां गुरुं योगिनामग्रगण्यं तपस्विमनस्विगुणिनां वन्द्यम् ।
अहर्निश तपस्यारतं जातरूपं महर्षिमणिं सत्यानन्दं नमामि ॥ 1 ॥

बाल्याच्च प्रतिभा च प्रज्ञा प्रपन्नं तथा स्वानुसंधान कौतूहलिनम् ।
शिवानन्द प्रतिमानमादर्श शिष्यं महर्षिमणिं सत्यानन्दं नमामि ॥ 2 ॥

जनोत्थानलग्नं सतत् यस्य चित्तं सदा पीडितेभ्यो व्ययं यस्य वित्तं ।
परमहंस रूपं तुरीय-प्रतिष्ठं महर्षिमणिं सत्यानन्दं नमामि ॥ 3 ॥

सतत् कर्मयोगस्य मार्गेण सिद्धं तथा कर्मयोगाय जगति प्रसिद्धम् ।
हिमं पञ्चवह्निं च तुल्यं तितिक्षुं महर्षिमणिं सत्यानन्दं नमामि ॥ 4 ॥

योगान्दोलनं सर्वत: चालयन्तं प्रतिगेह योगानुरक्तं कुर्वन्तम् ।
कलाववतीर्य कृतमतिमर्त्यं महर्षिमणिं सत्यानन्दं नमामि ॥ 5 ॥

निगमाऽगमे निहितं सर्वगुह्यं कृतमामलकवत् करे तत्समग्रम् ।
जनानां हिताय प्रसृतं च येन महर्षिमणिं सत्यानन्दं नमामि ॥ 6 ॥

सदाचारशीलं सदा हृदयालुं श्रद्धालुं दयालुं तथा च कृपालुम् ।
सदानन्दलीनं च आद्यन्तहीनं महर्षिमणिं सत्यानन्दं नमामि ॥ 7 ॥

नमस्ते नमस्ते समाधिस्थ ध्यानिन् नमस्ते नमस्ते महाकर्मयोगिन् ।
नमस्ते नमस्ते सतत् ब्रह्मचारिन् नमस्ते नमस्ते ससर्वस्वत्यागिन् ॥ 8 ॥

– *स्वामी प्रज्ञातीर्थ सरस्वती*



श्रीसत्यानन्द-महिम्नस्तवम्

विश्वाधारो महादेवः सर्वज्ञज्ञानिनमुत्तमम् ।
करोतु दीर्घायुषं स्वामिसत्यानन्दसरस्वतीम् ॥ 1 ॥

योगवेदान्त-आरोग्यजीवनयोः सम्पादकः ।
सुयोग्यः पण्डितः शिष्यः शिवानन्दमहात्मनाम् ॥ 2 ॥

शान्तो नम्रस्वभावी च शुद्धवेदान्तवाचकः ।
लेखको ज्ञानग्रन्थानां निबन्धानां विधायकः ॥ 3 ॥

योगाभ्यासी तथा न्यासी परिचायकः स्तावकः ।
कीर्तिविस्तारकः श्रीमच्छिवानन्दमहात्मनाम् ॥ 4 ॥

स्वगुरोश्च कृपापात्रो बालसंन्यासिमोदनः ।
दर्शनीयो गुरुभक्तो गुरोरादेशपालकः ॥ 5 ॥

मृदुभाषी महात्मा वै सर्वसत्कारकारकः ।
वस्तुतो दान्तशान्तश्च सद्गुरोर्गुणगायकः ॥ 6 ॥

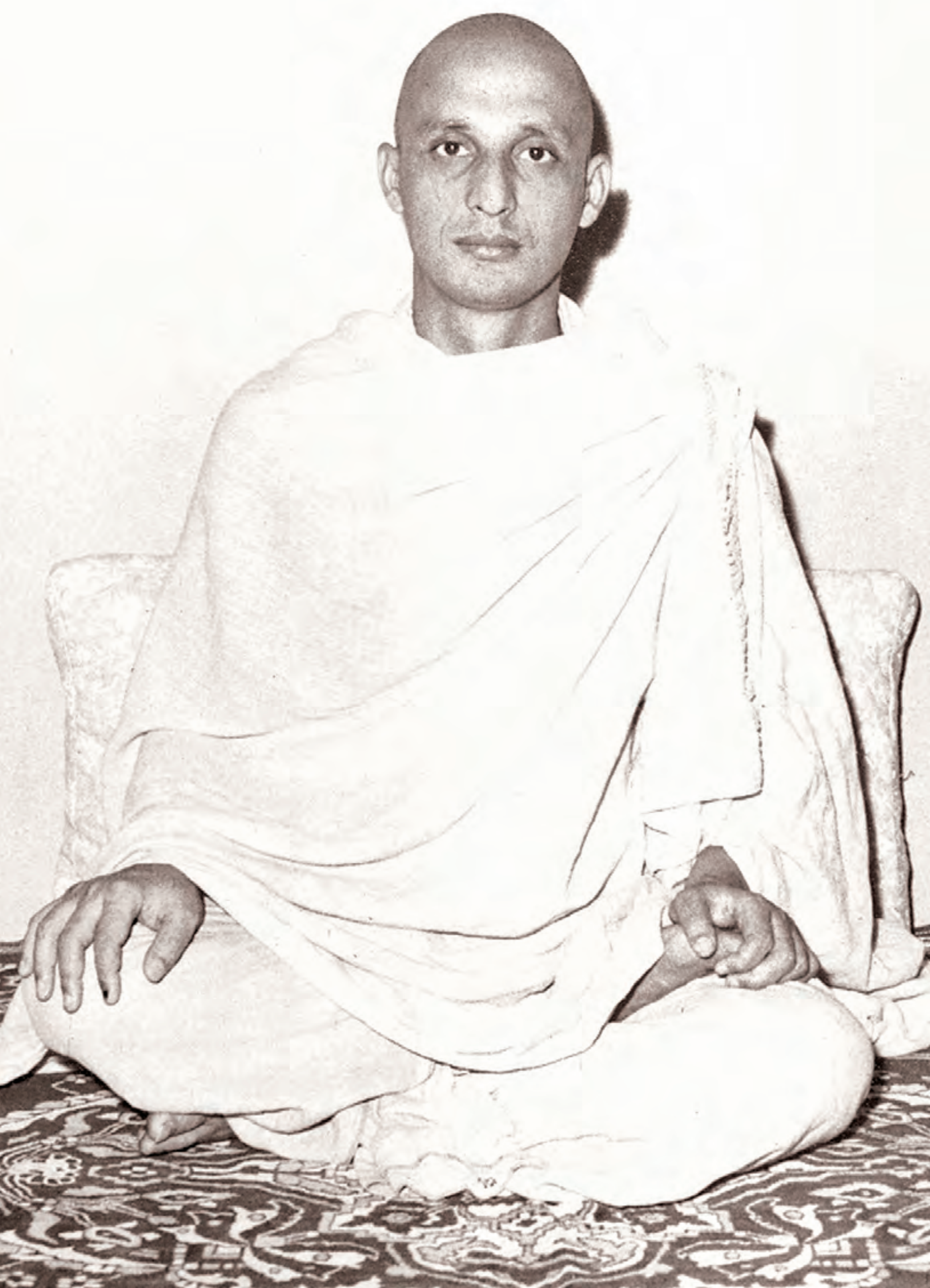
काम्यानां कर्मणां न्यासः संन्यासोऽस्य ह्युपासकः ।
स श्राद्धो जयतु स्वामी सत्यानन्दसरस्वती ॥ 7 ॥

– *स्वामी गोविंदानन्द शास्त्री, दादुपंथी*

सत्यानन्द गायत्री

ॐ परमहंसावधूताय विद्महे सत्यानन्दाय धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री सत्यानन्दमहिम्नः स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीसत्यानन्दमहिम्नःस्तोत्रमंत्रस्य निरंजन ऋषिः। शिखरिणी छन्दः।
स्वामिसत्यानन्दो देवता। सत्यम् बीजम् । सती शक्तिः।
स्वामिसत्यानन्दप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

दिगन्ते श्रूयन्ते भवतः महिमायाः कलरवः
विलीयन्ते सर्वे मनसिजविषादाः च विपदाः।
हे सत्यम्-योगर्षे! तव हि महती शोकहरणी
कलौ संसाराब्धौ सकलगुणगाथा नः तरणी ॥ 1 ॥

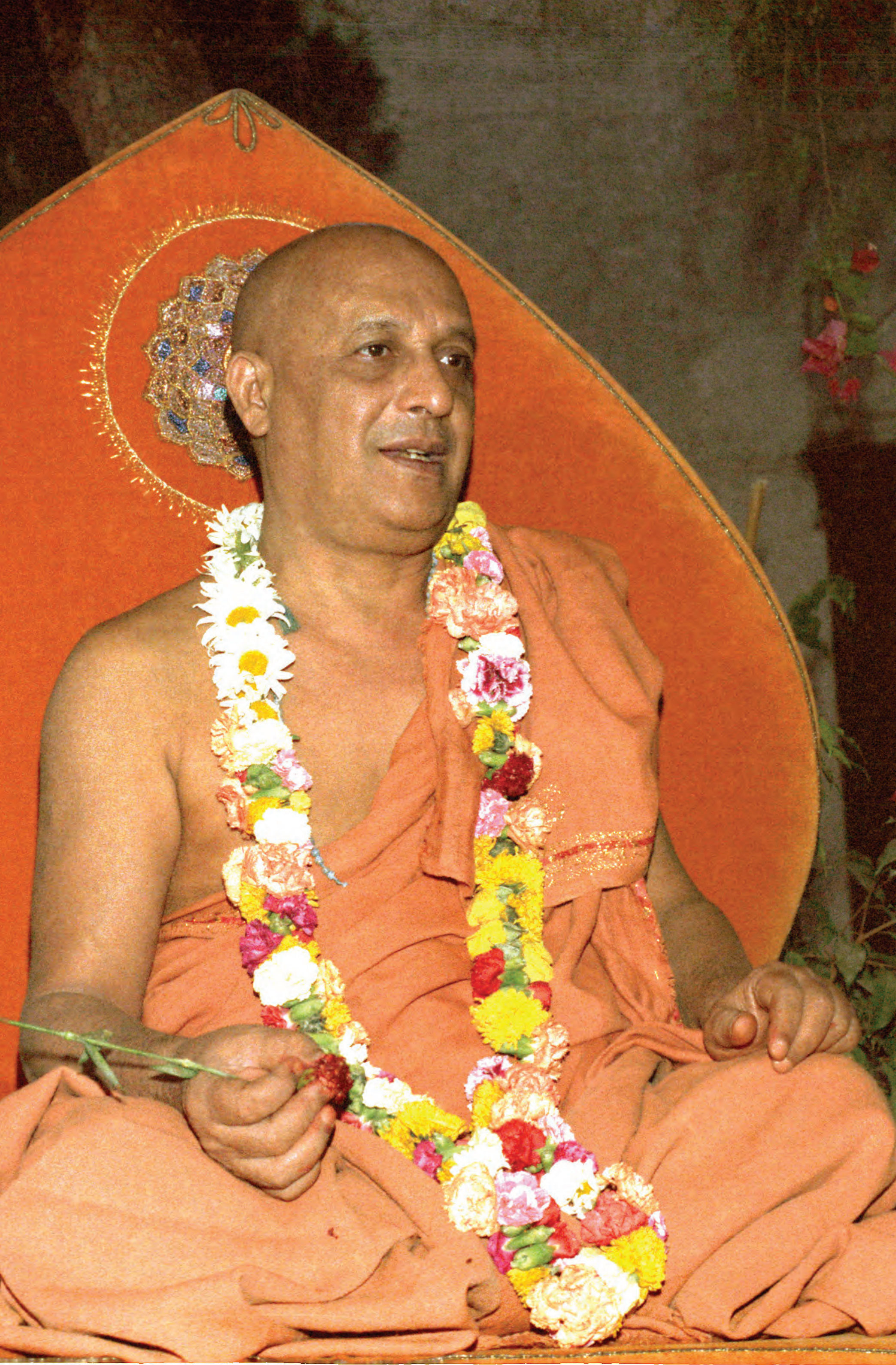
तवानंदप्रदा अतिरुचिरलीलाध्वनिः यदा
अकस्मात् मे कर्णे विशति क्षणमात्रं हि झटिति।
समुत्फुल्लपद्मः इव हृदयविस्तारः भवति
न जाने किं कार्यं तव सकलगाथासुश्रवणात् ॥ 2 ॥

क्षितौ कूर्मांचलेऽवतरितः सतीहृत् स्वयमपि
सुरम्ये सुस्थाने गिरिवनसमाच्छादितपुरे।
शुभे मार्गशीर्षे परमहितकारी-सुदिवसे
तिथौ पूर्णिमायां ऋषिवरः सुजातो रघुकुले ॥ 3 ॥

अवस्थायां षट्सु प्रथमगहनाध्यात्मघटना
यदा भूमौ तिष्ठन् रहसि सहसाऽचेतः अभवः।
विमुक्तो वै देहात् तव सजगतासारः उपरि
शरीरस्यागत्य निजवपुछविं ऐक्षत तदा ॥ 4 ॥

अमुष्मिन् कालेऽपि अपहृतः न संज्ञा तु भवतः
यतो दृष्टो देहं परितः परिवारः परिचरन्।
अयं योगभ्रष्टो न हि कमपि रोगं वहति च
स्मरेन्नित्यं रामं इति वचनमूचुः यतिवराः ॥ 5 ॥

भगिन्या साकं त्वं शुभरुचिकरादर्शजगतः
अपश्यः सुस्वप्नं मधुरमितरेभ्यो न सुलभः।
विना द्वारं देवालयः भिषजसेवा धनमृते
कृपाऽन्नपूर्णायाः वहति न च कुत्रापि बुभुक्षा ॥ 6 ॥



विभूत्यज्ञेया त्वं विविधगुणयुक्तं तु चरितं
मनस्वी मेधावी मुदितः मृदुभाषी खलु महान्।
सुकाव्यानां बाल्ये बहुविधसुभाषासु सृजनं
सुदीर्घक्षेत्राणां कतिविधपशूनां च भरणं ॥7॥

सुवीर्यो निर्भीकः सकृदनुपमं तंत्रकरणम्
श्मशाने त्वं सख्या सह घननिशीथे हि कृतवान्।
यदा रुष्टस्तातोऽनयः सकलभस्मानि सदने
अनुष्ठानं भूयोऽभवदपि गृहे कम्पनमति ॥8॥

कयाचित् योगिन्या सह तदनुभूतोऽतिविरलः
पथो वामो गुह्यो मितिः न सुलभा यस्य जगति।
यथाऽपश्यत् कृष्णे निखिलविभु कौन्तेयः समरे
बहूनां लोकानां अनुभवः तथैव त्वमलभः ॥9॥

तया योगिन्या त्वं कथितः गुरुमन्विष्य त्वरितं
भगिन्याः देहान्ते अपि मनसि वैराग्यः बहुलः।
तदा त्यक्ता सर्वा धनभवनसम्पत्तिः तृणवत्
यथा विश्वं त्यक्त्वा बहिः निजगृहात् गौतमः गतः ॥10॥

गृहात् निर्गत्य त्वं विविधपुरराज्येष्वटितवान्
गुरोः अन्वेषाय बहुलपुरुषार्थं च कृतवान्।
हृषीकेशं प्राप्य चिरभिलषिताप्राप्तिः हि गुरोः
शिवानन्द स्वामी किल च कृतकृत्योऽभवदपि ॥11॥

प्रकाशस्ते अन्तः कठिनपुरुषार्थेण उदितः
शिरोधार्यं कृत्वा गुरुवचनमेतत् किल भवान्।
अहोरात्रे सेवानिरतः ननु आसीत् गुरुकुले
अनासक्तः पूर्णः कथितः नचिकेता तु गुरुणा ॥12॥

गुरोः सेवा सद्य तव हृदयशुद्धिं कृतवती
तदाऽऽदेशं प्राप्य वितर निखिले योगसुफलम्।
क्षितौ तीरे तीरे सकलजगतो जागृतिः कृतः
प्रतिष्ठा योगस्य अभवदपि विज्ञानजगति ॥13॥



युगेऽस्मिन् योगस्य गुरुवर: पतंजल्यपर: वै
समग्रयोगस्य पथ: खलु वरेण्योऽस्मिनवधौ।
इयं सम्भावी संस्कृति: परमशक्तीति गर्जनं
करिष्यत्यादेशं प्रवरघटनानां च जगत: ॥14॥

रवीन्द्रसंयोगं कुरु हठपथेनेति वचनं
निरोधो वृत्तीनां हि यमनियमाद्यष्टविधिभि:।
त्वया योगनिद्रा चित: शिथिलतायै विरचिता
क्रियायोगस्यापि त्वमसि पुनरोद्धारक: किल ॥15॥

सुवर्णं लौहं वा निगडमपि बध्नाति पुरुषान्
तथा पुण्यापुण्या: न विरतिमृते मुक्ति: भवति।
उदात्तादर्शोऽयं तव च चरिते दृश्यतयपि
त्वया त्यक्ता: सर्वा: अचिरमुपलब्धी: हि नितराम् ॥16॥

तटे गोदावर्या: श्रुत: भगवदादेश: अपर:
प्रतिश्वासं नाम स्मर हृदयपीठे शुभतमे।
सती भस्मीभूता प्रतनसमये सत्यमधुना
चिताभस्मालेप: कनकवपु: पंचाग्नितपसा ॥17॥

घनिष्ठ: सम्बन्ध: सह भगवताऽऽवश्यकतम:
विना भक्तिं व्यर्थ: खलु मनुजजन्मेति सुमतम् ।
यथा गौरीगणेशौ त्वमपि सुत: सत्या: निरुपम:
जनन्या: श्मशाने स्वयमपि समाधिस्थ: अभवत् ॥18॥

त्रयाणां पीठानां शिरहृदयहस्तेभ्य: रचना
उदीचीगंगायां रविसुतपुरात् योगलहरी।
चिताभूमौ सेवासुपथ: भवताऽऽदिष्ट: शुभद:
समीपे जानक्या: पदरजस: संन्यासविशिखा ॥19॥

नमो योगार्काय तव घनमयूखै: हि जगती
सुदीप्ता कुत्रापि तमस: अवशेषो न भवति ।
त्वमेव ब्रह्मासि त्वमसि परमानन्दनिलय:
तवार्त: दासोऽस्मि अयि परमयोगिन्! कुरु कृपाम् ॥20॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥



सत्यानन्द-महामतिर्विजयते

सच्चित्सुखं सदैकं यच्छिवानन्द इति श्रुतम् ।
आत्मानमखिलाधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये ॥

भक्त्या लालयति प्रभुः सहचरानेकात्मदृष्ट्या ननु
त्यक्त्वा स्वात्महितं तथा प्रियकरः सत्कर्मकृत्तत्परः ।
स श्रीभिः परिमण्डितश्च गुणवान् विख्यातकीर्तिर्विभुः
सत्यानन्दमहामतिर्विजयते वेदान्तपारंगतः ॥ 1 ॥

शान्तात्मा द्युतिमान् क्षमी स्थिरसुहृद्गीतप्रियोऽयं सदा
आत्मज्ञानोपचयं हि वांछति परं सर्वेषु च प्राणिषु ।
स स्वक्षो बहुकाव्यकृत् सुवचनः क्षिप्रप्रसादो महान्
सत्यानन्दमहामतिर्विजयते वेदान्तपारंगतः ॥ 2 ॥

सेवाज्ञः कुरुते परां गुरुवरस्यांघ्र्यब्जसेवामतिं
त्यक्त्वा स्वास्थ्यविधिं प्रियेन सकले स्वेनैव वा कर्मणा ।
सत्पूज्यो जलदैवजो मम सुहृद् वीर्यान्वितोऽयं सुखी
सत्यानन्दमहामतिर्विजयते वेदान्तपारंगतः ॥ 3 ॥

– *स्वामी तुरीयानन्द सरस्वती*

अभिनन्दनपुष्पाणि

निजवदनसरोजान्निर्गलत्सूक्तिधारा-निकरजनितदिव्यज्ञानयोगो जनानाम्।
निकटगतनराणां नित्यकल्याणदाता विजयति यतिवर्यः श्रीशिवानन्दयोगी॥

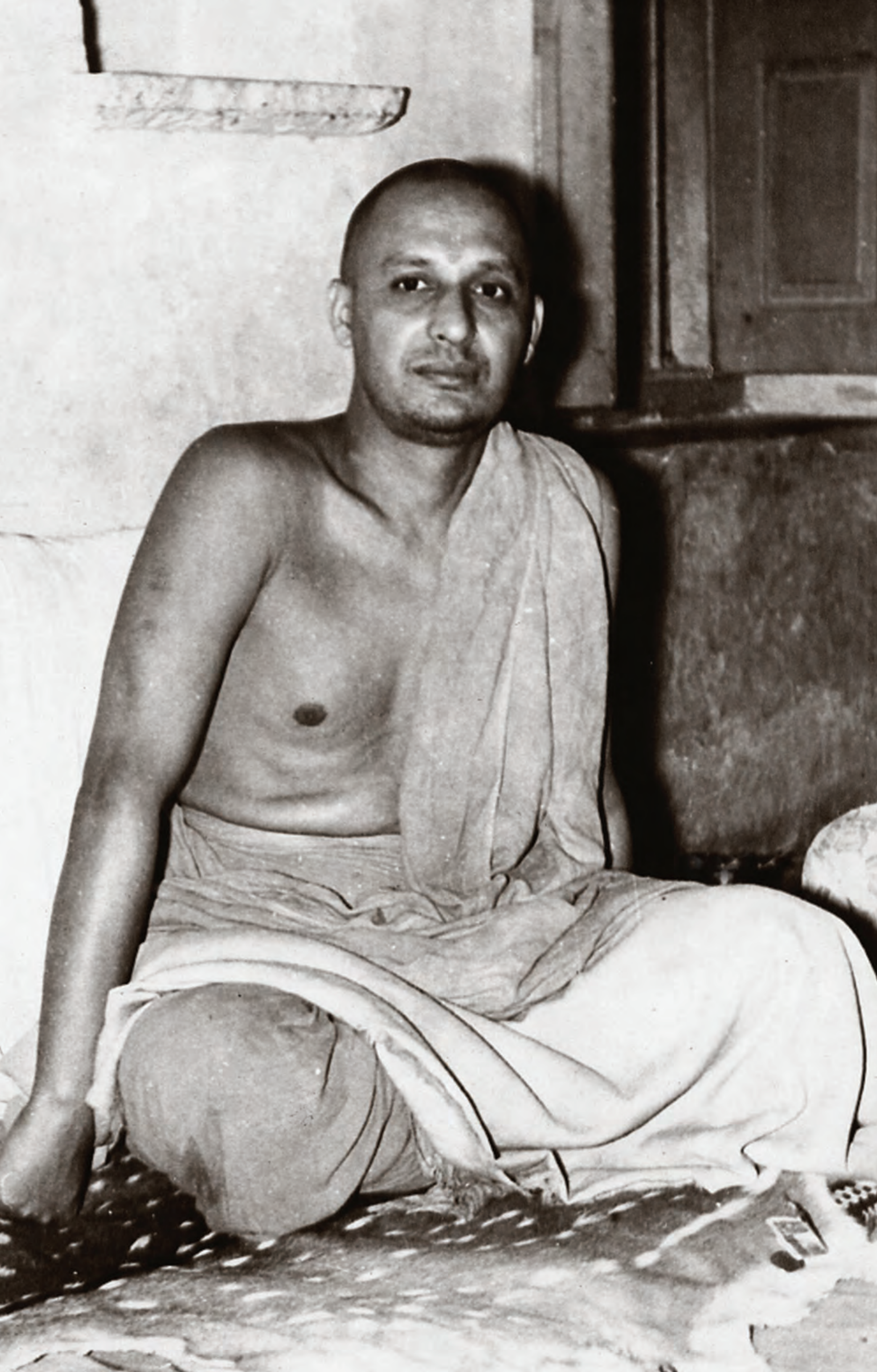
अविकलगुणधाम्नः सद्गुरोरस्य शिष्य-प्रवरविदितसत्यानन्दसार्थाभिधानः।
निजविनयविशेषाकृष्टलोको विपश्चिन्निवहमकुटहीरः साधुशीलो विभाति॥

निरवधिककलानां निस्तुलावासरंगो निरवसितनितान्तानर्घसौजन्यसिन्धुः।
निरवरतनिकामोत्कृष्टकर्मैकदीक्षो निरघगुणनिधीनामुत्तमोऽयं विभाति॥

यमनियमविधानैर्नित्यशुद्धो निकामं यमरिपुपदसेवासन्ततामोदितात्मा।
सुमतिनिवहगम्यः सुन्दराकाररम्यो जयतु जयतु सत्यानन्दसन्नामधेयः॥

सुविशदमतिशाली योगवेदान्तविद्या-सदनवनविराजन्मुद्रणागार-नाथः।
सुचिरमिह धरायामायुरारोग्यसौख्यान्वितमविरलकीर्त्या जीयतां दैवयोगात्॥

– *स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती*



विवेकचूडामणिः

मिष्टालाप-परायणोऽतिसरलो नानागुणालंकृतः।
विद्यामार्जितशेमुषी च कुशलः कान्तः सुशान्ताग्रणीः॥

सद्भावप्रतिपन्नशेखरस्तु सततं सौम्योति कर्मक्षमः।
सेवाधर्मदयादिमंडिततनुमुक्तो भवान् बन्धनात्॥

जिह्वा मेऽतिशयाक्षमा तव गुणान् गातुं प्रयत्नं मुधा।
त्वन्मार्गंपरिमार्गितुं हृदि च मे शक्तिः समागच्छतु॥

मायापल्वलवारिपानतृषितं दुष्टं मनो मेऽनिशम्।
त्वत्कारुण्यगभीरवारिधिजलं पीत्वा तु पूतं भवेत्॥

कान्तां ते लपनाकृतिं मधुमयीं वाचं सुधावर्षिणीं।
नित्यं स्मेरमुखं कलाकरतनुं ज्ञानाग्निदीप्तां पुनः॥

दृष्ट्वा को मुदितो भवेन्नहि सदा कुर्वीत वानादरं।
हे संन्यासिशिरोमणे तव कृपाभाक् वै भवेयं क्षणं॥

त्वद्भक्त्या परितुष्टमानसगुरुब्रह्माग्निदीप्तः शिवः।
नित्य प्रेम प्रदीयतेऽमरतनुं कुर्वन्श्च तेजोमयीं॥

क्षेमं ते परिचिन्तयन् स्वहृदयेऽज्ञानान्धकारं मुहुः।
नश्यन् पुत्रवदेव रक्षति च ते दीर्घायुषं वांछति॥

सेवाभावपरायणे त्वयि गुरोः प्रीतिः प्रभूता सदा।
दृष्ट्वा ते कविताकलां च सरलं शान्तस्वभावं पुनः॥

सर्वराश्रमवासिभिश्च सुमुदा संन्यासिभिः प्रीयसे।
अद्याहं परिपूजयामि चरणं भक्तिप्रसूनैर्मुदा॥

मत्वेदं भवबन्धनं विषमयं भोगांश्च सांसारिकान्।
संन्यासं शरणं गतोऽसि पितरौ हित्वा च सद्बान्धवान्॥



मार्गेऽस्मिन् सततं हिमाचल इव स्थित्वा स्वशक्त्या पुनः।
ध्यात्वा श्रीशपदाम्बुज गुरुपदं लक्ष्यं लभस्वाशु ते॥

अद्येऽस्मिन् शुभवासरे परिमले प्रेमाम्बुभिः सज्जनाः।
एते ते कुशलाभिलाषिण इति सिंचन्त्वभीक्ष्णं मुदा॥

त्वच्छ्रेयोऽभिलषंतु ब्रह्मपदवीसेवापराः योगिनः।
आयुस्ते द्विगुणं करोतु भगवान् चन्द्रार्द्धचूडामणिः॥

विश्वेशः परिपालयत्वविरतं शश्वत् स्वधर्मे मतिं।
दत्वा ते कुशलं करोतु मनसस्तापं विनाशयन् विभुः॥

अज्ञोऽहं महतां यशो रसनया गातुं न शक्यः कदा।
सत्यानन्दगुणावलीं तु सततं ध्यात्वा भवेयं सुखी॥

– श्री गिरिधारी मिश्रा, राष्ट्रभाषारत्न साहित्याचार्य

चिरंजीवतु

सत्यानन्द महामते सच्चित्सुखार्णव प्रिय।
मुक्ताम्बिकाननागतां श्रुत्वा गिरं शुभंकरीम् ॥ 1 ॥

तत्ते प्रीतिकरं जन्मदिनमहोत्सवं प्रति।
तुष्टा चितिस्वरूपा मे सा नन्दति ह संततम् ॥ 2 ॥

एकत्रिंशत्तमे तत्ते जन्मोत्सवतिथौ सुहृत्।
शिवंकरं शिवानन्दं प्रार्थयेऽभीष्टसिद्धये ॥ 3 ॥

शिवानन्द स्वामिन् तवचरणयोः संस्थपटुधीः।
चतुर्वेदी सत्यः सुललितवपुर्मुद्रणपरः ॥ 4 ॥

स्वभक्त्या चोत्कृष्टो बहुगुणगणैर्मण्डितमहान्।
स सत्यानन्दोऽयं तव करुणया जीवतु चिरम् ॥ 5 ॥

– स्वामी तुरीयानन्द सरस्वती



श्रीमत्सत्यानन्दो विजयते तराम्

तुरीयस्थ: समाधिस्थ: पंचाग्निसेवी मद्गुरु: ।
योगाध्वन्दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नम: ॥ 1 ॥

यस्यां योगसंस्थायां शिक्षायै निवसाम्यहम् ।
सा तपोभूमिराविष्टा स्थापिता तत्महर्षिणा ॥ 2 ॥

तत्रभवतोदात्तेन सत्यानन्द महात्मना ।
कणिका-कणिका यस्या: पूरिता तस्य मेधया ॥ 3 ॥

श्रमबिन्दु विभूषिता तस्य पाण्डित्यमण्डिता ।
पूजा योग्या इयं भूमि: साधनया सुगन्धिता ॥ 4 ॥

तस्य चूडामणि: शिष्यो जन्मनैव निरंजन: ।
पूज्योऽस्ति स ममाचार्य: तथा मार्गप्रदर्शक: ॥ 5 ॥

भाग्यशाली अहमस्मि ईदृशी पावनस्थली ।
गुरुकुलभूमि: मेऽस्ति सर्वफलप्रदायिनी ॥ 6 ॥

गुरुपूता इयं भूमि: स्वर्गादपि गरीयसी ।
निवसनत्र भाग्येन परमाप्यायितोऽस्म्यहम् ॥ 7 ॥

किंचिदपि न इच्छामि अतिरिक्तं गुरुकृपाम् ।
अत्र वासो हि मह्यं तु सर्वदानन्ददायक: ॥ 8 ॥

– *स्वामी प्रज्ञातीर्थ सरस्वती*



श्री-स्वामिसत्यानन्द-अष्टोत्तरशतनामावलिः

1. ॐ परमहंसाय नमः
2. ॐ अवधूताय नमः
3. ॐ अवतार-पुरुषाय नमः
4. ॐ अखण्ड-मण्डलाकाराय नमः
5. ॐ अद्भुत-चरित्राय नमः
6. ॐ आजन्म तेजस्विने नमः
7. ॐ आनन्द-स्वरूपाय नमः
8. ॐ ईश्वर-स्वरूपाय नमः
9. ॐ सरल-हृदयाय नमः
10. ॐ परोपकार-लक्षिताय नमः
11. ॐ ऋषिपरम्परा-संवर्धनाय नमः
12. ॐ एकाग्रचित्त-निलयाय नमः
13. ॐ एकान्तवास-प्रियाय नमः
14. ॐ ऐश्वर्य-प्रदात्रे नमः
15. ॐ ओंकार-स्वरूपाय नमः
16. ॐ कल्याणकर्त्रे नमः
17. ॐ गुरु-सेवकाय नमः
18. ॐ गंगातीर-वासिने नमः
19. ॐ गंगादर्शन-स्थापकाय नमः
20. ॐ घोरसाधना-तत्पराय नमः
21. ॐ चिदग्नि-ज्वालोत्पन्नाय नमः
22. ॐ सप्तद्वीप-जनोपदेशाय नमः
23. ॐ जनमानस-सुखप्रदाय नमः
24. ॐ शिवानन्द-वरदशिष्याय नमः
25. ॐ भक्त-कल्पतरवे नमः
26. ॐ योगप्रचारकाय नमः
27. ॐ विश्वे योगस्थापकाय नमः
28. ॐ त्र्यम्बकेश्वरेष्टाय नमः
29. ॐ श्रीरामचन्द्र-कुलोत्पन्नाय नमः
30. ॐ रिखियापीठ-स्थापकाय नमः
31. ॐ सच्चिदानन्द-विग्रहाय नमः
32. ॐ दुःख-दारिद्र्य-हराय नमः
33. ॐ इच्छामृत्यु-वरणाय नमः
34. ॐ सिद्धपुरुषाय नमः
35. ॐ सेवा-दान-प्रेम-प्रतिष्ठापकाय नमः
36. ॐ अनेक-योगग्रन्थ-रचिताय नमः
37. ॐ राजसूययज्ञ-संकल्पिताय नमः
38. ॐ लोकहृदय-प्रफुल्लिताय नमः
39. ॐ सर्वलोकाकर्षणाय नमः
40. ॐ हिमालयगर्भ-संभूताय नमः
41. ॐ रामसीता-दर्शनाय नमः
42. ॐ कन्यापूजन-वर्धकाय नमः
43. ॐ अनेकशिष्य-प्रपूजिताय नमः
44. ॐ सर्वज्ञान-प्रकाशनाय नमः
45. ॐ मुनिश्रेष्ठाय नमः
46. ॐ महिला-समाजोत्थानाय नमः
47. ॐ दया-सिन्धवे नमः
48. ॐ कला-संवृद्धाय नमः
49. ॐ यज्ञप्रियाय नमः
50. ॐ भोलेनाथ-प्रियाय नमः
51. ॐ सर्वज्ञाय नमः
52. ॐ मितभाषा-संवृत्तिने नमः
53. ॐ रामायण-पारायण-प्रियाय नमः
54. ॐ गुर्वाज्ञा-पालनाय नमः
55. ॐ सत्यं-शिवं-सुन्दराय नमः
56. ॐ सर्वधर्म-सम्मानिताय नमः
57. ॐ अध्यात्म-ज्वाला-प्रज्ज्वालकाय नमः
58. ॐ संस्कृत-भाषण-निपुणाय नमः
59. ॐ दानवीर-कर्ण-गुणसम्पन्नाय नमः
60. ॐ मुद्गलपुर्यां अंगदेशे कर्णराज्ये आश्रम-स्थापकाय नमः



61. ॐ उत्तरवाहिनी-गंगातटे आश्रम-
संस्थापकाय नमः
62. ॐ काषायवस्त्र-दीक्षिताय नमः
63. ॐ वर्तमाने शिवलोक-वासिने नमः
64. ॐ कौपीन-जटाधराय नमः
65. ॐ श्वास-प्रतिश्वास-गुरुमंत्र-
जपसिद्धाय नमः
66. ॐ अष्टोत्तर-शतलक्ष-मंत्र-
पुरश्चरण-कर्त्रे नमः
67. ॐ भारतीय-मुनिश्रेष्ठ-पुंगवाय नमः
68. ॐ श्रीचक्रवर्तिने नमः
69. ॐ सर्वलोक-सम्मानिने नमः
70. ॐ कर्म-संन्यास-मार्ग-प्रदात्रे नमः
71. ॐ सरल-स्वाभावाय नमः
72. ॐ भस्मालंकार-प्रियाय नमः
73. ॐ सदा-सत्यसंकल्प-युक्ताय नमः
74. ॐ पुनरागमन-वचन-बद्धाय नमः
75. ॐ रिखियाग्रामे-रिखियापीठे
भूसमाधि-स्थिताय नमः
76. ॐ मार्गशीर्ष-पौर्णिमया-अवतारणाय नमः
77. ॐ संन्यास-मार्गदर्शकाय नमः
78. ॐ वेदान्तविद्या-प्रवीणाय नमः
79. ॐ समस्त-लोकोद्धारिणे नमः
80. ॐ शास्त्र-विज्ञान-सम्बन्ध-कारकाय नमः
81. ॐ गुरु-शिष्य-परम्परा-संवर्धनाय नमः
82. ॐ वैराग्य-पुरुषाय नमः
83. ॐ सर्व-कर्म-निवर्तनाय नमः
84. ॐ उत्तीर्णकाले-सर्वोपलब्धि-
त्यागकर्त्रे नमः
85. ॐ वेद-वाक्येषु सदा-रमन्ताय नमः
86. ॐ स्थित-प्रज्ञात्मने नमः
87. ॐ रिखियापीठे शतचण्डीयज्ञ-
स्थापकाय नमः
88. ॐ कर्मशुद्ध्या उत्तमजीवन-यापनेति
अन्तिम-संदेश-प्रदात्रे नमः
89. ॐ सदोचिताय नमः
90. ॐ पद्मासने ध्यानमग्ने देह-त्यागिने नमः
91. ॐ योग-समाधि-प्राप्ताय नमः
92. ॐ याचकानां वर-प्रदात्रे नमः
93. ॐ स्मरणमात्रेण सहायता-प्रदात्रे नमः
94. ॐ दिगम्बराय नमः
95. ॐ तुरीयातीताय नमः
96. ॐ कर्मयोग-भक्ति-ज्ञान-
प्रचक्षणाय नमः
97. ॐ प्रकृति-वश-कराय नमः
98. ॐ परमपुरुष-पूज्याय नमः
99. ॐ वैद्यनाथ-ज्योतिर्लिंगे चिताभूमौ
हृदयपीठे रिखियाग्रामे तपोभूमि-
प्रस्थापिताय नमः
100. ॐ श्रीचक्रराज-परिपूर्ण-
महामेरु-पीठ-स्थापकाय नमः
101. ॐ भारतीय-बहु-प्रशंसाय नमः
102. ॐ दिव्यलिंग-प्रतिष्ठापकाय नमः
103. ॐ सौन्दर्यलहरी-विद्या-महिमा-
पुनर्प्रस्थापिताय नमः
104. ॐ तत्पुरुषाय नमः
105. ॐ चन्द्रमण्डले आश्रमस्थापकाय नमः
106. ॐ भारत-गौरवाय नमः
107. ॐ सूर्यवंश-क्षत्रियवर्ण-इक्ष्वाकु-
कुलोत्पन्नाय नमः
108. ॐ परमपूजनीय-परमहंस-
स्वामिसत्यानन्दसरस्वती-
सद्गुरवे नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
हरिः ॐ ॥



श्रीमत्परमहंस-सत्यानन्द-सरस्वती-गुणगाथावलिः

1. श्रीमत्परमहंस-सत्यानन्दाय नमः
2. श्रीमत्-शिवानन्द-आदर्श-
   शिष्याय नमः
3. श्रीमत्पंचाग्निसेविने नमः
4. श्रीमत्तुरीयस्थाय नमः
5. श्रीमत्बाल्यात्-प्रज्ञाप्रपन्नाय नमः
6. श्रीमत्बाल्यात्-समाधिस्थाय नमः
7. श्रीमत्योगमार्ग-प्रदर्शकाय नमः
8. श्रीमन्निगमागम-मर्मज्ञाय नमः
9. श्रीमत्गुरूणां-गुरवे नमः
10. श्रीमत्सर्वस्वत्यागिने नमः
11. श्रीमन्महाकर्मयोगिने नमः
12. श्रीमन्महर्षिमणये नमः
13. श्रीमत्योगिनामग्रगण्याय नमः
14. श्रीमन्नहर्निशतपस्यारताय नमः
15. श्रीमञ्ज्ञातरूपाय नमः
16. श्रीमत्हिमपंचाग्निसमतितिक्षवे नमः
17. श्रीमत्कर्मयोगेन-सिद्धाय नमः
18. श्रीमञ्जनोत्थान-लग्नाय नमः
19. श्रीमन्नतिमर्त्यमानवाय नमः
20. श्रीमत्सदानन्दलीनाय नमः
21. श्रीमदखण्डबालब्रह्मचारिणे नमः
22. श्रीमदाद्यन्त-हीनाय नमः
23. श्रीमत्पीडितजनपरित्राण-
    परायणाय नमः
24. श्रीमत्रामपरमभक्ताय नमः
25. श्रीमत्शतचण्डी-यज्ञकत्रे नमः
26. श्रीमत्राजसूय-यज्ञकत्रे नमः
27. श्रीमत्सदाप्रसन्नवदनाय नमः
28. श्रीमत्परमाकिंचनाय नमः
29. श्रीमत्वेदान्ततत्त्वज्ञाय नमः
30. श्रीमत्दयासागराय नमः
31. श्रीमन्नज्ञानसंहारकाय नमः
32. श्रीमज्जीवनमुक्ताय नमः
33. श्रीमत्-त्रिगुणातीताय नमः
34. श्रीमत्-विश्वपरिव्राजकाय नमः
35. श्रीमन्नतिमायाय नमः
36. श्रीमन्नतिद्वयाय नमः
37. श्रीमन्नकल्काय नमः
38. श्रीमत्परमशुद्धाय नमः
39. श्रीमन्नक्षयकृतये नमः
40. श्रीमत्सर्वदासुखदाय नमः
41. श्रीमदगाधमेधायुक्ताय नमः
42. श्रीमन्नच्युतानन्दाय नमः
43. श्रीमन्नजयाय नमः
44. श्रीमन्नजातशत्रवे नमः
45. श्रीमत्योगविशेषज्ञाय नमः
46. श्रीमन्नतिमुक्ताय नमः
47. श्रीमन्नतिवर्णाश्रमिणे नमः
48. श्रीमत्प्रकाण्डपण्डिताय नमः
49. श्रीमत्-रिखियाक्षेत्रोन्नायकाय नमः
50. श्रीमन्नध्यात्मविद्याप्रदायकाय नमः
51. श्रीमत्गुणिनां वन्द्याय नमः
52. श्रीमत्सर्वहितरताय नमः
53. श्रीमत्तमोऽपहाय नमः
54. श्रीमदात्मवत्-सौख्यप्रदायकाय नमः
55. श्रीमत्-विपन्नजीविकादायकाय नमः
56. श्रीमद्दुःखप्राप्तानां सहायकाय नमः
57. श्रीमत्-रिखियापीठसंस्थापकाय नमः
58. श्रीमत्-प्रकाण्डवेदज्ञाय नमः



59. श्रीमत्सर्वधर्मतत्त्वज्ञाय नमः
60. श्रीमत्-भारतीयसंस्कृति-
प्रचारकाय नमः
61. श्रीमदिक्ष्वाकु-कुलोत्पन्नाय नमः
62. श्रीमत्-विश्वविश्रुताय नमः
63. श्रीमन्मुंगेराश्रमसंस्थापकाय नमः
64. श्रीमत्-शिवानन्दमठसंस्थापकाय नमः
65. श्रीमदसंख्यशिष्याणां गुरवे नमः
66. श्रीमत्सर्वसंगविवर्जिताय नमः
67. श्रीमत्वागीश्वराय नमः
68. श्रीमत्-स्वस्वरूपानुसंधान-
शीलाय नमः
69. श्रीमदानन्दमूर्तियोगीन्द्राय नमः
70. श्रीमदार्त्तसेवाधुरीणाय नमः
71. श्रीमत्कारुण्यनेत्राय नमः
72. श्रीमत्योगनिष्ठाय नमः
73. श्रीमत्योगांगदक्षाय नमः
74. श्रीमच्चित्तस्वरूपे निमग्नाय नमः
75. श्रीमत्सर्वकल्याणराशये नमः
76. श्रीमत्सदाचारशीलाय नमः
77. श्रीमत्हृदयालवे नमः
78. श्रीमत्बालिकाशिक्षोन्नायकाय नमः
79. श्रीमत्वृद्धनरनारी-संरक्षकाय नमः
80. श्रीमत्-विधवा-गोदायकाय नमः
81. श्रीमत्-श्रमगौरववर्द्धकाय नमः
82. श्रीमत्भक्तियोगप्रचारकाय नमः
83. श्रीमदतिसम्पन्नपरिवारत्यागिने नमः
84. श्रीमत्संभाषणकलाप्रवीणाय नमः
85. श्रीमत्योगसाहित्यलेखकाय नमः
86. श्रीमत्समाज-हित-जागरूकाय नमः
87. श्रीमत्सत्संग-दक्षाय नमः
88. श्रीमत्सर्वभावेन-जितेन्द्रियाय नमः
89. श्रीमदुदात्तचरित्रधारकाय नमः
90. श्रीमत्धराधामपवित्रकर्त्रे नमः
91. श्रीमत्-विश्वबन्धुत्व-
पोषकाय नमः
92. श्रीमत्योगडिण्डिमवादकाय नमः
93. श्रीमत्सर्वोच्चसंन्यासिने नमः
94. श्रीमत्-ऋषिवंशजाय नमः
95. श्रीमत्-विश्वविजयिने नमः
96. श्रीमत्-विश्वोद्धारकाय नमः
97. श्रीमदादर्श-योगिराज्ञे नमः
98. श्रीमत्-विश्वपरिवार-
निर्मात्रे नमः
99. श्रीमत्-ज्ञानभास्कराय नमः
100. श्रीमन्निस्पृहाय नमः
101. श्रीमत्सीताकल्याणयज्ञकर्त्रे नमः
102. श्रीमत्सन्तशिरोमणये नमः
103. श्रीमत्भवसागरनौकानिभं
नेत्राय नमः
104. श्रीमन्निर्धनावासप्रदायकाय नमः
105. श्रीमन्मायामोहतमिस्त्र-
विनाशकाय नमः
106. श्रीमत्सच्चिदानन्दरूपे
विलीनाय नमः
107. श्रीमन्निरभिमानमण्डिताय नमः
108. श्रीमन्महिमामण्डिताय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
हरिः ॐ ॥



सकारादि-सत्यम्-सहस्त्रनामस्तोत्रम्

ॐ सत्यम् स्वामिसत्यानंदः सच्चिदानंदविग्रहः। सत्यनिष्ठः सत्यशीलः सत्यप्रतिज्ञः सत्यवान्॥
सत्यस्वरूपः सत्यज्ञः सत्यवादी सत्यधामः। सत्यमूर्तिः सत्यभाषी सत्याधारः सत्यरतः॥
सत्यमार्गप्रवर्तकः सत्यलोकविराजितः। सत्यासत्यविभेदविद् सत्यदर्शी सनातनः॥
सत्यविक्रमः सत्यस्थः सत्यकामः सत्यप्रियः। सत्यसंकल्पः सत्यविद् सत्यसंधः सत्यधृतिः॥
सत्यतपः सत्यगिरः सत्यदेवः सत्यधनः। सत्यपरः सत्यनाम सत्यधर्मपरायणः॥
सत्यमयः सत्यमंत्रः सत्यवाक्यः सत्यश्रवः। सत्यानुरक्तः सत्यजित् सत्यमेधा सत्यवृत्तः॥
सत्यवचः सत्यव्रतः साक्षात्सत्यर्तविग्रहः। सत्कुलीनः सच्चरित्रः सत्पथगामी सन्ततः॥
सुदर्शन-कूर्मांचल-गिरिप्रदेश-संजातः। सौम्यमास-पूर्णिमाजः सुनक्षत्रः सुयोगजः॥
सीतावल्लभ-कुलजः सर्वत्रमंगलकरः। सुप्रतिष्ठ-कुलोत्पन्नः सूर्यवंश-विभूषणः॥
सूर्यवर्चः सूर्यप्रभः सूर्यमयूखसन्दोहः। सूर्यरश्मिप्रभासितः सूर्यवत्मुखमण्डलः॥ 10॥

सूर्यवंशी सूर्यज्योतिः सूर्यसमजाज्वल्यमान्। सोमवपुः सोमवक्त्रः सोमसंकाशकांतिमान्॥
समग्रेन्दुनिभाननः सुधांशुप्रभासम्पन्नः। सरोजाक्षः सरोजांघ्रिः सरोजमुखः सुतनुः॥
सम्पन्नरूपः सुमुखः सुपुत्रः सुमनोहरः। सुवर्णः सुवर्णवपुः सुवर्णकान्तिः सुषमः॥
सुरूपः सुवक्त्रः सुरः सुकुलजः स्मितमुखः। सुनयनः सुलक्षणः सुस्मितः सुकुमारश्च॥
सुधीरः सुमेधा सुखः सुव्रतः सुहृदः सखा। सुहृदयः सुनीतश्च सज्जनः सत्वरः सुधिः॥
सुहासाननः सुभाषः सुमनः सुविनिर्मलः। सुवृत्तः सुविक्रान्तोऽपि सुलोचनः सुप्रतीकः॥
सुनीथः सुनन्दसुतः सुभगः सुमुखाम्भोजः। स्वक्षः स्वंगः सुदर्शनः स्वाकारः सुचरित्रश्च॥
सुजातः सुप्रतिष्णातः सुरभितः सुनायकः। सौभगः सौभागिनेयः सुखप्रदः सौभाग्यवान्॥
सुतज्येष्ठः सुतीप्रियः सुतिनी-हृदयंगमः। सहोदरीसंगादर्श-संसारस्वप्नदर्शकः॥
स्वल्पावस्थासहसा-संज्ञाशून्यशरीरः वै। सीतावल्लभ-मंत्रेण सचेतनपुनर्भूतः॥ 20॥

संस्कृतज्ञः सुशिक्षितः सुसंस्कारी सुसंस्कृतः। संस्कृतभाषाऽतिप्रियः संस्कृतभाषणनिपुणः॥
सुकविता-रचयिता सुलेखकः सुसंपादकः। सुहृते सह सुचारु-पत्रिकाप्रकाशनः॥
स्वल्पावस्थावैराग्य-शतकानुवादकरः। सरसकाव्यलेखकः सर्वशिक्षक-श्लाघितः॥
समित्रश्मशानभूमौ तंत्रप्रयोगकारकः। साहसिकः सुवीर्यश्च संदेहनिर्मुक्तः सदा॥
सुचतुरः सुहस्तश्च सुसरलः सुबलवान्। सर्वपैतृकसम्पत्ति-प्रबन्धकसंरक्षकः॥
सहस्राधिक-मेषाश्व-गोवृषभाज-पालकः। सुविस्तृत-कृषिक्षेत्र-कान्तार-पर्वताधीशः॥
सुखमन्गिरिप्रशिक्षितः सव्यमार्गोपसेवितः। साधनापथगामी च सव्यसाचीसमधीरः॥
सोदराऽकालदेहान्त-शोकाक्रान्तसहोदरः। स्त्रीजाति-सर्वतोमुखी-कल्याणसंकल्पितः॥

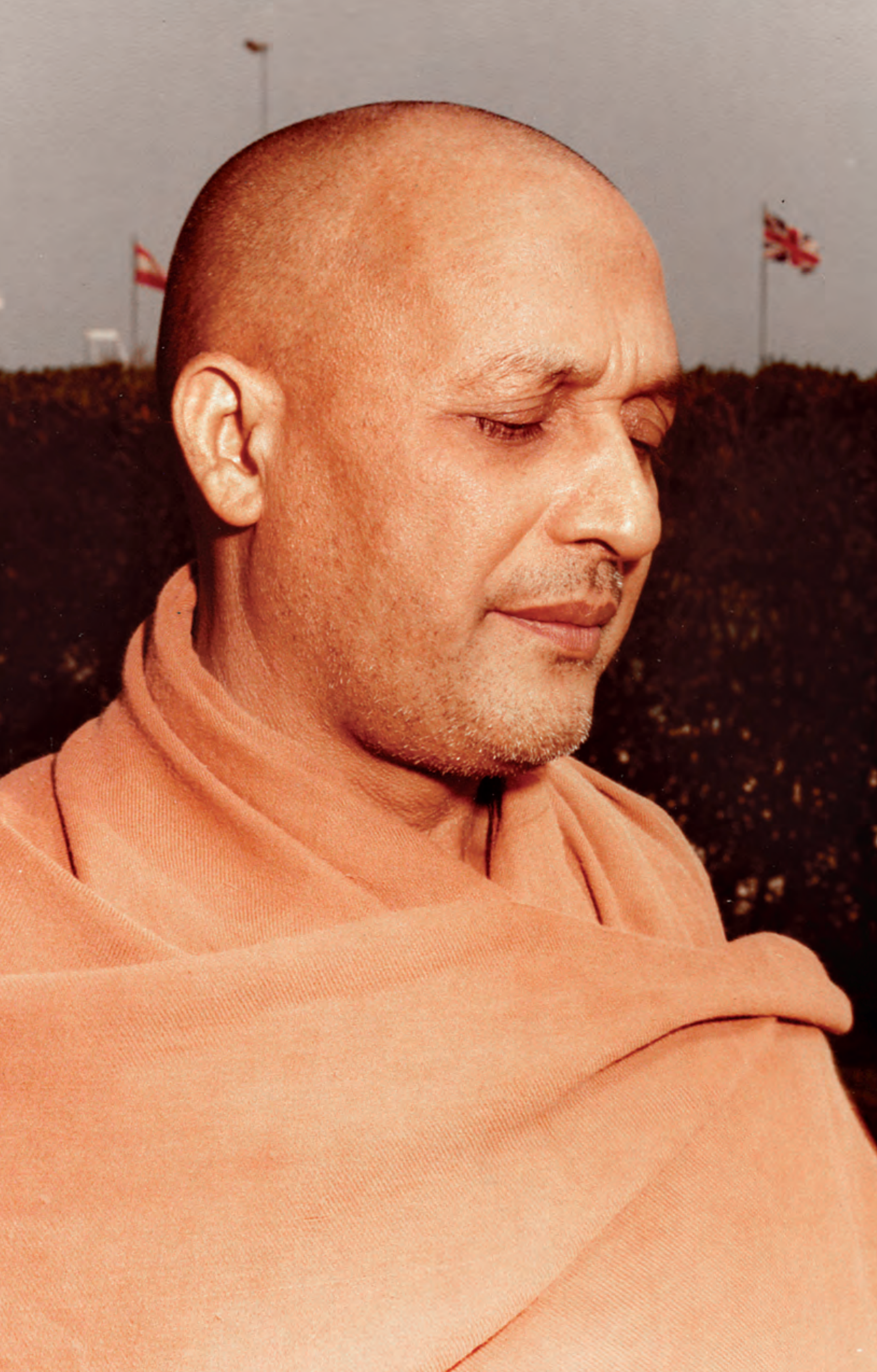


संसारविरक्तमनः सर्वस्वत्यागतत्परः। संशयहीनमनस्वी सदनत्यागी संन्यासी॥
स्वामिशिवानन्दपद-कमलशरणागतः। सद्गुरुसेवातत्परः सर्वकार्यसमुद्यतः॥30॥

सेवाधर्ममर्मज्ञोऽपि सेवाकार्यपरायणः। सेवाकर्मपारंगतः सेवारतः सुसेवकः॥
स्थापत्यविद्याप्रवीणः सदननिर्माणकरः। साम्बमंदिरपूजकः सततकीर्तनकरः॥
संस्थामहासचिवश्च सर्वकार्यसंचालकः। संस्थापाकशालायां बृहत्पात्रप्रक्षालकः॥
सद्गुरोर्लेखग्रंथानां टंकणानुवादकरः। सुरापगाऽम्बुवाहनः सुरसरित्तरणप्रियः॥
स्वसंस्थामुद्रणालयसंस्थापकसंचालकः। सर्वकार्यसिद्धहस्तः समग्रयोगसाधकः॥
स्वामिशिवानन्दवर्यब्रह्मचर्यव्रतदीक्षितः। सत्यचैतन्यकथितः सत्यम्-नाम्नाप्रियशिष्यः॥
सकलगुणसम्पन्नः सद्गुरुप्रीतिभाजनः। सत्त्वगुणाढ्यः सुप्रज्ञः सत्त्वगुणपरिपूर्णः॥
सतीपति-पंचाक्षर-परममंत्र-सेवितः। सीतापति-परंप्रियः सर्वदेवता-वंदनः॥
सुश्रुत-परमहंस-परम्परायां दीक्षितः। स्वामिसत्यानन्दसरस्वती-योगपट्टधरः॥
स्वामिशिवानंददिग्विजयकीर्तिगानकरः। सेतुबन्धे भावीपरियोजनादिव्यदर्शनः॥40॥

सातिशयमेधायुक्तः सातिशयकर्मरतः। स्वयं-जनचतुष्टय-समधिक-कार्यकरः॥
स्वामिशिवानन्दवर्यप्रतिध्वनिप्रकीर्तितः। सद्गुरुज्ञानयज्ञोपभृत्-समुपाधिप्रदत्तः हि॥
स्वैकत्रिंशज्जन्मदिने स्वगुरुवरसंस्तुतः। स्वगुरुभ्रातृवंदितः सर्वगुरुभ्रातृप्रियः॥
स्वामिशिवानन्दवर्येण अध्यात्मरत्नसंज्ञितः। सर्वविषयनिर्लिप्तनचिकेतस्तत्त्वपूर्णः॥
सौराष्ट्राक्षशिविरेषु नेत्रशल्यचिकित्सकः। सुचक्षुः सुचक्षुप्रदः सूक्ष्मचक्षुप्रदायकः॥
स्मरदहन-केतन-तीर्थाटन-सुसम्पन्नः। सुरापगा-स्त्रोततीर्थे प्राणायामसिद्धकृतः॥
स्वगुरुगायत्रीद्रष्टा स्वगुरुपरंब्रह्मज्ञः। सुसाधन-चतुष्टय-सम्पन्नः साधनादक्षः॥
संकीर्तनसम्राट्शिष्यः संकीर्तनपरंप्रियः। साहित्यकलासंगीत-नाट्यशास्त्रविशारदः॥
सुप्रशस्तः सुनर्तकः सुप्रवक्ता सुगायकः। संभाषणकलादक्षः संस्कृतभाषणकरः॥
सकलकुष्ठरोगिणां सर्वयोगक्षेमवहः। संयतमनः संयमी संयतेन्द्रियः सहर्षः॥50॥

सद्गुर्वाज्ञाशिरोधार्य-सद्यगुर्वाश्रम-निर्गतः। सर्वत्र-योगप्रचार-सुदृढसंकल्पकृतः॥
साधुः संतः सुरोपमः सनातनधर्मधरः। सम्पूर्णभारतवर्षे रहसिपरिव्राजकः॥
सत्यव्रत-धर्मशक्ति-राजनन्दग्रामाहूतः। सार्वभौम-योगमित्रमण्डल-संस्थापकः॥
सर्वदुःखहरः सिद्धः सर्वजनपीडाहरः। सकरुणः सहृदयः सहानुभूतिदायकः॥
सविनयः सविवेकः सविक्रमः सविमर्शः। समबुद्धिः समदर्शी संयतात्मा समभावी॥
सहजः सरलः स्नेही सहनशीलः सुशांतः। सर्वबालबालाप्रियः समस्तजनवन्दितः॥
सम्बुद्धः स्निग्धः समर्थः संसिद्धः सिद्धलक्षश्च। सूर्यचंद्रयोगसिद्धः सकलवपुसंशोधितः॥
सुरम्यगंगोत्रीतीर्थे दिव्याधिदेशप्राप्तवान्। सत्यव्रत-धर्मशक्ति-पुत्ररत्न-प्रदायकः॥

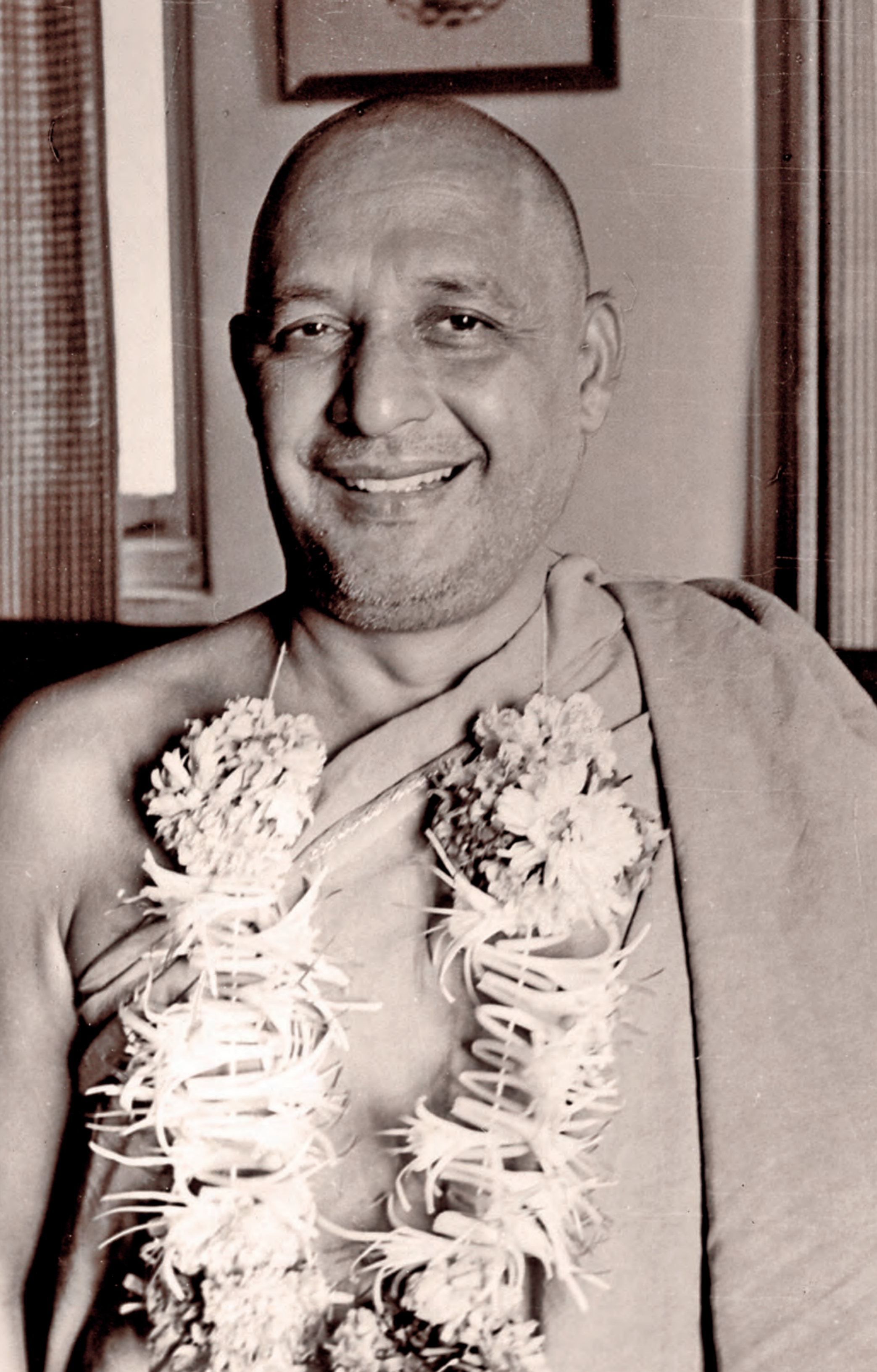


सद्गुरुमहासमाधि-मुद्गलपुर्यानुभूत:। स्वामिशिवानन्दाऽशीष-सम्प्राप्यसम्प्रोक्षित:॥
सुप्रख्यातबिहारयोगविद्यालयसंस्थापक:। सरस्वतीपूजादिने अखण्डज्योतिज्वालक:॥ 60॥

सूर्यात्मज-दानस्थले गंगादर्शन-स्थापन:। सूर्यसुत-समदाता सूर्यपुत्र-समधीर:॥
सर्वत्रयोगप्रचारक: समग्रयोगशिक्षक:। सकलविश्वव्राजक: सकलवसुधागुरु:॥
संन्यासपरम्परा-गरिमाप्रतिष्ठापक:। संन्याससत्र-चालक: संन्यासीगण-प्रेरक:॥
समाजशुभचिंतक: समाजकल्याणकर:। सहस्त्रछात्रशिक्षक: सहस्त्रशिष्यप्रेरक:॥
सहस्त्रशिष्यदीक्षाद: सहस्त्रशिष्यशरण्य:। स्वशिष्यमातृवत्पाल: स्तन्यामृतप्रदायक:॥
स्वगुर्वष्टोत्तरशतसंन्यासीशिष्यमालाद:। सर्वज्ञ: सर्वशिष्यात्मा सर्वशिष्यानुशासन:॥
समस्तशिष्योद्धारक: सर्वशिष्यहितकर:। सर्वशिष्यदु:खहर्त्ता सर्वशिष्यप्रपूजित:॥
सर्वशिष्यनिषेवित: सकलशिष्यवन्दित:। सकलशिष्यवीजित: समस्तशिष्याऽराधित:॥
सम्भावीसंस्कृतियोगभविष्यतीतिघोषण:। सर्वत्रयोगसंस्कृतिबीजानां समारोपण:॥
संसारसागरनाव: संसारार्णवनाविक:। संसारसिंधुतारक: संसारतापत्रयघ्न:॥ 70॥

सिद्धगुरु: सिद्धयोगी सिद्धर्षि: सिद्धपुरुष:।सिद्धयति: सिद्धमुनि: सिद्धात्मा सिद्धानां वर:॥
सदा-सहजसमाधिस्थ: समयाचार-तत्पर:। सौन्दर्यलहरी-पाठपरम्परा-प्रवर्तक:॥
साधनामार्गनिपुण: साधक: सुसाधक:। सहस्त्रसाधकप्रिय: साधकवृंदसंस्तुत:॥
सुबुध: सुप्रबन्धक: सुविख्यात: सुमंत्रज्ञ:। सुप्रशंसित: सुमति: सत्कर्मपरायण:॥
सर्वदाप्रसन्नचित्त: सर्वदाविनोदशील:। सदागुरुस्मृतिलीन: सदागुर्वाज्ञापालक:॥
समीरवेग: सर्वत्रयोगविद्याप्रवर्तक:। साधुवृत्त: समृद्धिद: समर्पणादर्शश्च॥
समितिञ्जय: सुश्रेष्ठ: सुलभ: समुल्लासित:। सिद्ध्यसिद्ध्योर्समभाव: सुप्रसाद: समर्पित:॥
सद्विचारी सदाचारी सम्पन्न: स्वस्थ: सार्थक:। सम्मानित: सलीलोऽपि सक्षम: सर्वशक्तिमान्॥
सांख्ययोगवेदांतविद् सकलशास्त्रमर्मज्ञ:। सप्तद्वीपयात्राकर: सप्तद्वीपोपदेशक:॥
सुगमचक्रजागरणप्रणालीप्रशिक्षक:। समीरमुक्तासनादियोगाभ्यासप्रवर्तक:॥ 80॥

सर्वमान्यवैज्ञानिकस्तरयोगप्रतिष्ठित:। सुप्रभावशालीयोग-निद्राविध्याविष्कारक:॥
सुविख्यातशताधिकयोगग्रंथप्रणेता हि। सर्वयोगांगदिवाकर: स्वरयोगसुधाकर:॥
सर्वत्रयोगसंगोष्ठी-सम्मेलनसंचालन:। समस्तयोगांगशोध-परियोजना-चालन:॥
स्पष्टतया प्रत्याहारपद्धतीनां निरूपण:। सरलतया अजपाजपांतर्मौनप्रबोधन:॥
स्वगुरुत्यागस्वर्णिमजयन्तीसमायोजक:। स्वगुरुस्मृतौ शिवानन्दमठसुसंस्थापक:॥
सृजनशील: सश्रीक: सम्प्रज्ञाप्रपन्नश्च। स्वयंसिद्ध: स्वयंभूत: स्वयंप्रभु: स्वयंप्रभ:॥
संवादकुशल: सुवंश: समीचीन: संवर्धन:। सद्गुणसंवर्धक: संयुक्त: संयोगकर:॥
स्पष्टमन: स्पष्टवादी स्पष्टवक्ता स्पष्टभाषी। समाजोत्थानचिंतन: समाजार्तिपरिहर:॥



सुप्रसिद्धः सुप्रख्यातः समादरणीयः सदा। समाश्रयः समुज्ज्वलः सत्पथाचारः समन्तः॥
समाधिभृत् समाधिमत् समाधिनिष्ठः सुदृष्टिः। समृद्धः समृद्धतेजः समृद्धयशः सोत्कर्षः॥ 90॥

सुवैद्यः सुचिकित्सकः सर्वव्याधिनिवारणः। सर्वविश्वपरिव्राजनः सर्वदेशसमादृतः॥
सूक्ष्मशरीरविचरः सूक्ष्मलोकरहस्यज्ञः। सूक्ष्मदिक्कालतत्त्वज्ञः सूक्ष्मज्ञानविज्ञानज्ञः॥
सम्प्रेषणसमर्थोपि सम्प्रेषणप्रशिक्षकः। संश्लिष्टयोगशिक्षकः समन्वितयोगगुरुः॥
सांगोपांगकर्मभक्तिज्ञानराजादियोगविद्। स्वरयोगप्रशिक्षकः सूर्योपासनाप्रेरकः॥
संन्यासिमणिः सुश्रवः सर्वस्वत्यागी सानंदः। समग्रणीसंन्यासी हि सर्वसंन्यासीधुरीणः॥
सोमनाथादितीर्थेषु दिव्यविग्रहोपासकः। सुन्दरत्र्यम्बकतीर्थे चातुर्मासससुसम्पन्नः॥
सुरम्यनीलपर्वते गोशालानिवासकृतः। स्वगुरुजन्मदिवसे अजस्रजपाज्ञाप्राप्तः॥
सदाशिवज्योतिर्लिंग-सतीचिताभूमिवासः। समाहर्निशदिवसे रिखियापदार्पणः॥
सुश्लोक्यपरमहंसः सर्वनिवृत्ताऽवधूतः। सदैकान्तवासप्रियः सदामंत्रजपलीनः॥
सुश्रवपंचाग्नितपसाद्योपान्तसुसम्पन्नः। संतप्तसुवर्णदेहः सुतेजः सुतेजोमयः॥ 100॥

सुशुभाष्टोत्तरशतलक्षमंत्रपुरश्चरः। साधनस्थले महाकालचिताधूनिस्थापकः॥
सम्पूर्णकल्याणकारी-शतचण्डीयज्ञकरः। सीताकल्याणमुत्सव-परम्पराप्रवर्त्तक :॥
सीतावल्लभनामस्य आराधनासंचालकः। सत्यभामावल्लभस्य झूलनोत्सवकारकः॥
सौमित्रिवत्सल-कथापारायण-परंप्रियः। सुमंगल-राजसूय-यज्ञ-सुसम्पन्नकरः॥
सतीहृदय-संजातः सतीहृदय-स्पन्दनः। सतीहृदय-निलयः सतीहृदय-वस्तुतः॥
स्थावरसुताऽऽराधकः स्थाणुप्रियाप्रियसुतः। सीतापतीष्टदेवश्च सतीपतिसम्पूजकः॥
सुभद्रापूर्वजप्रीतः सिद्धिविनायकप्रियः। सिंधुकन्याऽमोघाशीषसम्प्राप्यसमृद्धिप्रदः॥
सुतपः सुनेत्रः सुदः सुद्रष्टा सुधाकरः। सुबान्धवः सुमहौजः स्वर्णकायः सितमनः॥
सुन्दरः स्थिरः स्थितधीः स्थितप्रज्ञः सारमयः। सवप्रियः सवकरः स्वयंज्योतिः सवः स्थायी॥
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति सात्त्विकः सत्त्वः सत्त्ववान्। सुगमः सूक्ष्मः स्रग्वी स्रष्टा स्तव्यः स्थैर्यवान्॥ 110॥

सिद्धिधरः सिद्धिकरः सिद्धिसोपानोन्नायकः। सिद्धीश्वरः सिद्धेश्वरः सिद्धहस्तः सिद्धिप्रदः॥
सदानन्दः सदासुखी सदापरहितरतः। सदातुष्टः सदातृप्तः सदासेवातत्परः॥
सदास्मितः सदाऽघोरः सदाशान्तः सदामोदः। सदादयालुः सर्वदाकृपालुः सदाविभुः॥
सदासत्संकल्पयुक्तः सदाऽऽशीषप्रदायकः। सर्वदाकल्याणकरः सर्वदापरोपकारी॥
सातिशयकरुणार्द्रः सातिशयप्रज्ञायुक्तः। सेवार्थरिखियापीठसंस्थापकः सेवाप्रियः॥
सर्वथादोषविहीनः सर्वसंगविवर्जितः। समस्तधर्ममर्मज्ञः समस्तकर्मतत्त्वज्ञः॥
सहस्रारकमलस्थः सहस्रदलुत्फुल्लोऽपि। सर्वश्वास-मंत्रसिद्धः सर्वश्वासेष्टस्मरणः॥
सीतापत्याराधकः सतीपत्युपासकः। सगुणेश्वरः सगुणोपासना-प्रतिपादकः॥



सर्वेषां सुखसमृद्धिशांतिसंकल्पधारक:। सुप्रबुद्ध: सुसंयत: सुबन्धनविमोचन:॥
सुन्दरकिरीटधर: सुचारुमालाधर:। सवीर्य: साश्चर्यमय: सुयश: सुमाल्यक:॥ 120॥

सुपराक्रम: सुज्योति: स्तवनीय: सुबल:। सुप्रतिष्ठित: सुदामा सुपरिपूजित: सदा॥
सुवर्च: सुमनोरम: सुशरण्य: सुवर्चस्क:। सुशरीर: सुसमृद्ध: सुमित्र: सुसमाहित:॥
समनिंदास्तुति: सम: समशीतोष्ण: सदा। स्वार्थहीन: सेवालीन: सर्वयोगक्षेमवह:॥
सदाप्रसन्नवदन: सदापरमानन्दित:। सदातुरीयप्रतिष्ठ: सदासमाधिनिमग्न:॥
सुदीप्त: सुमानस: सदासमाहितमन:। सामीप्यसायुज्यसालोक्यसारूप्यमुक्तिदायक:॥
सुमहातेज: सुमहान् सुमहाबल: सुरक्ष:। स्वदेशप्रिय: स्वदेशसंस्कृतिपरंरुचिर:॥
सुसंस्कृतिसंस्थापन: सुसंस्कृतिसंवर्धन:। सर्वहृदयाकर्षण: सर्वहृदयसम्राट् च॥
सेवाप्रेमदानाऽदर्श: सेवामार्ग-प्रदर्शक:। सेवायोगसंन्यास-त्रिविधपीठ-स्थापक:॥
संगीत-नृत्य-साहित्य-संवर्धन-सम्पोषण:। सहस्राधिक-बटुककन्या-पितृवत्पालन:॥
सुशुभकन्यापूजनपरम्परासंवर्धन:। सर्वस्त्रीजननीतुल्य: सर्वकन्याऽऽत्मजामन्य:॥ 130॥

स्त्रीसमाजोत्थानकर: स्त्रीसमाजोत्साहप्रद:। स्त्रीजागरणप्रेरक: स्त्रीस्वावलम्बनलक्ष्य:॥
सकलकर्मनिवृत्त: सदासेवासम्प्रवृत्त:। समुत्फुल्लपद्मानन: सुहास: सिद्धतापस:॥
साक्षी स्वामी स्वामिभक्त: स्वामिभक्तश्वसेवित:। सकलभक्तहृदयसूक्ष्मशल्यक्रियाकर:॥
सप्तशतीपाठप्रिय: सुन्दरकाण्डातिरुचिर:। स्वोज: समग्रणीसिद्ध: समग्रयोगसंसिद्ध:॥
सर्वसमृद्धराजर्षि: सनकादिवत्ब्रह्मर्षि:। संन्यस्त: सर्वसंन्यस्त: संन्यस्तकर्तृभावश्च॥
संन्यासपीठे श्रीलक्ष्मीनारायणयज्ञप्रेरक:। स्वाधीन: स्वतंत्र: सुज्ञ: स्वेच्छामृत्यु: समाधिस्थ:॥
सम्प्रदीप्त: सम्पुष्टिद: सकलशिष्यसंस्मृत:। सुपरिपूर्ण: सत्कर्मा सत्पुरुष: सत्संकल्प:॥
सत्तम: सत्संगप्रिय: सत्त्वराशि: सत्त्वगुणी। सत्त्वशाली स्वावलम्बी सत्त्वोदृक्त: सत्त्वोत्साह:॥
सत्त्वशील: सत्त्वधाम सत्त्वस्थ: सत्त्वसम्पन्न:। सत्त्वप्रधान: सत्त्वात्मा सत्त्वसमाविष्ट: सत्वान्॥
सदाचारपरायण: सद्ध्यायी सदात्मा सत्। सदाशय: सद्वत्सल: सन्मति: सन्मार्गदर्शी॥ 140॥

सम्परिपूर्ण: संशुद्ध: सर्वसंस्मृत: सुश्रुत:। सम्प्रहृष्टमन: सौम्य: सभ्य: सामगानप्रिय:॥
सर्वत्र: सर्वव्यापी स: सर्वेषां शुभचिन्तक:। सर्वग: सर्वेश्वर: च सर्वभूतात्मा सर्वविद्॥
सर्वाभिज्ञ: सर्वधर: सर्वद: सर्वविद्याविद्। सर्वपापहर: सर्वकल्मषविध्वंसक:॥
सर्वसिद्धिविभूषित: सर्वविभूतिसम्पन्न:। सर्वकाम: सर्वकाम्य: सर्वकर: सर्वकारण:॥
सर्वकर्ता सर्वकारी सर्वकृत: सर्वगति:। सर्वसृष्टिपति: सर्वसुखसमृद्धिदायक:॥
सर्वगामी सर्वगुणी सर्वचारी सर्वत्यागी। सर्वहृदयनिलय: सर्वहृदयशासक:॥
साधिदैव: साधिभूत: साधियज्ञ: सामर्थ्यवान्। साक्षात्ब्रह्मा साक्षाच्छिव: साक्षान्नारायण: स्थित:॥
सहस्रशीर्ष: सर्वात्मा सहस्राक्ष: सहस्रपात्। सर्वतोमुख: सद्गति: सर्वतश्चक्षु: सत्कृति:॥



समस्तयतीनां श्रेष्ठः सकलयोगिनां वरः। सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥
सर्वदर्शी सदामर्षी सर्वोऽपि सर्वविज्जयी। सर्वाधारः सर्वाकारः सर्वतत्त्वसूक्ष्मसारः॥ 150॥

सत्कीर्तिः सन्निधिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः। सकलार्तिहरः सद्यःप्रसन्नः सद्यस्तुष्टश्च॥
सार्वगुणिकः सारगः सारदर्शी सारग्राही। सकलशिष्याणां शिष्यः समस्तसंसृतिगुरुः॥
सुप्रतिष्ठः सावधानः सुतीर्थः संगीतप्रियः। संसारध्वान्तसूर्यश्च संसारतापसुधांशुः॥
सूक्ष्मबुद्धिः सूक्ष्मदर्शी सूक्ष्मतत्त्वविचारकः। सकलैश्वर्यप्रदाता सम्पूर्णकल्याणकरः॥
स्तुतः स्तुत्यः स्तोतव्यः स्तुत्याशुप्रसन्नोऽपि। स्तुतिदः स्तुतिवंदितः सौभाग्यदः स्फूर्तिमान्॥
साधनाम्बुजसूर्योऽपि साधनामार्गदर्शकः। साधनामार्गमार्तण्डः साधनामार्गशशांकः॥
स्थिरमतिः स्थिरचेता स्थिरधीः हि स्थिरस्थायी। साधुचरणः सुश्लोकः समस्तशिष्यपूजितः॥
सर्वमंगलमांगल्यः सुधर्मिष्ठः सुशोभितः। सुमान्यः सम्माननीयः समकरः सम्मानदः॥
सम्पूर्णः सम्पूर्णसिद्धः सम्पूर्णसोमः सुयोगी। सम्पूर्णयोगी सुधांशुः सम्पूर्णगुरुः सद्गुरुः॥
सूर्यकोटिसमप्रभः सोमकोटिनिभाननः। समुद्रकोटिगम्भीरः समीरकोटिमहाबलः॥ 160॥

सोमसूर्याग्निलोचनः सोमसुधापानकरः। सुविदः सुमहासत्त्वः संतशिरोमणिः स्तुत्यर्हः॥
साम्बः साम्बप्रियः साम्बसदाशिवप्रियभक्तः। स्मरहरार्चनप्रियः सदाशिवार्चनरतः॥
सदाशिवकृपापात्रः सतीवल्लभपूजकः। सदाशिवसहचरः सदाशिवलोकवासः॥
सीतापत्यर्चनप्रियः सीतापूजनप्रियोऽपि। सीतारामध्यानरतः सीताराममयसर्वविद्॥
सरस्वत्यर्चनप्रियः सरस्वतीसम्पूजकः। स्वर्णिमवदनः स्रग्वान् सततयुक्तः सुशुभः॥
सहचरः सहयोगी सहयात्री सहायकः। सुभद्रः सुमहातपः सुमधुरः सहर्षितः॥
स्वस्वरूपानुसंधानशीलः सरलहृदयः। संहर्षी संहृष्टमनः साह्लादः सम्पूर्णानन्दः॥
सशक्तः समर्थगुरुः सर्वसक्षमसद्गुरुः। समाधानशीलः सर्वशिष्यशंकासमाधानः॥
सम्परिपालकः सारः सर्वविघ्नविनाशकः। संकटहरः सुकृती सर्वसंकटनाशकः॥
सफलः सफलशिष्यः सफलताप्रदायकः। सफलगुरुः सफलसंस्थानानां प्रशासकः॥ 170॥

स्वर्गपरः स्वर्गधरः स्वर्गस्थानप्रदायकः। सिंहः सिंहविक्रान्तोऽपि सिंहनादी सिंहगामी॥
सर्वेन्द्रियगुणाभासः सर्वेन्द्रियविवर्जितः। सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः संशुद्धसर्वकिल्बिषः॥
स्थिरमनः स्थिरबुद्धिः सर्वारम्भपरित्यागी। सर्वभूतस्थितः स्तोम्यः समचित्तः सूक्ष्ममतिः॥
स्पृहाहीनः सिद्धकामः सर्वसंदेहनिर्मुक्तः। सुदुर्लभदानशीलः सर्वसम्पदादायकः॥
संग्रहवृत्तिनिर्मुक्तः समलोष्टाश्मकांचनः। स्तोकः स्थावरसंकल्पः स्थावरसंकाशोन्नतः॥
संसाराब्धिसमुद्धर्ता सदास्वाध्यायनिरतः। सर्वसत्कारकारकः समस्तलोकोद्धारकः॥
संशोभितः सुविमलः संसारचक्रनिर्मुक्तः। संसृतिबंधनविमोचनः सन्मार्गसुप्रदर्शकः॥
संसार-क्रीडासमासक्त-जीवचित्तापहारकः। संसार-वृक्षच्छेदन-सकलोपाय-बोधकः॥



संसारसागरसेतुः संसारार्णवतारणः। संसारसिन्धुशोषणः सारसंपदज्ञापनः॥
सर्वोपनिषत्सारज्ञः सर्वतंत्रपारंगतः। सर्वशास्त्रपरायणः सर्वविद्याविशारदः॥ 180॥

सर्ववेदान्तविदुषः सकलागमपारगः। सर्वैश्वर्यप्रदायकः सर्वपापप्रशमनः॥
सर्वापद्विनिवारकः सर्वसंकटमोचनः। समस्तगुणसंग्रहः समस्तैश्वर्यसंदोहः॥
समस्तभक्तपूजितः समस्तसाधकाराध्यः। समस्तपापसंहृतः सकलदुःखतापहा॥
सुरवंद्यः सिद्धपूज्यः संताराध्यः साधूपास्यः। सदाऽऽराध्यः सदाऽऽह्लादः सदास्वस्वरूपस्थः॥
सम्भृतस्नेहः सुप्रभः सम्भ्रान्तिहरः ससत्त्वः। संसारानलसंतप्तभक्तहृदयशीतलः॥
सम्मान्यः सुसम्मानितः सम्मोदः स्मितोज्ज्वलः। सम्यग्गुणः सम्यग्गोप्ता सम्यग्दर्शनसम्पन्नः॥
सम्यग्व्यवसितः सम्राट् सम्यग्विजयी सुवाग्मी। सूत्रात्मा सूत्रधारश्च सेतुः संस्थोऽपि सरश्मिः॥
सद्बुद्धिदः स्वल्पाहारः स्वल्पसेवया तोषितः। साधुशीलः साधुतमः सहिष्णुः सुमहाव्रतः॥
साधुजातः साररूपः स्वरूपज्ञः स्वरूपस्थः। सन्निवासः संरक्षकः सविज्ञानः सप्रभावः॥
सर्वरक्षी सर्वस्वामी सम्यकाचार्यः सम्भक्तः। सर्वरूपः सर्वनाथः सर्ववासः सार्वभौमः॥ 190॥

सर्वप्रदः सर्वप्रभुः सर्वपूर्णः सर्वतेजः। सर्वश्रेष्ठः सर्वहितः सर्वादिः सर्वसम्पन्नः॥
सर्वसंस्थः सर्वाश्रयः सर्वान्तः सर्वार्थसिद्धः। सर्वविज्ञानः सर्वेशः सर्वलोकमहेश्वरः॥
सर्वीयः सर्वतोभद्रः सविता सर्वलोकभृत्। संन्यासयोगयुक्तात्मा सदासमदुःखसुखः॥
सर्गविसर्गप्रलय-सर्वरहस्य-मर्मज्ञः। सप्तसप्ति-संकाशोऽपि सारभूतः सुवीरः॥
सर्वज्ञानप्रकाशनः सर्वलोकाकर्षणः। सकलगुणसंदोहः सुमंगलः स्वाशीषदः॥
सुरोपमदेदीप्यमान् स्मरणीयः सौजन्यवान्। सर्वविद्याम्बुजसूर्यः सर्वदाप्रकाशमान्॥
स्मरणमात्रेण सर्व-सहायता-प्रदायकः। सुषुप्ति-स्वप्न-जाग्रत-मनोवस्था-पारगः॥
सद्यःपुनरागमन-वचनबद्धगुरुवरः। सत्यशिवसुन्दरमयः समाख्यातः सर्वप्रियः॥
स्थावरजंगमव्याप्तः सर्वभूतान्तरात्मा च। सर्वजयीचक्रवर्ती सर्वत्यागिसुसंन्यासी॥
सम्पूर्णकलासम्पन्नः साक्षात्पूर्णपरब्रह्मः। सुश्रेष्ठमानसपुत्रः सच्चिदानन्दस्वरूपः॥ 200॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

हरिः ॐ॥



सकारादि-सत्यम्-सहस्त्रनामावलिः

ॐ सत्याय नमः
ॐ स्वामिसत्यानन्दाय नमः
ॐ सच्चिदानन्द-विग्रहाय नमः
ॐ सत्यनिष्ठाय नमः
ॐ सत्यशीलाय नमः
ॐ सत्यप्रतिज्ञाय नमः
ॐ सत्यवते नमः
ॐ सत्यस्वरूपाय नमः
ॐ सत्यज्ञाय नमः
ॐ सत्यवादिने नमः 10
ॐ सत्यधामाय नमः
ॐ सत्यमूर्तये नमः
ॐ सत्यभाषिणे नमः
ॐ सत्याधाराय नमः
ॐ सत्यरताय नमः
ॐ सत्यमार्ग-प्रवर्तकाय नमः
ॐ सत्यलोक-विराजिताय नमः
ॐ सत्यासत्यविभेदविदे नमः
ॐ सत्यदर्शिने नमः
ॐ सनातनाय नमः 20
ॐ सत्यविक्रमाय नमः
ॐ सत्यस्थाय नमः
ॐ सत्यकामाय नमः
ॐ सत्यप्रियाय नमः
ॐ सत्यसंकल्पाय नमः
ॐ सत्यविदे नमः
ॐ सत्यसंधाय नमः
ॐ सत्यधृतये नमः
ॐ सत्यतपाय नमः
ॐ सत्यगिराय नमः 30
ॐ सत्यदेवाय नमः
ॐ सत्यधनाय नमः
ॐ सत्यपराय नमः
ॐ सत्यनाम्ने नमः
ॐ सत्यधर्म-परायणाय नमः
ॐ सत्यमयाय नमः
ॐ सत्यमंत्राय नमः
ॐ सत्यवाक्याय नमः
ॐ सत्यश्रवाय नमः
ॐ सत्यानुरक्ताय नमः 40
ॐ सत्यजिते नमः
ॐ सत्यमेधसे नमः
ॐ सत्यवृत्ताय नमः
ॐ सत्यवचसे नमः
ॐ सत्यव्रताय नमः
ॐ साक्षात्सत्यर्त-विग्रहाय नमः
ॐ सत्कुलीनाय नमः
ॐ सच्चरित्राय नमः
ॐ सत्पथगामिने नमः
ॐ सन्तताय नमः 50
ॐ सुदर्शनकूर्मांचल-
गिरिप्रदेशसंजाताय नमः
ॐ सौम्यमास-पूर्णिमाजाय नमः
ॐ सुनक्षत्राय नमः
ॐ सुयोगजाय नमः
ॐ सीतावल्लभ-कुलजाय नमः
ॐ सर्वत्रमंगल-कराय नमः
ॐ सुप्रतिष्ठ-कुलोत्पन्नाय नमः
ॐ सूर्यवंश-विभूषणाय नमः
ॐ सूर्यवर्चसे नमः
ॐ सूर्यप्रभाय नमः 60
ॐ सूर्यमयूख-सन्दोहाय नमः



ॐ सूर्यरश्मि-प्रभासिताय नमः
ॐ सूर्यवत्मुख-मण्डलाय नमः
ॐ सूर्यवंशिने नमः
ॐ सूर्यज्योतये नमः
ॐ सूर्यसमजाज्वल्यमते नमः
ॐ सोमवपुषे नमः
ॐ सोमवक्त्राय नमः
ॐ सोमसंकाश-कांतिमते नमः
ॐ समग्रेन्दु-निभाननाय नमः 70
ॐ सुधांशुप्रभा-सम्पन्नाय नमः
ॐ सरोजाक्षाय नमः
ॐ सरोजांघ्रये नमः
ॐ सरोजमुखाय नमः
ॐ सुतनवे नमः
ॐ सम्पन्नरूपाय नमः
ॐ सुमुखाय नमः
ॐ सुपुत्राय नमः
ॐ सुमनोहराय नमः
ॐ सुवर्णाय नमः 80
ॐ सुवर्णवपुषे नमः
ॐ सुवर्णकान्तये नमः
ॐ सुषमाय नमः
ॐ सुरूपाय नमः
ॐ सुवक्त्राय नमः
ॐ सुराय नमः
ॐ सुकुलजाय नमः
ॐ स्मितमुखाय नमः
ॐ सुनयनाय नमः
ॐ सुलक्षणाय नमः 90
ॐ सुस्मिताय नमः
ॐ सुकुमाराय नमः
ॐ सुधीराय नमः
ॐ सुमेधसे नमः
ॐ सुखाय नमः
ॐ सुव्रताय नमः
ॐ सुहृदाय नमः
ॐ सख्ये नमः
ॐ सुहृदयाय नमः
ॐ सुनीताय नमः 100
ॐ सज्जनाय नमः
ॐ सत्वराय नमः
ॐ सुधये नमः
ॐ सुहासाननाय नमः
ॐ सुभाषाय नमः
ॐ सुमनसे नमः
ॐ सुविनिर्मलाय नमः
ॐ सुवृत्ताय नमः
ॐ सुविक्रान्ताय नमः
ॐ सुलोचनाय नमः 110
ॐ सुप्रतीकाय नमः
ॐ सुनीथाय नमः
ॐ सुनन्दसुताय नमः
ॐ सुभगाय नमः
ॐ सुमुखाम्भोजाय नमः
ॐ स्वक्षाय नमः
ॐ स्वंगाय नमः
ॐ सुदर्शनाय नमः
ॐ स्वाकाराय नमः
ॐ सुचरित्राय नमः 120
ॐ सुजाताय नमः
ॐ सुप्रतिष्णाताय नमः
ॐ सुरभिताय नमः
ॐ सुनायकाय नमः
ॐ सौभगाय नमः
ॐ सौभागिनेयाय नमः
ॐ सुखप्रदाय नमः



ॐ सौभाग्यवते नमः
ॐ सुतज्येष्ठाय नमः
ॐ सुतीप्रियाय नमः 130
ॐ सुतिनी-हृदयंगमाय नमः
ॐ सहोदरीसंगादर्श-संसारस्वप्न-दर्शकाय नमः
ॐ स्वल्पावस्था-सहसासंज्ञाशून्य-शरीराय नमः
ॐ सीतावल्लभमंत्रेण सचेतन-पुनर्भूताय नमः
ॐ संस्कृतज्ञाय नमः
ॐ सुशिक्षिताय नमः
ॐ सुसंस्कारिणे नमः
ॐ सुसंस्कृताय नमः
ॐ संस्कृत-भाषाऽतिप्रियाय नमः
ॐ संस्कृतभाषण-निपुणाय नमः 140
ॐ सुकविता-रचयित्रे नमः
ॐ सुलेखकाय नमः
ॐ सुसम्पादकाय नमः
ॐ सुहृते सह सुचारुपत्रिका-प्रकाशनाय नमः
ॐ स्वल्पावस्था-वैराग्यशतकानुवाद-कराय नमः
ॐ सरसकाव्य-लेखकाय नमः
ॐ सर्वशिक्षक-श्लाघिताय नमः
ॐ समित्र-श्मशानभूमौ तंत्रप्रयोग-कारकाय नमः
ॐ साहसिकाय नमः
ॐ सुवीर्याय नमः 150
ॐ संदेहनिर्मुक्ताय नमः
ॐ सुचतुराय नमः
ॐ सुहस्ताय नमः
ॐ सुसरलाय नमः
ॐ सुबलवते नमः
ॐ सर्वपैतृक-सम्पत्तिप्रबंधक-संरक्षकाय नमः
ॐ सहस्राधिक-मेषाश्वगोवृषभाज-पालकाय नमः
ॐ सुविस्तृत-कृषिक्षेत्रकान्तार-पर्वताधीशाय नमः
ॐ सुखमन्गिरि-प्रशिक्षिताय नमः
ॐ सव्य-मार्गोपसेविताय नमः 160
ॐ साधनापथ-गामिने नमः
ॐ सव्यसाची-समधीराय नमः
ॐ सोदराऽकालदेहान्त-शोकाक्रान्त-सहोदराय नमः
ॐ स्त्रीजाति-सर्वतोमुखी-कल्याण-संकल्पिताय नमः
ॐ संसारविरक्त-मनसे नमः
ॐ सर्वस्वत्याग-तत्पराय नमः
ॐ संशयहीन-मनस्विने नमः
ॐ सदनत्यागिने नमः
ॐ संन्यासिने नमः
ॐ स्वामिशिवानन्द-पदकमल-शरणागताय नमः 170
ॐ सद्गुरुसेवा-तत्पराय नमः
ॐ सर्वकार्य-समुद्यताय नमः
ॐ सेवाधर्म-मर्मज्ञाय नमः
ॐ सेवाकार्य-परायणाय नमः
ॐ सेवाकर्म-पारंगताय नमः
ॐ सेवारताय नमः
ॐ सुसेवकाय नमः
ॐ स्थापत्यविद्या-प्रवीणाय नमः
ॐ सदननिर्माण-कराय नमः
ॐ साम्बमंदिर-पूजकाय नमः 180
ॐ सततकीर्तन-कराय नमः



ॐ संस्था-महासचिवाय नमः
ॐ सर्वकार्य-संचालकाय नमः
ॐ संस्थापाकशालायां बृहत्पात्र-प्रक्षालकाय नमः
ॐ सद्गुरोर्लेखग्रंथानां टंकणानुवाद-कराय नमः
ॐ सुरापगाऽम्बुवाहनाय नमः
ॐ सुरसरित्तरण-प्रियाय नमः
ॐ स्वसंस्था-मुद्रणालय-संस्थापक-संचालकाय नमः
ॐ सर्वकार्य-सिद्धहस्ताय नमः
ॐ समग्रयोग-साधकाय नमः 190
ॐ स्वामिशिवानन्दवर्य-ब्रह्मचर्यव्रत-दीक्षिताय नमः
ॐ सत्यचैतन्य-कथिताय नमः
ॐ सत्यम्-नाम्नाप्रियशिष्याय नमः
ॐ सकलगुण-सम्पन्नाय नमः
ॐ सद्गुरुप्रीति-भाजनाय नमः
ॐ सत्त्वगुणाढ्याय नमः
ॐ सुप्रज्ञाय नमः
ॐ सत्त्वगुण-परिपूर्णाय नमः
ॐ सतीपति-पंचाक्षर-परममंत्रसेविताय नमः
ॐ सीतापति-परंप्रियाय नमः 200
ॐ सर्वदेवता-वंदनाय नमः
ॐ सुश्रुतपरमहंस-परम्परायां दीक्षिताय नमः
ॐ स्वामिसत्यानन्दसरस्वती-योगपट्टधराय नमः
ॐ स्वामिशिवानन्द-दिग्विजय-कीर्तिगानकराय नमः
ॐ सेतुबन्धे भावीपरियोजना-दिव्यदर्शनाय नमः
ॐ सातिशय-मेधायुक्ताय नमः
ॐ सातिशय-कर्मरताय नमः
ॐ स्वयंजनचतुष्टय-समधिककार्य-कराय नमः
ॐ स्वामिशिवानन्दवर्य-प्रतिध्वनि-प्रकीर्तिताय नमः
ॐ सद्गुरुज्ञानयज्ञोपभृत्-समुपाधिप्रदत्ताय नमः 210
ॐ स्वैकत्रिंशज्जन्मदिने स्वगुरुवर-संस्तुताय नमः
ॐ स्वगुरुभ्रातृ-वंदिताय नमः
ॐ सर्वगुरुभ्रातृ-प्रियाय नमः
ॐ स्वामिशिवानन्दवर्येण अध्यात्मरत्नसंज्ञिताय नमः
ॐ सर्वविषयनिर्लिप्त-नचिकेतस्तत्त्वपूर्णाय नमः
ॐ सौराष्ट्राक्ष-शिविरेषु नेत्रशल्य-चिकित्सकाय नमः
ॐ सुचक्षुषे नमः
ॐ सुचक्षुप्रदाय नमः
ॐ सूक्ष्मचक्षु-प्रदायकाय नमः
ॐ स्मरदहनकेतन-तीर्थाटन-सुसम्पन्नाय नमः 220
ॐ सुरापगा-स्रोततीर्थे प्राणायाम-सिद्धकृताय नमः
ॐ स्वगुरु-गायत्रीद्रष्ट्रे नमः
ॐ स्वगुरु-परंब्रह्मज्ञाय नमः
ॐ सुसाधनचतुष्टय-सम्पन्नाय नमः
ॐ साधनादक्षाय नमः
ॐ संकीर्तनसम्राट्-शिष्याय नमः
ॐ संकीर्तन-परंप्रियाय नमः
ॐ साहित्यकलासंगीत-नाट्यशास्त्र-विशारदाय नमः



ॐ सुप्रशस्ताय नमः
ॐ सुनर्तकाय नमः 230
ॐ सुप्रवक्त्रे नमः
ॐ सुगायकाय नमः
ॐ संभाषण-कलादक्षाय नमः
ॐ संस्कृतभाषण-कराय नमः
ॐ सकलकुष्ठरोगिणां
सर्वयोगक्षेमवहाय नमः
ॐ संयतमनसे नमः
ॐ संयमिने नमः
ॐ संयतेन्द्रियाय नमः
ॐ सहर्षाय नमः
ॐ सद्गुर्वाज्ञाशिरोधार्य-सद्यगुर्वाश्रम-
निर्गताय नमः 240
ॐ सर्वत्रयोगप्रचार-सुदृढसंकल्प-
कृताय नमः
ॐ साधवे नमः
ॐ संताय नमः
ॐ सुरोपमाय नमः
ॐ सनातन-धर्मधराय नमः
ॐ सम्पूर्णभारतवर्षे रहसि-
परिव्राजकाय नमः
ॐ सत्यव्रतधर्मशक्ति-
राजनन्दग्रामाहूताय नमः
ॐ सार्वभौम-योगमित्रमण्डल-
संस्थापकाय नमः
ॐ सर्वदुःखहराय नमः
ॐ सिद्धाय नमः 250
ॐ सर्वजन-पीडाहराय नमः
ॐ सकरुणाय नमः
ॐ सहृदयाय नमः
ॐ सहानुभूति-दायकाय नमः
ॐ सविनयाय नमः
ॐ सविवेकाय नमः
ॐ सविक्रमाय नमः
ॐ सविमर्शाय नमः
ॐ समबुद्धये नमः
ॐ समदर्शिने नमः 260
ॐ संयतात्मने नमः
ॐ समभाविने नमः
ॐ सहजाय नमः
ॐ सरलाय नमः
ॐ स्नेहिने नमः
ॐ सहनशीलाय नमः
ॐ सुशांताय नमः
ॐ सर्वबालबाला-प्रियाय नमः
ॐ समस्तजन-वन्दिताय नमः
ॐ सम्बुद्धाय नमः 270
ॐ स्निग्धाय नमः
ॐ समर्थाय नमः
ॐ संसिद्धाय नमः
ॐ सिद्धलक्षाय नमः
ॐ सूर्यचंद्रयोग-सिद्धाय नमः
ॐ सकलवपु-संशोधिताय नमः
ॐ सुरम्यगंगोत्रीतीर्थे दिव्याधिदेश-
प्राप्तवते नमः
ॐ सत्यव्रतधर्मशक्ति-पुत्ररत्न-
प्रदायकाय नमः
ॐ सद्गुरु-महासमाधि-
मुद्गलपुर्यानुभूताय नमः
ॐ स्वामिशिवानन्दाऽशीष-
सम्प्राप्यसम्प्रोक्षिताय नमः 280
ॐ सुप्रख्यात-बिहारयोगविद्यालय-
संस्थापकाय नमः
ॐ सरस्वतीपूजादिने अखण्डज्योति-
ज्वालकाय नमः



ॐ सूर्यात्मज-दानस्थले गंगादर्शन-
स्थापनाय नमः
ॐ सूर्यसुत-समदात्रे नमः
ॐ सूर्यपुत्र-समधीराय नमः
ॐ सर्वत्रयोग-प्रचारकाय नमः
ॐ समग्रयोग-शिक्षकाय नमः
ॐ सकलविश्व-व्राजकाय नमः
ॐ सकल-वसुधागुरवे नमः
ॐ संन्यासपरम्परा-
गरिमाप्रतिष्ठापकाय नमः 290
ॐ संन्याससत्र-चालकाय नमः
ॐ संन्यासीगण-प्रेरकाय नमः
ॐ समाज-शुभचिंतकाय नमः
ॐ समाज-कल्याणकराय नमः
ॐ सहस्रछात्र-शिक्षकाय नमः
ॐ सहस्रशिष्य-प्रेरकाय नमः
ॐ सहस्रशिष्य-दीक्षादाय नमः
ॐ सहस्रशिष्य-शरण्याय नमः
ॐ स्वशिष्य-मातृवत्पालाय नमः
ॐ स्तन्यामृत-प्रदायकाय नमः 300
ॐ स्वगुर्वष्टोत्तरशत-संन्यासीशिष्य-
मालादाय नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सर्वशिष्यात्मने नमः
ॐ सर्वशिष्यानुशासनाय नमः
ॐ समस्तशिष्योद्धारकाय नमः
ॐ सर्वशिष्य-हितकराय नमः
ॐ सर्वशिष्य-दुःखहर्त्रे नमः
ॐ सर्वशिष्य-प्रपूजिताय नमः
ॐ सर्वशिष्य-निषेविताय नमः
ॐ सकलशिष्य-वन्दिताय नमः 310
ॐ सकलशिष्य-वीजिताय नमः
ॐ समस्तशिष्याऽराधिताय नमः
ॐ सम्भावीसंस्कृति-योगभविष्यतीति-
घोषणाय नमः
ॐ सर्वत्रयोग-संस्कृतिबीजानां
समारोपणाय नमः
ॐ संसारसागर-नावाय नमः
ॐ संसारार्णव-नाविकाय नमः
ॐ संसारसिंधु-तारकाय नमः
ॐ संसारताप-त्रयघ्नाय नमः
ॐ सिद्धगुरवे नमः
ॐ सिद्धयोगिने नमः 320
ॐ सिद्धर्षये नमः
ॐ सिद्धपुरुषाय नमः
ॐ सिद्धयतये नमः
ॐ सिद्धमुनये नमः
ॐ सिद्धात्मने नमः
ॐ सिद्धानां वराय नमः
ॐ सदासहज-समाधिस्थाय नमः
ॐ समयाचार-तत्पराय नमः
ॐ सौन्दर्यलहरी-पाठपरम्परा-
प्रवर्तकाय नमः
ॐ साधनामार्ग-निपुणाय नमः 330
ॐ साधकाय नमः
ॐ सुसाधकाय नमः
ॐ सहस्रसाधक-प्रियाय नमः
ॐ साधकवृंद-संस्तुताय नमः
ॐ सुबुधाय नमः
ॐ सुप्रबन्धकाय नमः
ॐ सुविख्याताय नमः
ॐ सुमंत्रज्ञाय नमः
ॐ सुप्रशंसिताय नमः
ॐ सुमतये नमः 340
ॐ सत्कर्मपरायणाय नमः
ॐ सर्वदाप्रसन्न-चित्ताय नमः



ॐ सर्वदाविनोद-शीलाय नमः
ॐ सदागुरु-स्मृतिलीनाय नमः
ॐ सदागुर्वाज्ञा-पालकाय नमः
ॐ समीरवेगाय नमः
ॐ सर्वत्रयोगविद्या-प्रवर्तकाय नमः
ॐ साधुवृत्ताय नमः
ॐ समृद्धिदाय नमः
ॐ समर्पणादर्शाय नमः 350
ॐ समितिञ्जयाय नमः
ॐ सुश्रेष्ठाय नमः
ॐ सुलभाय नमः
ॐ समुल्लासिताय नमः
ॐ सिद्ध्यसिद्ध्योर्समभावाय नमः
ॐ सुप्रसादाय नमः
ॐ समर्पिताय नमः
ॐ सद्विचारिणे नमः
ॐ सदाचारिणे नमः
ॐ सम्पन्नाय नमः 360
ॐ स्वस्थाय नमः
ॐ सार्थकाय नमः
ॐ सम्मानिताय नमः
ॐ सलीलाय नमः
ॐ सक्षमाय नमः
ॐ सर्वशक्तिमते नमः
ॐ सांख्ययोग-वेदांतविदे नमः
ॐ सकलशास्त्र-मर्मज्ञाय नमः
ॐ सप्तद्वीप-यात्राकराय नमः
ॐ सप्तद्वीपोपदेशकाय नमः 370
ॐ सुगमचक्रजागरण-प्रणालीप्रशिक्षकाय नमः
ॐ समीरमुक्तासनादि-योगाभ्यास-
प्रवर्तकाय नमः
ॐ सर्वमान्य-वैज्ञानिकस्तर-
योगप्रतिष्ठिताय नमः
ॐ सुप्रभावशाली-योगनिद्रा-
विध्याविष्कारकाय नमः
ॐ सुविख्यात-शताधिकयोगग्रंथ-
प्रणेत्रे नमः
ॐ सर्वयोगांग-दिवाकराय नमः
ॐ स्वरयोग-सुधाकराय नमः
ॐ सर्वत्रयोग-संगोष्ठीसम्मेलन-
संचालनाय नमः
ॐ समस्तयोगांग-शोधपरियोजना-
चालनाय नमः
ॐ स्पष्टतया प्रत्याहारपद्धतीनां
निरूपणाय नमः 380
ॐ सरलतया अजपाजपांतर्मौन-
प्रबोधनाय नमः
ॐ स्वगुरुत्याग-स्वर्णिमजयन्ती-
समायोजकाय नमः
ॐ स्वगुरुस्मृतौ शिवानन्दमठ-
सुसंस्थापकाय नमः
ॐ सृजनशीलाय नमः
ॐ सश्रीकाय नमः
ॐ सम्प्रज्ञाप्रपन्नाय नमः
ॐ स्वयंसिद्धाय नमः
ॐ स्वयंभूताय नमः
ॐ स्वयंप्रभवे नमः
ॐ स्वयंप्रभाय नमः 390
ॐ संवादकुशलाय नमः
ॐ सुवंशाय नमः
ॐ समीचीनाय नमः
ॐ संवर्धनाय नमः
ॐ सद्गुणसंवर्धकाय नमः
ॐ संयुक्ताय नमः
ॐ संयोगकराय नमः
ॐ स्पष्टमनसे नमः



ॐ स्पष्टवादिने नमः
ॐ स्पष्टवक्त्रे नमः 400
ॐ स्पष्टभाषिणे नमः
ॐ समाजोत्थान-चिंतनाय नमः
ॐ समाजार्ति-परिहराय नमः
ॐ सुप्रसिद्धाय नमः
ॐ सुप्रख्याताय नमः
ॐ समादरणीयाय नमः
ॐ समाश्रयाय नमः
ॐ समुज्ज्वलाय नमः
ॐ सत्पथाचाराय नमः
ॐ समन्ताय नमः 410
ॐ समाधिभृते नमः
ॐ समाधिमते नमः
ॐ समाधिनिष्ठाय नमः
ॐ सुदृष्टये नमः
ॐ समृद्धाय नमः
ॐ समृद्ध-तेजाय नमः
ॐ समृद्ध-यशाय नमः
ॐ सोत्कर्षाय नमः
ॐ सुवैद्याय नमः
ॐ सुचिकित्सकाय नमः 420
ॐ सर्वव्याधि-निवारणाय नमः
ॐ सर्वविश्व-परिव्राजनाय नमः
ॐ सर्वदेश-समादृताय नमः
ॐ सूक्ष्मशरीर-विचराय नमः
ॐ सूक्ष्मलोक-रहस्यज्ञाय नमः
ॐ सूक्ष्मदिक्काल-तत्त्वज्ञाय नमः
ॐ सूक्ष्मज्ञान-विज्ञानज्ञाय नमः
ॐ सम्प्रेषण-समर्थाय नमः
ॐ सम्प्रेषण-प्रशिक्षकाय नमः
ॐ संश्लिष्ट-योगशिक्षकाय नमः 430
ॐ समन्वित-योगगुरवे नमः
ॐ सांगोपांग-कर्मभक्तिज्ञानराजादि-
योगविदे नमः
ॐ स्वरयोग-प्रशिक्षकाय नमः
ॐ सूर्योपासनाप्रेरकाय नमः
ॐ संन्यासिमणये नमः
ॐ सुश्रवाय नमः
ॐ सर्वस्वत्यागिने नमः
ॐ सानन्दाय नमः
ॐ समग्रणीसंन्यासिने नमः
ॐ सर्वसंन्यासी-धुरीणाय नमः 440
ॐ सोमनाथादितीर्थेषु
दिव्यविग्रहोपासकाय नमः
ॐ सुन्दरत्र्यम्बकतीर्थे चातुर्मास-
सुसम्पन्नाय नमः
ॐ सुरम्यनीलपर्वते गोशाला-
निवासकृताय नमः
ॐ स्वगुरुजन्मदिवसे अजस्त्रजपाज्ञा-
प्राप्ताय नमः
ॐ सदाशिवज्योतिर्लिंग-
सतीचिताभूमिवासाय नमः
ॐ समाहर्निशदिवसे रिखिया-
पदार्पणाय नमः
ॐ सुश्लोक्य-परमहंसाय नमः
ॐ सर्वनिवृत्ताऽवधूताय नमः
ॐ सदैकान्तवास-प्रियाय नमः
ॐ सदामंत्रजपलीनाय नमः 450
ॐ सुश्रव-पंचाग्नितप-साद्योपान्त-
सुसम्पन्नाय नमः
ॐ संतप्त-सुवर्णदेहाय नमः
ॐ सुतेजसे नमः
ॐ सुतेजोमयाय नमः
ॐ सुशुभाष्टोत्तरशतलक्ष-
मंत्रपुरश्चराय नमः



ॐ साधनस्थले महाकाल-चिताधूनि-
स्थापकाय नमः
ॐ सम्पूर्ण-कल्याणकारी-
शतचण्डीयज्ञकराय नमः
ॐ सीताकल्याणमुत्सव-
परम्पराप्रवर्तकाय नमः
ॐ सीतावल्लभनामस्य आराधना-
संचालकाय नमः
ॐ सत्यभामावल्लभस्य झूलनोत्सव-
कारकाय नमः 460
ॐ सौमित्रिवत्सल-कथापारायण-
परंप्रियाय नमः
ॐ सुमंगल-राजसूययज्ञ-
सुसम्पन्नकराय नमः
ॐ सतीहृदय-संजाताय नमः
ॐ सतीहृदय-स्पन्दनाय नमः
ॐ सतीहृदय-निलयाय नमः
ॐ सतीहृदय-वस्तुताय नमः
ॐ स्थावरसुताऽऽराधकाय नमः
ॐ स्थाणुप्रिया-प्रियसुताय नमः
ॐ सीतापतीष्ट-देवाय नमः
ॐ सतीपति-सम्पूजकाय नमः 470
ॐ सुभद्रापूर्वज-प्रीताय नमः
ॐ सिद्धिविनायक-प्रियाय नमः
ॐ सिंधुकन्याऽमोघाशीष-
सम्प्राप्यसमृद्धिप्रदाय नमः
ॐ सुतपसे नमः
ॐ सुनेत्राय नमः
ॐ सुदाय नमः
ॐ सुद्रष्ट्रे नमः
ॐ सुधाकराय नमः
ॐ सुबान्धवाय नमः
ॐ सुमहौजाय नमः 480

ॐ स्वर्णकायाय नमः
ॐ सितमनसे नमः
ॐ सुन्दराय नमः
ॐ स्थिराय नमः
ॐ स्थितध्ये नमः
ॐ स्थितप्रज्ञाय नमः
ॐ सारमयाय नमः
ॐ सर्वप्रियाय नमः
ॐ सर्वकराय नमः
ॐ स्वयंज्योतये नमः 490
ॐ सर्वाय नमः
ॐ स्थायिने नमः
ॐ स्वस्तिदाय नमः
ॐ स्वस्तिकृते नमः
ॐ स्वस्तिने नमः
ॐ सात्त्विकाय नमः
ॐ सत्त्वाय नमः
ॐ सत्त्ववते नमः
ॐ सुगमाय नमः
ॐ सूक्ष्माय नमः 500
ॐ स्रग्विणे नमः
ॐ स्रष्ट्रे नमः
ॐ स्तव्याय नमः
ॐ स्थैर्यवते नमः
ॐ सिद्धिधराय नमः
ॐ सिद्धिकराय नमः
ॐ सिद्धि-सोपानोन्नायकाय नमः
ॐ सिद्धीश्वराय नमः
ॐ सिद्धेश्वराय नमः
ॐ सिद्धहस्ताय नमः 510
ॐ सिद्धिप्रदाय नमः
ॐ सदानन्दाय नमः
ॐ सदासुखिने नमः



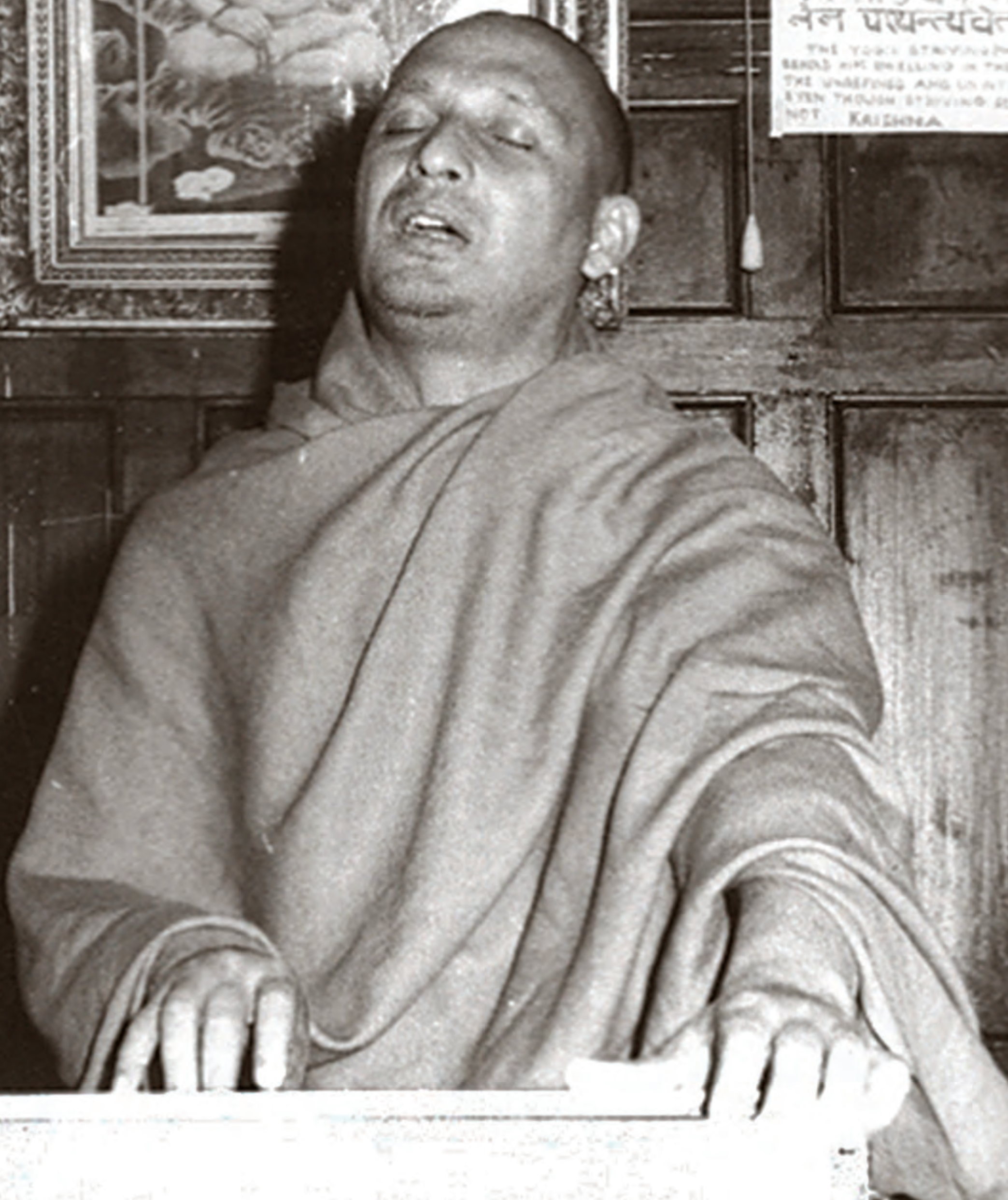
ॐ सदापर-हितरताय नमः
ॐ सदातुष्टाय नमः
ॐ सदातृप्ताय नमः
ॐ सदासेवा-तत्पराय नमः
ॐ सदास्मिताय नमः
ॐ सदाऽघोराय नमः
ॐ सदाशान्ताय नमः 520
ॐ सदामोदाय नमः
ॐ सदादयालवे नमः
ॐ सर्वदाकृपालवे नमः
ॐ सदाविभवे नमः
ॐ सदासत्संकल्प-युक्ताय नमः
ॐ सदाऽऽशीष-प्रदायकाय नमः
ॐ सर्वदा-कल्याणकराय नमः
ॐ सर्वदा-परोपकारिणे नमः
ॐ सातिशय-करुणार्द्राय नमः
ॐ सातिशय-प्रज्ञा-
युक्ताय नमः 530
ॐ सेवार्थ-रिखियापीठ-
संस्थापकाय नमः
ॐ सेवाप्रियाय नमः
ॐ सर्वथादोष-विहीनाय नमः
ॐ सर्वसंग-विवर्जिताय नमः
ॐ समस्तधर्म-मर्मज्ञाय नमः
ॐ समस्तकर्म-तत्त्वज्ञाय नमः
ॐ सहस्त्रार-कमलस्थाय नमः
ॐ सहस्त्रदलुत्फुल्लाय नमः
ॐ सर्वश्वास-मंत्रसिद्धाय नमः
ॐ सर्वश्वासेष्ट-स्मरणाय नमः 540
ॐ सीतापत्याराधकाय नमः
ॐ सतीपत्युपासकाय नमः
ॐ सगुणेश्वराय नमः
ॐ सगुणोपासना-प्रतिपादकाय नमः
ॐ सर्वेषां सुखसमृद्धिशांति-
संकल्पधारकाय नमः
ॐ सुप्रबुद्धाय नमः
ॐ सुसंयताय नमः
ॐ सुबन्धन-विमोचनाय नमः
ॐ सुन्दर-किरीटधराय नमः
ॐ सुचारु-मालाधराय नमः 550
ॐ सवीर्याय नमः
ॐ साश्चर्यमयाय नमः
ॐ सुयशाय नमः
ॐ सुमाल्यकाय नमः
ॐ सुपराक्रमाय नमः
ॐ सुज्योतये नमः
ॐ स्तवनीयाय नमः
ॐ सुबलाय नमः
ॐ सुप्रतिष्ठिताय नमः
ॐ सुदामने नमः 560
ॐ सुपरिपूजिताय नमः
ॐ सुवर्चसे नमः
ॐ सुमनोरमाय नमः
ॐ सुशरण्याय नमः
ॐ सुवर्चस्काय नमः
ॐ सुशरीराय नमः
ॐ सुसमृद्धाय नमः
ॐ सुमित्राय नमः
ॐ सुसमाहिताय नमः
ॐ समनिंदास्तुतये नमः 570
ॐ समाय नमः
ॐ समशीतोष्णाय नमः
ॐ स्वार्थहीनाय नमः
ॐ सेवालीनाय नमः
ॐ सर्वयोगक्षेमवहाय नमः
ॐ सदाप्रसन्न-वदनाय नमः



ॐ सदापरमानन्दिताय नमः
ॐ सदातुरीयप्रतिष्ठाय नमः
ॐ सदासमाधि-निमग्नाय नमः
ॐ सुदीप्ताय नमः 580
ॐ सुमानसाय नमः
ॐ सदासमाहितमनसे नमः
ॐ सामीप्य-सायुज्य-सालोक्य-
सारूप्य-मुक्तिदायकाय नमः
ॐ सुमहातेजसे नमः
ॐ सुमहते नमः
ॐ सुमहाबलाय नमः
ॐ सुरक्षाय नमः
ॐ स्वदेशप्रियाय नमः
ॐ स्वदेशसंस्कृति-परंरुचिराय नमः
ॐ सुसंस्कृति-संस्थापनाय नमः 590
ॐ सुसंस्कृति-संवर्धनाय नमः
ॐ सर्वहृदयाकर्षणाय नमः
ॐ सर्वहृदयसम्राजे नमः
ॐ सेवाप्रेमदानाऽदर्शाय नमः
ॐ सेवामार्ग-प्रदर्शकाय नमः
ॐ सेवायोगसंन्यास-त्रिविधपीठ-
स्थापकाय नमः
ॐ संगीतनृत्यसाहित्य-
संवर्धनसम्पोषणाय नमः
ॐ सहस्राधिकबटुककन्या-
पितृवत्पालनाय नमः
ॐ सुशुभकन्यापूजन-परम्परा-
संवर्धनाय नमः
ॐ सर्वस्त्री-जननीतुल्याय नमः 600
ॐ सर्वकन्याऽऽत्मजा-मन्याय नमः
ॐ स्त्रीसमाजोत्थानकराय नमः
ॐ स्त्रीसमाजोत्साहप्रदाय नमः
ॐ स्त्रीजागरण-प्रेरकाय नमः
ॐ स्त्रीस्वावलम्बन-लक्ष्याय नमः
ॐ सकलकर्म-निवृत्ताय नमः
ॐ सदासेवा-सम्प्रवृत्ताय नमः
ॐ समुत्फुल्ल-पद्माननाय नमः
ॐ सुहासाय नमः
ॐ सिद्धतापसाय नमः 610
ॐ साक्षिणे नमः
ॐ स्वामिने नमः
ॐ स्वामिभक्ताय नमः
ॐ स्वामिभक्तश्व-सेविताय नमः
ॐ सकलभक्तहृदय-
सूक्ष्मशल्यक्रियाकराय नमः
ॐ सप्तशती-पाठप्रियाय नमः
ॐ सुन्दरकाण्डातिरुचिराय नमः
ॐ स्वोजसे नमः
ॐ समग्रणीसिद्धाय नमः
ॐ समग्रयोग-संसिद्धाय नमः 620
ॐ सर्वसमृद्ध-राजर्षये नमः
ॐ सनकादिवत्ब्रह्मर्षये नमः
ॐ संन्यस्ताय नमः
ॐ सर्वसंन्यस्ताय नमः
ॐ संन्यस्तकर्तृभावाय नमः
ॐ संन्यासपीठे श्रीलक्ष्मीनारायण-
यज्ञप्रेरकाय नमः
ॐ स्वाधीनाय नमः
ॐ स्वतंत्राय नमः
ॐ सुज्ञाय नमः
ॐ स्वेच्छामृत्यवे नमः 630
ॐ समाधिस्थाय नमः
ॐ सम्प्रदीप्ताय नमः
ॐ सम्पुष्टिदाय नमः
ॐ सकलशिष्य-संस्मृताय नमः
ॐ सुपरिपूर्णाय नमः



ॐ सत्कर्मणे नमः
ॐ सत्पुरुषाय नमः
ॐ सत्संकल्पाय नमः
ॐ सत्तमाय नमः
ॐ सत्संगप्रियाय नमः 640
ॐ सत्त्वराशये नमः
ॐ सत्त्वगुणिने नमः
ॐ सत्त्वशालिने नमः
ॐ स्वावलम्बिने नमः
ॐ सत्त्वोदृक्ताय नमः
ॐ सत्त्वोत्साहाय नमः
ॐ सत्त्वशीलाय नमः
ॐ सत्त्वधाम्ने नमः
ॐ सत्त्वस्थाय नमः
ॐ सत्त्वसम्पन्नाय नमः 650
ॐ सत्त्वप्रधानाय नमः
ॐ सत्त्वात्मने नमः
ॐ सत्त्वसमाविष्टाय नमः
ॐ सत्वते नमः
ॐ सदाचार-परायणाय नमः
ॐ सद्ध्यायिने नमः
ॐ सदात्मने नमः
ॐ सते नमः
ॐ सदाशयाय नमः
ॐ सद्वत्सलाय नमः 660
ॐ सन्मतये नमः
ॐ सन्मार्गदर्शिने नमः
ॐ सम्परिपूर्णाय नमः
ॐ संशुद्धाय नमः
ॐ सर्वसंस्मृताय नमः
ॐ सुश्रुताय नमः
ॐ सम्प्रहृष्टमनसे नमः
ॐ सौम्याय नमः
ॐ सभ्याय नमः
ॐ सामगान-प्रियाय नमः 670
ॐ सर्वत्राय नमः
ॐ सर्वव्यापिने नमः
ॐ तस्मै नमः
ॐ सर्वेषां शुभचिन्तकाय नमः
ॐ सर्वगाय नमः
ॐ सर्वेश्वराय नमः
ॐ सर्वभूतात्मने नमः
ॐ सर्वविदे नमः
ॐ सर्वाभिज्ञाय नमः
ॐ सर्वधराय नमः 680
ॐ सर्वदाय नमः
ॐ सर्वविद्याविदे नमः
ॐ सर्वपाप-हराय नमः
ॐ सर्वकल्मष-विध्वंसकाय नमः
ॐ सर्वसिद्धि-विभूषिताय नमः
ॐ सर्वविभूति-सम्पन्नाय नमः
ॐ सर्वकामाय नमः
ॐ सर्वकाम्याय नमः
ॐ सर्वकराय नमः
ॐ सर्वकारणाय नमः 690
ॐ सर्वकर्त्रे नमः
ॐ सर्वकारिणे नमः
ॐ सर्वकृताय नमः
ॐ सर्वगतये नमः
ॐ सर्वसृष्टिपतये नमः
ॐ सर्वसुखसमृद्धि-दायकाय नमः
ॐ सर्वगामिने नमः
ॐ सर्वगुणिने नमः
ॐ सर्वचारिणे नमः
ॐ सर्वत्यागिने नमः 700
ॐ सर्वहृदय-निलयाय नमः



ॐ सर्वहृदय-शासकाय नमः
ॐ साधिदैवाय नमः
ॐ साधिभूताय नमः
ॐ साधियज्ञाय नमः
ॐ सामर्थ्यवते नमः
ॐ साक्षात्ब्रह्मणे नमः
ॐ साक्षाच्छिवाय नमः
ॐ साक्षान्नारायणाय नमः
ॐ स्थिताय नमः 710
ॐ सहस्रशीर्षाय नमः
ॐ सर्वात्मने नमः
ॐ सहस्राक्षाय नमः
ॐ सहस्रपादाय नमः
ॐ सर्वतोमुखाय नमः
ॐ सद्‌गतये नमः
ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः
ॐ सत्कृतये नमः
ॐ समस्तयतीनां श्रेष्ठाय नमः
ॐ सकलयोगिनां वराय नमः 720
ॐ सिद्धार्थाय नमः
ॐ सिद्धसंकल्पाय नमः
ॐ सिद्धिदाय नमः
ॐ सिद्धिसाधनाय नमः
ॐ सर्वदर्शिने नमः
ॐ सदामर्षिणे नमः
ॐ सर्वस्मै नमः
ॐ सर्वविज्जयिने नमः
ॐ सर्वाधाराय नमः
ॐ सर्वाकाराय नमः 730
ॐ सर्वतत्त्व-सूक्ष्मसाराय नमः
ॐ सत्कीर्तये नमः
ॐ सन्निधये नमः
ॐ सत्तायै नमः
ॐ सद्भूतये नमः
ॐ सत्परायणाय नमः
ॐ सकलार्तिहराय नमः
ॐ सद्यःप्रसन्नाय नमः
ॐ सद्यस्तुष्टाय नमः
ॐ सार्वगुणिकाय नमः 740
ॐ सारगाय नमः
ॐ सारदर्शिने नमः
ॐ सारग्राहिणे नमः
ॐ सकलशिष्याणां वराय नमः
ॐ समस्त-संसृतिगुरवे नमः
ॐ सुप्रतिष्ठाय नमः
ॐ सावधानाय नमः
ॐ सुतीर्थाय नमः
ॐ संगीतप्रियाय नमः
ॐ संसार-ध्वान्तसूर्याय नमः 750
ॐ संसार-तापसुधांशवे नमः
ॐ सूक्ष्मबुद्धये नमः
ॐ सूक्ष्मदर्शिने नमः
ॐ सूक्ष्मतत्त्व-विचारकाय नमः
ॐ सकलैश्वर्यप्रदात्रे नमः
ॐ सम्पूर्ण-कल्याणकराय नमः
ॐ स्तुताय नमः
ॐ स्तुत्याय नमः
ॐ स्तोतव्याय नमः
ॐ स्तुत्याशुप्रसन्नाय नमः 760
ॐ स्तुतिदाय नमः
ॐ स्तुतिवंदिताय नमः
ॐ सौभाग्यदाय नमः
ॐ स्फूर्तिमते नमः
ॐ साधनाम्बुजसूर्याय नमः
ॐ साधना-मार्गदर्शकाय नमः
ॐ साधना-मार्गमार्तण्डाय नमः



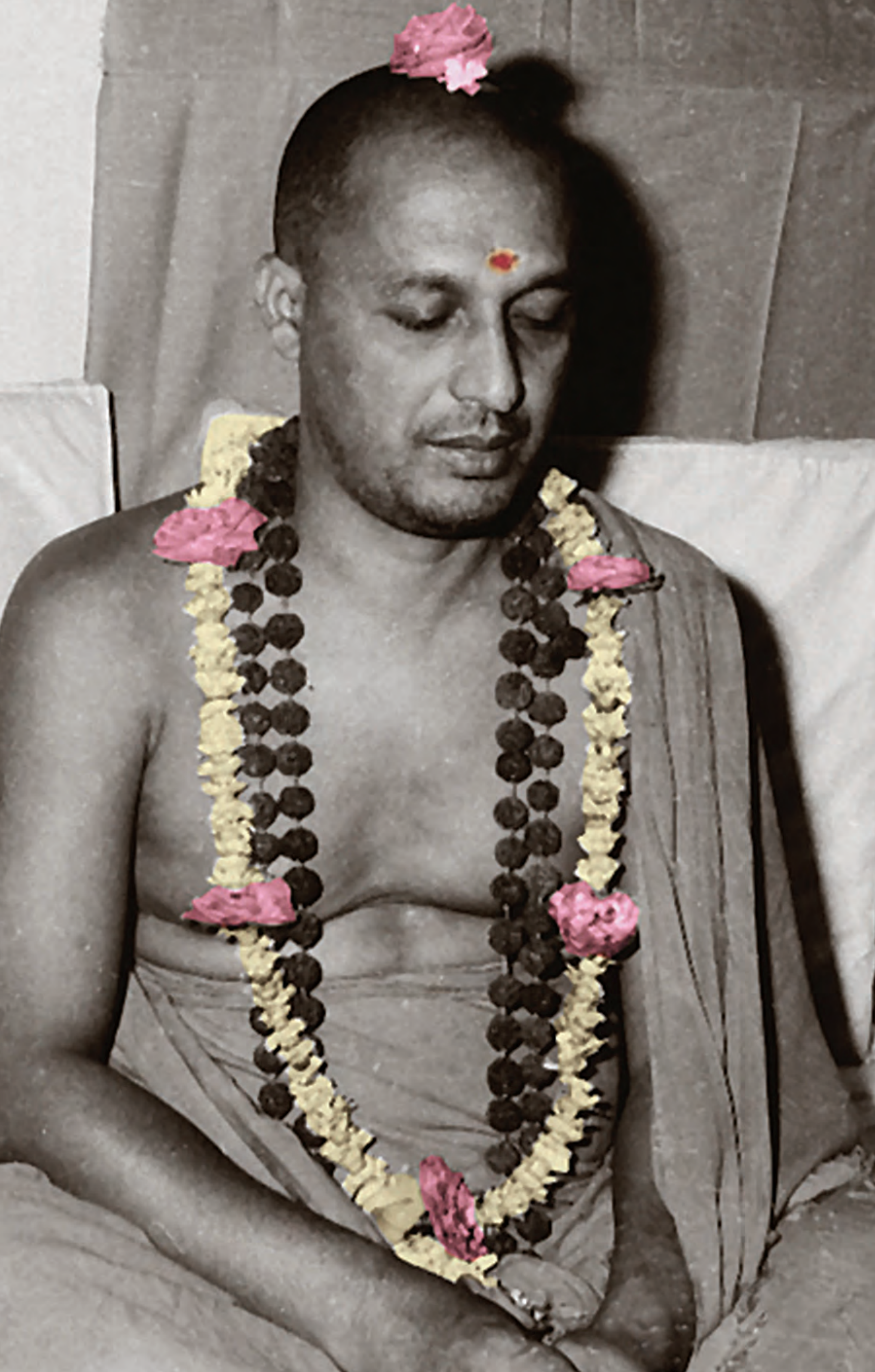
ॐ साधना-मार्गशशांकाय नमः
ॐ स्थिरमतये नमः
ॐ स्थिरचेतसे नमः 770
ॐ स्थिरधिये नमः
ॐ स्थिरस्थायिने नमः
ॐ साधुचरणाय नमः
ॐ सुश्लोकाय नमः
ॐ समस्त-शिष्यपूजिताय नमः
ॐ सर्वमंगल-मांगल्याय नमः
ॐ सुधर्मिष्ठाय नमः
ॐ सुशोभिताय नमः
ॐ सुमान्याय नमः
ॐ सम्माननीयाय नमः 780
ॐ समकराय नमः
ॐ सम्मानदाय नमः
ॐ सम्पूर्णाय नमः
ॐ सम्पूर्णसिद्धाय नमः
ॐ सम्पूर्णसोमाय नमः
ॐ सुयोगिने नमः
ॐ सम्पूर्णयोगिने नमः
ॐ सुधांशवे नमः
ॐ सम्पूर्णगुरवे नमः
ॐ सद्‌गुरवे नमः 790
ॐ सूर्यकोटि-समप्रभाय नमः
ॐ सोमकोटि-निभाननाय नमः
ॐ समुद्रकोटि-गम्भीराय नमः
ॐ समीरकोटि-महाबलाय नमः
ॐ सोमसूर्याग्नि-लोचनाय नमः
ॐ सोमसुधा-पानकराय नमः
ॐ सुविदाय नमः
ॐ सुमहासत्त्वाय नमः
ॐ संतशिरोमणये नमः
ॐ स्तुत्यर्हाय नमः 800
ॐ साम्बाय नमः
ॐ साम्बप्रियाय नमः
ॐ साम्बसदाशिव-प्रियभक्ताय नमः
ॐ स्मरहरार्चन-प्रियाय नमः
ॐ सदाशिवार्चन-रताय नमः
ॐ सदाशिव-कृपापात्राय नमः
ॐ सतीवल्लभ-पूजकाय नमः
ॐ सदाशिव-सहचराय नमः
ॐ सदाशिवलोक-वासाय नमः
ॐ सीतापत्यर्चन-प्रियाय नमः 810
ॐ सीतापूजन-प्रियाय नमः
ॐ सीताराम-ध्यानरताय नमः
ॐ सीताराममय-सर्वविदे नमः
ॐ सरस्वत्यर्चन-प्रियाय नमः
ॐ सरस्वती-सम्पूजकाय नमः
ॐ स्वर्णिम-वदनाय नमः
ॐ स्रग्वते नमः
ॐ सततयुक्ताय नमः
ॐ सुशुभाय नमः
ॐ सहचराय नमः 820
ॐ सहयोगिने नमः
ॐ सहयात्रिणे नमः
ॐ सहायकाय नमः
ॐ सुभद्राय नमः
ॐ सुमहातपसे नमः
ॐ सुमधुराय नमः
ॐ सहर्षिताय नमः
ॐ स्वस्वरूपानुसंधान-शीलाय नमः
ॐ सरलहृदयाय नमः
ॐ संहर्षिणे नमः 830
ॐ संहृष्टमनसे नमः
ॐ साह्लादाय नमः
ॐ सम्पूर्णानन्दाय नमः



ॐ सशक्ताय नम:
ॐ समर्थगुरवे नम:
ॐ सर्वसक्षम-सद्‌गुरवे नम:
ॐ समाधानशीलाय नम:
ॐ सर्वशिष्य-शंकासमाधानाय नम:
ॐ सम्परिपालकाय नम:
ॐ साराय नम: 840
ॐ सर्वविघ्न-विनाशकाय नम:
ॐ संकटहराय नम:
ॐ सुकृतिने नम:
ॐ सर्वसंकट-नाशकाय नम:
ॐ सफलाय नम:
ॐ सफलशिष्याय नम:
ॐ सफलता-प्रदायकाय नम:
ॐ सफलगुरवे नम:
ॐ सफल-संस्थानानां
प्रशासकाय नम:
ॐ स्वर्गपराय नम: 850
ॐ स्वर्गधराय नम:
ॐ स्वर्गस्थान-प्रदायकाय नम:
ॐ सिंहाय नम:
ॐ सिंहविक्रान्ताय नम:
ॐ सिंहनादिने नम:
ॐ सिंहगामिने नम:
ॐ सर्वेन्द्रिय-गुणाभासाय नम:
ॐ सर्वेन्द्रिय-विवर्जिताय नम:
ॐ सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकाराय नम:
ॐ संशुद्ध-सर्वकिल्बिषाय नम: 860
ॐ स्थिरमनसे नम:
ॐ स्थिरबुद्धये नम:
ॐ सर्वारम्भ-परित्यागिने नम:
ॐ सर्वभूतस्थिताय नम:
ॐ स्तोम्याय नम:
ॐ समचित्ताय नम:
ॐ सूक्ष्ममतये नम:
ॐ स्पृहाहीनाय नम:
ॐ सिद्धकामाय नम:
ॐ सर्वसंदेह-निर्मुक्ताय नम: 870
ॐ सुदुर्लभ-दानशीलाय नम:
ॐ सर्वसम्पदा-दायकाय नम:
ॐ संग्रहवृत्ति-निर्मुक्ताय नम:
ॐ समलोष्टाश्म-कांचनाय नम:
ॐ स्तोकाय नम:
ॐ स्थावर-संकल्पाय नम:
ॐ स्थावर-संकाशोन्नताय नम:
ॐ संसाराब्धि-समुद्धर्त्रे नम:
ॐ सदास्वाध्याय-निरताय नम:
ॐ सर्वसत्कार-कारकाय नम: 880
ॐ समस्त-लोकोद्धारकाय नम:
ॐ संशोभिताय नम:
ॐ सुविमलाय नम:
ॐ संसारचक्र-निर्मुक्ताय नम:
ॐ संसृतिबंधन-विमोचनाय नम:
ॐ सन्मार्ग-सुप्रदर्शकाय नम:
ॐ संसारक्रीडा-समासक्तजीव-
चित्तापहारकाय नम:
ॐ संसारवृक्षच्छेदन-सकलोपाय-
बोधकाय नम:
ॐ संसारसागर-सेतवे नम:
ॐ संसारार्णव-तारणाय नम: 890
ॐ संसारसिन्धु-शोषणाय नम:
ॐ सारसंपद-ज्ञापनाय नम:
ॐ सर्वोपनिषत्सारज्ञाय नम:
ॐ सर्वतंत्र-पारंगताय नम:
ॐ सर्वशास्त्र-परायणाय नम:
ॐ सर्वविद्या-विशारदाय नम:



ॐ सर्ववेदान्त-विदुषे नमः
ॐ सकलागम-पारगाय नमः
ॐ सर्वैश्वर्य-प्रदायकाय नमः
ॐ सर्वपाप-प्रशमनाय नमः 900
ॐ सर्वापद्-विनिवारकाय नमः
ॐ सर्वसंकट-मोचनाय नमः
ॐ समस्त-गुणसंग्रहाय नमः
ॐ समस्तैश्वर्य-संदोहाय नमः
ॐ समस्त-भक्तपूजिताय नमः
ॐ समस्त-साधकाराध्याय नमः
ॐ समस्त-पापसंहृताय नमः
ॐ सकल-दुःखतापघ्ने नमः
ॐ सुरवंद्याय नमः
ॐ सिद्धपूज्याय नमः 910
ॐ संताराध्याय नमः
ॐ साधूपास्याय नमः
ॐ सदाऽऽराध्याय नमः
ॐ सदाऽऽह्लादाय नमः
ॐ सदास्व-स्वरूपस्थाय नमः
ॐ सम्भृतस्नेहाय नमः
ॐ सुप्रभाय नमः
ॐ सम्भ्रान्तिहराय नमः
ॐ ससत्त्वाय नमः
ॐ संसारानल-संतप्तभक्तहृदय-
शीतलाय नमः 920
ॐ सम्मान्याय नमः
ॐ सुसम्मानिताय नमः
ॐ सम्मोदाय नमः
ॐ स्मितोज्ज्वलाय नमः
ॐ सम्यग्गुणाय नमः
ॐ सम्यग्गोप्त्रे नमः
ॐ सम्यग्दर्शनसम्पन्नाय नमः
ॐ सम्यग्व्यवसिताय नमः
ॐ सम्राजे नमः
ॐ सम्यग्विजयिने नमः 930
ॐ सुवाग्मिने नमः
ॐ सूत्रात्मने नमः
ॐ सूत्रधाराय नमः
ॐ सेतवे नमः
ॐ संस्थाय नमः
ॐ सरश्मये नमः
ॐ सद्बुद्धिदाय नमः
ॐ स्वल्पाहाराय नमः
ॐ स्वल्पसेवया तोषिताय नमः
ॐ साधुशीलाय नमः 940
ॐ साधुतमाय नमः
ॐ सहिष्णवे नमः
ॐ सुमहाव्रताय नमः
ॐ साधुजाताय नमः
ॐ साररूपाय नमः
ॐ स्वरूपज्ञाय नमः
ॐ स्वरूपस्थाय नमः
ॐ सन्निवासाय नमः
ॐ संरक्षकाय नमः
ॐ सविज्ञानाय नमः 950
ॐ सप्रभावाय नमः
ॐ सर्वरक्षिणे नमः
ॐ सर्वस्वामिने नमः
ॐ सम्यकाचार्याय नमः
ॐ सम्भक्ताय नमः
ॐ सर्वरूपाय नमः
ॐ सर्वनाथाय नमः
ॐ सर्ववासाय नमः
ॐ सार्वभौमाय नमः
ॐ सर्वप्रदाय नमः 960
ॐ सर्वप्रभवे नमः



ॐ सर्वपूर्णाय नमः
ॐ सर्वतेजसे नमः
ॐ सर्वश्रेष्ठाय नमः
ॐ सर्वहिताय नमः
ॐ सर्वादये नमः
ॐ सर्वसम्पन्नाय नमः
ॐ सर्वसंस्थाय नमः
ॐ सर्वाश्रयाय नमः
ॐ सर्वान्ताय नमः 970
ॐ सर्वार्थसिद्धाय नमः
ॐ सर्वविज्ञानाय नमः
ॐ सर्वेशाय नमः
ॐ सर्वलोक-महेश्वराय नमः
ॐ सर्वीयाय नमः
ॐ सर्वतोभद्राय नमः
ॐ सवित्रे नमः
ॐ सर्वलोकभृते नमः
ॐ संन्यासयोग-युक्तात्मने नमः
ॐ सदा-सम-दुःख-
सुखाय नमः 980
ॐ सर्गविसर्गप्रलय-सर्वरहस्य-
मर्मज्ञाय नमः
ॐ सप्तसप्ति-संकाशाय नमः
ॐ सारभूताय नमः
ॐ सुवीराय नमः
ॐ सर्वज्ञान-प्रकाशनाय नमः
ॐ सर्वलोकाकर्षणाय नमः
ॐ सकलगुण-संदोहाय नमः
ॐ सुमंगलाय नमः
ॐ स्वाशीषदाय नमः
ॐ सुरोपमदेदीप्यमते नमः 990
ॐ स्मरणीयाय नमः
ॐ सौजन्यवते नमः
ॐ सर्वविद्याम्बुज-सूर्याय नमः
ॐ सर्वदा-प्रकाशमते नमः
ॐ स्मरणमात्रेण सर्वसहायता-
प्रदायकाय नमः
ॐ सुषुप्तिस्वप्नजाग्रत-
मनोवस्थापारगाय नमः
ॐ सद्यःपुनरागमन-वचनबद्ध-
गुरुवराय नमः
ॐ सत्यशिवसुन्दर-मयाय नमः
ॐ समाख्याताय नमः
ॐ सर्वप्रियाय नमः 1000
ॐ स्थावर-जंगम-व्याप्ताय नमः
ॐ सर्वभूतान्तरात्मने नमः
ॐ सर्वजयी-चक्रवर्तिने नमः
ॐ सर्वत्यागि-सुसंन्यासिने नमः
ॐ सम्पूर्णकला-सम्पन्नाय नमः
ॐ साक्षात्पूर्ण-परब्रह्माय नमः
ॐ सुश्रेष्ठ-मानसपुत्राय नमः
ॐ सच्चिदानन्द-स्वरूपाय नमः 1008

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
हरिः ॐ ॥



श्रीमत्सत्यानन्द-चरितामृतम्

प्रथमोऽध्यायः

वंशपरिचयः बाल्यावस्था च

नमस्कृत्य गुरुदेवं संस्मृत्य च महेश्वरम्। नत्वा सरस्वतीदेवीं करोमि वृत्तलेखनम्॥
अस्ति हिमाद्रि उत्संगे गढवालः सुमण्डलम्। शोभामण्डितं सर्वं वनराजिसुपूरितम्॥
प्राक्तन चन्द्रवंशिनां राजभिः गौरवान्वितम्। नेपालशासकानां च वीरत्वेनाभिसिञ्चितम्॥
कूर्मांचलीय सत्तायाः वैष्णवी पावनस्थली। हिमशृंगस्य च कान्तेः सौन्दर्येन स्वलंकृता॥
हिमवतुच्च सानुषु क्षितिजपर्यन्तप्रेंखितैः। शाम्भवैः दारुगन्धाभिः इदं क्षेत्रं परिवृत्तम्॥
अल्पजलमयीनद्यः शिलाखण्डैः सुशोभिताः। प्रवहन्ति दिवारात्रं कुर्वन्त्यः सुकलध्वनिम्॥
चत्वारिंशत्ग्रामाणां अस्मिन्नेव सुमण्डले। भिकियासेनगाजस्य आसीद्भूस्वामी वैष्णवः॥
क्षत्रियस्य कुलोत्पन्नः सुशिक्षितो विचारवान्। जैमिनिशाखानुयायी तस्य पत्नी च तिब्बती॥
श्रीकृष्णचन्द्रनायालः तयोः पुत्रः चरित्रवान्। तस्य भार्या पतिप्राणा नेपाली युवती च सा॥
राजवंशावतन्सा सा जन्मतः रूढिवादिनी। किन्तु गाँधीप्रभावेनसाऽभवत् देशसेविका॥

अलमोडा नगरान्ते नायालखोली सुस्थले। आगत्य सपरिवारं वासः तत्रैव सोऽकरोत्॥
विदेशी शासनाधीनः पितारक्षी निरीक्षकः। गाँधीवादिनी माता च नकुलसर्प संगमः॥
यदा सान्दोलने काले करोति स्म विरोधनम्। पत्या कर्त्तव्यनिष्ठेन तस्याः निग्रहणं सदा॥
यदाज्ञानस्यग्लानिश्च अज्ञानस्यविवर्द्धनम्। विभुः कश्चित् तदा याति एतत् संसारलक्षणम्॥
पाद आदौ विंशशत्याः एतेन नियमेन च। एको हि महापुरुषः अवतीर्णः धरातले॥
पावने मार्गशीर्षमासे पूर्णिमायाः शुभे दिने। वर्षे त्रयोविंशत्यधिके ऊनविंशशततमे॥
महतीसुषमायुक्ते आढ्य नायाल सद्मनि। दिव्यः एकः शिशुः जातः सुलक्षणसुसज्जितः॥
विषमस्थितावस्मिन् अवर्द्धयत स शिशुः। बाल्यतः प्रतिभा तस्य आसीद्विस्मयकारिणी॥
हिमवतः ऋषिभूमौ व्याप्ता परमचेतना। प्रकाशिता तु तत्रत्या मनोहारिणी दृश्यया॥
अस्यक्षेत्रस्य शोभाश्रीः अतीवाह्लादकारिणी। अबोधशिशोः हृदये कलात्मकतामसृजत्॥

रौप्यां रात्रिं दिनं हैमं हिमाच्छादितपर्वतान्। मयूराणां नृत्तं दृष्ट्वा बालोऽयमपि नृत्तवान्॥
पर्वतस्याजिरे कुर्वन् बालसुलभं कौतुकम्। धर्मेन्द्रोऽपि परिवृत्य अभवत् रम्ययुवकः॥
अस्याः उपत्यकायास्तु ईदृशस्ति विशेषता। कणिका कणिका अस्याः ऋषिवाण्या वशीकृता॥
हिममण्डित शृंगेभ्यः गुप्त गुहाभ्यः आगतान्। शुद्धानिले प्रेषितान् संदेशाञ्च स अशृणोत्॥
पक्षिणां कूजनं चैव मृगाणां च मुखध्वनिम्। लतापादपकुंजानां सर्वेषां स्फुटान् स्वरान्॥
निर्झरनदीसरसां जलं चापि निरन्तरम्। अगुंजयन् च सर्वेहि धर्मेन्द्रस्य हि कर्णयोः॥



बाल्ये तु कल्पनाशीला अग्रजा तस्य संगिनी। द्वौ च सर्वाणि कर्माणि प्राय: मिथ: अकुरुताम्॥
द्वयो: योजनाभवत् सर्वेसन्तु निरामया:। तयो: आरोग्यशालायां सर्वेषां स्वागतं भवेत्॥
नि:शुल्का चिकित्सापि भोजनाच्छादनं तथा। बुभुक्षितो न कोऽपि च भविष्यन्ति ते नीरुजा:॥
सर्वेभ्य: निर्मिते ताभ्यां सर्वगम्ये सुमन्दिरे। कपाटा: न भविष्यन्ति कोऽपि यास्यति स्वेच्छया॥

गृहसमं च उद्धानं निर्माय हि सुपाचकै:। रन्धयित्वा सुपात्रेषु भोजयिष्याव: निर्धनान्॥
कल्पिताबाल्यकालेषु एता: हि परियोजना:। सर्वा: कार्यान्विता: सन्ति रिखियायां हि साम्प्रतम्॥
जातु विज्ञान वार्त्ता च जातु प्रकृतिलीनता। ईदृशी गहना जाता देहातीतश्च सोऽभवत्॥
कदाचित् गूढवार्त्तापि विचित्रापि च चेष्टितम्। क्रोधिते पितरि चैव भयहीन: स सर्वदा॥
अति बाल्ये इदं दृष्ट्वा रूढिग्रस्ता पितामही। चिन्ताग्रस्ताऽभवत् शीघ्रं कस्य माया इयं प्रभो॥
सा तथा तस्य माताऽपि भयग्रस्ते सशंकिते। मंत्रजापं कथावाचं कारितवन्तौ पुन: पुन:॥
पण्डितै: हवनयज्ञा: देवीपूजापि च कृता:। सर्वे इमे उपायाश्च सफलीभूता: नाभवन्॥
गाँधीसंगमपूर्वं तु मातासीत् रूढिवादिनी। अस्पृश्यभावनायुक्ता स्वयंभोजनपाचिका॥
गृहकार्ये अतिव्यस्ता नाशक्नोत् वत्सपालनम्। पुत्र-पुत्रीं प्रति पूर्णं वात्सल्यं कर्त्तुमक्षम:॥
केऽपि न तु गतवन्त: भोजनार्थं महानसे। दूरात् हि भोजनं प्राप्य सर्वे सन्तुष्टवन्त: हि॥

अनुशासी पितासीत् विरोधं प्रति असह:। 'शूटं करोमि' अवदत् सर्वदा शस्त्रधारी स:॥
विद्रोहीभाव धर्मेन्द्रे इमे स्यात् कारणभूता:। पित्रानुशासनं चैव निर्भयतामशिक्षत॥
प्राप्ते हि चतुर्वर्षे षड्वर्षाग्रजया सह। नैनीताले स आगत्य तत्रपठितुमवसत्॥
आसीदांग्ल-कान्वेन्ट: राजकीयविद्यालय:। तस्मिन्नेव प्रविष्टन्तौ भ्रातृभगिनीयुगपत्॥
तत्र राज्ञां चांग्लानां हि अपत्यानि सदापठन्। सर्वशिक्षांग्लभाषायां अभवन् अनिवार्यत:॥
छात्रावासे निवासोऽपि वार्त्तालापांग्लभाषायाम्। आचारशैली पाश्चात्या तत्रत्यासीत् विशेषता॥
गृहात् बहिरुषित्वा च स्वतन्त्रतर सोऽभवत्। प्रतापी तु स्वभावेन तत्रापि अग्रगण्याभवत्॥
अध्ययनेऽपि स तीव्र: सर्वप्रथम: सदाभवत्। नेतृत्वगुणसम्पन्न: अधिष्ठात्र्या: प्रियोऽभवत्॥
आंग्लबालका विद्वेषात् यदाऽकुर्वन् व्यतिक्रम:। तदा ताडितवान्सर्वान् भूत्वा नितरां निर्भय:॥
अवकाशे गृहागते एकदा मूर्च्छितोऽभवत्। चिकित्सकागता: शीघ्रं किंतु जाता: असफला:॥

अचिरेण सचेत: स किञ्चन भेषजं विना। सर्वे हि चकिता: आसन् दृष्ट्वा चमत्कारमिम्॥
एवं तु प्रायशोऽभवत् निदानं किन्तु नाभवत्। अभवन् वै महाभीता: पितरौ च पितामही॥
श्रीनित्यानन्द: संन्यासी एकदा तं हि दृष्टवान्। सोऽवदत् अयं बाल: साधक: पूर्व जन्मन:॥
चेतनोन्नतावस्थायां यदा बालक: गच्छति। देहज्ञानं जहाति स चिन्त्यं नास्ति हि किञ्चन॥
प्रणवं राममंत्रं च धर्मेन्द्रं हि स दत्तवान्। तत: प्रभृति: अद्यत्वे द्वौ इमौ तस्यहि प्रियौ॥
अनयो: मन्त्रजापेन पूर्वावस्थायामागत:। परिवारसदस्या: हि अभवनति हर्षिता:॥
आध्यात्मिकप्रभावेन पितरौ अपि प्रेरितौ। वयसिदशवर्षस्य आसीदतिविस्मापकम्॥



खेलने कूर्दने दक्ष: मृगयायाञ्च अग्रणी। अध्ययने अपि तीव्रश्च कवितासु पारंगत:॥
ज्ञानविज्ञानवक्तृत्वम् अन्या च सकला कला:। समस्ता एव विद्या हि तस्यरसनाग्रेऽभवत्॥
इयं प्रतिभां दृष्ट्वा सर्वेषां कथनमिदम्। अयं बालक: संसारे महान् व्यक्ति: भविष्यति॥

आध्यात्मिकता पुत्रस्य जनकं विकलीकृत:। शीघ्रं भ्रातृभगिनीं तु नैनीतालाताहूतवान्॥
पुन: हि अलमोडायां विद्यालये प्रावेशयत्। कवितालेखनं तत्र धर्मेन्द्र: आरब्धवान्॥
सरस्वत्यास्तु वाक्सिद्धिं कोकिलाया: मधुरताम्। शशांकात्तुकान्तिं प्राप्य उषस: प्राप्य तैजसम्॥
सर्वगुणपरिपूर्णा काव्यधारा प्रवाहिता। पल्लवोपनाम्ना चैव तथा प्रेम्योपनाम्ना॥
'निराला' 'हृदयहीन:' 'वही' नामभि: लिखिता। कविता शिखरासीना अभवत् लघुवयसि॥
'भारत' नामत: एका हस्तलिखिता पत्रिका। प्रकाशिता तेनाभवत् सर्वै: चैव प्रशंसिता॥
'अग्रगामी भारतं' च समित्रं सम्पादिता। द्वितीयापत्रिकापि च वैभवेन प्रकाशिता॥
सुमित्रानंदनपंतेन तस्य काव्यं समादृतम्। तस्य प्रेरित: धर्मेन्द्र: सुकविभ्य: अत्यारिच्यत्॥
आंग्ले च हिन्दीभाषायां संस्कृते तस्य योग्यता। दृष्ट्वा तु शिक्षका: सर्वे चकिता: अभवनति॥
रुचिं तस्य बाइबिले ज्ञात्वा ख्रिष्टशिक्षका:। भविष्यवाणीमकुर्वन् धर्माध्यक्ष: भविष्यति॥

सर्वधर्मविशेषज्ञ: सर्वधर्मसमन्वयी। धर्माध्यक्ष: स वै अस्ति कश्चिदत्र न संशय:॥
विद्यालये प्रदत्तां तु शिक्षां व्यर्था: प्रबोधयन्। गहने वने गत्वा स हिमश्रृंगान् हि दृष्टवान्॥
दर्शंदर्शं इमा: शोभा: अनुभूय च सूक्ष्मताम्। वयस्का: चकिता: जाता: दृष्ट्वा तस्य निमज्जनम्॥
हिमाद्रिं प्रतिगच्छन्त: साधवो हि तं अमिलन्। तेन सर्वे सदा पृष्टा: तैश्च स हि प्रबोधित:॥
प्राणायामं कतिपय: कश्चित् रामस्य चरितम्। तमुपदिष्टवान् तत्र कश्चित्तु मंत्रकार्मणम्॥
पठनं रामगाथाया: चिन्तनं तस्य प्रकृतिम्। दिनचर्या भवत्तस्य राम: इष्टश्च अभवत्॥
भूत्वा पुत्र: धनाढ्यस्य विलासी नाभवत् ईषत्। संन्यासी जन्मना भूत्वा एवं नासीत् संभव:॥
अधुनैव हि विदित: स संन्यासी भविष्यति। विश्वस्य हि अनुपम: विश्वास: सर्वेषामयम्॥ 78॥

द्वितीयोऽध्याय:

किशोरावस्था, प्रथमगुरो: आकस्मिक-दर्शनम्, गृहत्याग: च

एकदा हि बहिर्गच्छन् श्रुतं तेन अरे अरे। अरे मानवक शृणु तां दिशं प्रति दृष्टवान्॥
नातिदूरत: स्त्री एका महिषीवत् हि पृथुला। श्यामा च रात्रिवत् दृष्टा हस्तेन तं हि इंगिता॥
प्रथमत: तु धर्मेन्द्र: आश्चर्यचकितोऽभवत्। का नारी तु इयमस्ति यया आहूयते अहम्॥
एवं कट्वाश्रुतं तेन कदापि नैव वै श्रुतम्। क्रुद्धोऽपि किन्तु तस्याग्रे गत्वा उच्चै स पृष्टवान्॥
किं त्वं प्रलपसि एवं कर्कशस्वरेण मिश्रितम्। किमिच्छसि वद शीघ्रं सा तं प्रति अकथयत्॥
हट्टं गत्वानीय दुग्धं एकं हि कंसपूरितम्। सा आज्ञा ईदृशीकर्षा सशीघ्रं तत्र अगच्छत्॥
तत्परं सा सुखमन गिरि: नाम्ना हि तांत्रिकी। तस्याचार्याभवत् शीघ्रं किन्तु अतिगोपनीयत:॥



तामानीय स धर्मेन्द्रः पर्वतैकस्य गह्वरे। रक्षित्वा प्रतिरात्रं च तत्र तन्त्रविदभवत्॥
स्वविद्यायां पटुः कृत्वा धर्मेन्द्रं प्रति सावदत्। अन्याचार्यस्य शरणं गत्वा अधिकं जानीहि॥
तस्याः नाम्नि रिखियायां सुखमनमढी नाम्ना। स्मारिका विद्यमानाऽस्ति प्रथमाचार्याः स्मृतये॥

मन्त्रकार्मणे त्वपिश्च जातातस्य हि लालसा। नक्तं च श्मशाने गत्वा समित्रं अकरोत् क्रियाम्॥
इदं ज्ञात्वा पितावदत् 'शूटं करोमि वस्तुतः'। अतः तत्र दिनेगत्वा भस्मानि गृहमानयत्॥
निधाय पुष्पपात्रे च भवनोपरिकृत्य च। रात्रौ तत्र समित्रं स आरभत हि साधनाम्॥
अचिरं तत्भवनं हि स्तनितं च अकम्पत। नालास्त्रं च पितानीत्वा भवनोपरि आगतः॥
शीघ्रं निक्षिप्य भस्मानि कूर्दितौ भवनान्तरे। पूर्वं तु पिता कुपितः किन्तु पुनः स शान्तवान्॥
कर्मणः साधनायास्तु अन्तमभवत् पूर्णतः। ग्रामं गत्वा कदाचित्तु तत्रत्यैव अन्वभवत्॥
तत्रत्यारूढ्यनुसारः बाल्यकाले हि सत्वरम्। वाग्दत्ताभवत् कन्या एका नाम्ना सरस्वती॥
इदं ज्ञात्वा स धर्मेन्द्रः क्रुद्धोऽभवततीव हि। तस्योद्वाहप्रयत्नं यत् पितृभ्यां प्रबलीकृतम्॥
अश्वारोहणमाखेटः तथा संतसमागमः। काव्यलेखनमटनं तस्यासन् प्राथमिकता॥
अस्मिन् काले परिणयवार्त्ता आसीदसाम्प्रतम्। अतः जनकस्तस्य विचार्य अविलम्बयत्॥

वाराणस्यां तदागत्वा शारीरिकीं अधीत्य च। यदा गृहं प्रत्यागतः पिताहृष्टोऽचिन्तयत्॥
अधुनायं ममपुत्रः त्यक्त्वा संतसमागमम्। अत्र चिकित्सको भूत्वा गृहाधिपः भविष्यति॥
किन्तु विधिविधानं तु कः शक्तः परिवर्तितुम्। विना ज्ञापनं सहसा क्वापि अन्यत्र सोऽगच्छत्॥
अनन्तरमिदं गुह्यं ज्ञातं यत् मुक्तेश्वरे। अध्येति कीटविज्ञानं संस्थाने पशुशोधने॥
तस्य प्रियंवदाग्रजा विधियोगेन हि मृता। इदं हि मर्मभिद् वृत्तं तं घोरं अभ्यमर्दयत्॥
सा तस्य प्रेरणादात्री कार्येषु सहयोगिनी। वज्रवतागतामृतिः तमान्दोलितवानति॥
कवेः कोमले हृदये वात्याप्रहारवत्वृत्तम्। दिशान्तरं कृतं काव्यं सोऽभवत् सदन्वेषकः॥
अनेनासह्यवृत्तेन अनुभूय भंगुरताम्। जीवनस्य सतत्कालं विरतिं प्रति अगच्छत्॥
कीदृशी एव सत्तासौ सदा सत्या सनातनी। या शास्ति इमां सृष्टिं सर्वमिदं अन्वेष्टवान्॥
ईदृशीं विरतिं दृष्ट्वा पिता शीघ्रमचिन्तयेत्। कर्तुं परिणयबद्धः सोऽभवत् प्रयत्नवान्॥

धर्मेन्द्रः चिन्तितो जातः किं कर्त्तव्यं महाप्रभो। गार्हस्थ्यं स्वीकरोमि वा आत्मकामः भवानि वा॥
किं न ममाग्रजास्थाने वाग्दत्तैव हि मृता। इयं विचारधाराऽपि तस्य मनसि आगता॥
दैवतदुर्विपाकेन सत्यमभवत् विचार सः। वराकी वाग्दत्ता सा महानिद्रां तदागता॥
अनुजः बाल्यकाले हि स्वर्गद्वारं प्रावेशयत्। चिन्तनशीलः धर्मेन्द्रः अन्तर्मनसो भूतवान्॥
इमास्तु मृतयः तिस्रः पूर्वस्या वीतरागिता। ताः मिलित्वाभवन् शीघ्रं गृहत्यागस्य कारणम्॥
माता कारागृहे आसीत् पुत्रो न तत्र गतवान्। पिता हि व्याकुली भूत्वा प्राबोधत् बहुशब्दतः॥
नभे उड्डीयमानस्य खगस्य परिबन्धनम्। इव कठिनमभवत् दुष्करं तस्य रोधनम्॥



आयोः अष्टादशे वर्षे अन्ततः गृहमत्यजत्। गुरुं अन्वेषणार्थं स महानन्देन निर्गतः॥
मातृपित्रोः अनासक्तिः प्रकृतियस्य सादृशी। तस्य त्यागस्य गौरवं को समर्थोस्ति गायने॥
भूत्वाअतिधनाढ्यस्यरिक्थभागीहिएकलः। अत्यजत्तृणवत्सर्वंअल्पाःहिसन्तितत्समः॥

रामेण हि यथा त्यक्तं राज्यं भरतस्य कृते। तथा एव हि सत्येन त्यक्तं सर्वं जनहिते॥
अधुना अतिअल्पाय प्रायः हत्यापि भवति। किन्तु स कन्दुकमिव धनं पादेन क्षिप्तवान्॥
ज्ञायते घटनेनेयं सत्यस्य दृढप्रकृतिः। कीदृशी प्रबला आसीत् अल्पे वयसि एव हि॥
इयं हि दृढप्रकृतिः अग्रेऽपि तस्य जीवने। दृश्यते हि प्रति कार्ये प्रतिस्थित्यां प्रतिक्षणम्॥ 122॥

तृतीयोऽध्यायः

सद्गुरोः अन्वेषणम्

सुयोग्यगुरुप्रापणं दुष्करं अति श्रूयते। अस्मिन् कार्ये महाचेष्टा करणीया अपेक्षते॥
यथा मार्गयते शिष्यः गुरुं तथा गुरुरपि। अधिकाधिकप्रयत्नेन शिष्यं मार्गयति सदा॥
सत्यानन्दोऽपि तन्मार्गे कठिनतां अन्वभवत्। मोघं पर्यटनं कृत्वा कृतकार्यः अन्तेऽभवत्॥
यत्र-यत्र सोऽगच्छत् तत्रत्यगुरुरकथयत्। अल्पकाले करिष्ये त्वां प्रशंसनीयसाधकः॥
गतः स उदयपुरे यत्र सहोदराऽवसत्। तस्याः गुरुः अतिवृद्धः तांत्रिकः हठयोगी च॥
संस्थैका महती तस्य अल्पाश्च अन्तेवासिनः। स गुरुः सत्यमवदत् रिक्थभागी मम भव॥
नवमास हि पर्यन्तं कथञ्चित् तत्र तेन सह। ज्ञानं सैद्धान्तिकं प्राप्य मन्दिरं सत्यमत्यजत्॥
विनम्रः स गुरुरासीत् निष्ठावाञ्च पवित्रः च। सत्यमन्वाभवत् किन्तु तस्य योग्यः न स गुरुः॥
मम स्थाने उषित्वा त्वं कौपीनं मम मार्जय। भोजनं मम कारय मादिनीं सेवनं कुरु॥
एवं हि कथयनेकः सत्यमाहूय आश्रमे। प्रयत्नं बहु कृतवान् सत्यं किन्तु नामन्यत्॥

अन्यं मठं यदा गत्वा स गुरुमपृच्छत् तदा। कोष्ठे एके पिधाय तं अरुन्ध तत्र आदिनम्॥
द्वारशृंखलामुद्घाट्य रात्रौ ते तुष्टाः अभवन्। स पलायिष्यते कुत्र रात्रिकाले विशेषतः॥
निशीथे हि यदा सत्यं कोष्ठतः बहिरागतः। तदा तेन श्रुतः कश्चित् ध्वनिः अस्फुट आगच्छन्॥
कर्णौ दत्वा श्रुता तेन स्वस्य वधस्य योजना। अग्रे प्रातस्तरां देव्याः अतः स पलायितवान्॥
बरेली स्टेशने प्राप्ते अपृच्छत् वृद्धमेकं हि। सः अवदत् ऋषिकेशं गत्वा मार्गय स्वगुरुम्॥
तत्र गन्तुं यदा तेन रेलयानेन प्रस्थितः। तस्मिन्नेव प्रकोष्ठे हि संन्यासी एक मिलितः॥
तमाखुवर्त्तीं पिबन्तं दृष्ट्वा सोऽपि अयाचत्। तस्मै एकां प्रयच्छन् स कुत्र गच्छसि युवक॥
यात्रान्ते नीतवान् तं स कस्मिंचिद् आश्रमे ततः। विष्णुदेवानन्दाश्रमे आगतः तत्रवसितुम्॥
तस्य आगमनहेतुः ज्ञात्वा स विष्णुदेवः हि। शीघ्रं प्रेषितवान् सत्यं शिवानन्दस्य आश्रमे॥
आयोः विंशतमे वर्षे प्राप्तः हि तत्र आगतः। गुरुणा तु इयं भूमिः आविष्टासीत् तादृशी॥



आध्यात्मिक ऊर्जया च पूर्णासीत् अधिकतमा। पूर्णतया मनस्तस्य अवरुद्धमभवत् खलु॥
पराशान्तिमन्वाभवत् तार्किकता समाप्तवान्। गत्वा भजनशालायां श्रुतवान् एकं भजनम्॥
हरे रामा हरे रामा रामा रामा हरे हरे। श्रुत्वा अयं महामन्त्रं गतः स भग्नकुटीरे॥
यत्र स्वामिशिवानन्दः उपविष्टवान् आसने। सत्येन याचितं यदा शिष्यत्वं तस्य तत्क्षणम्॥
गुरुरवदत् निवस सेवां कुरुष्व सर्वेषाम्। कर्मयोगश्च सेवा च उभे स्तः तव साधना॥
यथाशक्ति इमे कुरु ज्योतिः आयास्यति स्वतः। तत्पश्चात्तस्य आश्रमे निवासः सत्यमारभत्॥ 148 ॥

चतुर्थोऽध्यायः

गुरोः आश्रमे निवासः

अल्पापि व्यग्रतानासीत् कदा आरभते गुरुः। योगशिक्षणमथवा तन्त्रशास्त्रस्य शिक्षणम्॥
योगसम्बन्धीविचारः कदापि तस्य मनसि। नागतः सर्वकालेषु कर्मयोगं स कृतवान्॥
जीवनं कठिनमासीत् शयनकाले प्रायशः। वृश्चिकाश्चापि सर्पाश्च आगतवन्तः आस्तरे॥
सघने वने आश्रमे व्याघ्राः अपि यदा-कदा। रात्रौ च आगतवन्तः मशकाः अदशन् तथा॥
प्रविश्य पाकशालायां नीतवन्तश्च रोटिकाः। यदा-कदा बलादपि दुष्टाश्च वानराः सदा॥
शताधिकफीटं गत्वा नीचैः पर्वतमार्गेण। घटेन जलमानीय आश्रमक्षेत्रक्षालनम्॥
अतिकष्टकरं कार्यं प्रतिदिनं अकुरुत। उपालम्भः कदापि न विनोदेन कृतं सदा॥
गुरोर्हीरकजयंती पूर्वं स गुरुं प्रार्थयत्। दिल्यां गत्वा समाचारपत्रस्य सम्पादनम्॥
कर्त्तुमहं तु गच्छामि गुरुणा स निवारितः। मुण्डनं च कारयित्वा संन्यासं तं हि दत्तवान्॥
अद्यपर्यन्त सत्यम् तु त्रिविधं सुप्रशंसितः। कर्मयोगी गुरुभक्तः राष्ट्रभाषा-प्रपोषकः॥

संन्यास दीक्षितोभूत्वा परिव्राजकजीवने। एक वर्षं हि पर्यन्तं रामाश्रमे उषितवान्॥
भिक्षावृत्तिं हि स्वीकृत्य सुरम्यवनखण्डेषु। सत्संगं कीर्त्तनं कुर्वन् सर्वत्र च अधीतवान्॥
गीता तु आत्मसादासीत् तथा हि उपनिषदः। अन्य शास्त्रविदासीत् स नास्ति अस्मिन् हि संशयः॥
अतः स गतवान् यत्र तत्रैव पूजितोऽभवत्। तस्य साधनाख्यातिश्च सर्वत्रैव हि व्याप्तवान्॥
अथानन्दकुटीरस्य कार्यक्षेत्राणि वर्द्धने। गुरुः सत्यम् हि तत्रैव निवसितुमादिष्टवान्॥
कुटीरं मार्जनं कृत्वा अनुवादे च टंकने। दिवारात्रं स संलग्नः अल्पकालीनशयितम्॥
बुद्धजयन्ती हि काले रामाश्रम-परिसरे। संस्थैकां स्थापनार्थं हि साधुसमागमोऽभवत्॥
संस्कृते भाषणं कर्त्तुं शिवानन्दस्य आज्ञया। सत्यस्य भाषितं श्रुत्वा सर्वे जाताः चमत्कृताः॥
करतलध्वनिपूर्णं साधु साधु ध्वनितरवम्। सर्वे हि आत्मविभोराः गद्गदस्वरेण भाषितम्॥
सार्वभौम साधुमण्डलं तत्रैव स्थापितम्। हिन्दीविभागस्याभवत् अध्यक्षः स मनोनीतः॥

आश्रमसचिवपदं अलंकृतो हि तत्परम्। तस्य कार्यैस्तु संतुष्टः गुरु हर्षितवानति॥
सचिवपदारूढः स सर्वैः सह सदाचरन्। कर्मकरणमर्चनं महावाक्यं हि आचरत्॥


966

मुद्रणशाला व्यवस्था दायित्वमपि तस्य हि। ग्रन्थानां च अनुवादः तथापि अकरोत् सदा॥
कार्यं कार्यं अनुवादं समाधिस्थसमोऽभवत्। रात्रिजागरो भूत्वापि शैथिल्यं च नान्वभवत्॥
श्रमस्य फलमभवत् तदनन्तरं जीवने। शिवानन्दस्य ग्रन्थानां सर्वोत्तमः प्रचारकः॥
अनुवाद कुर्वन् काले देहमपि विस्मृतवान्। निद्राविश्रामबुभुक्षा तस्य दासीवदाचरन्॥
अतः गुरोरपि चिन्ता तं प्रति अधिकाभवत्। सत्यस्य च अवेक्षणं प्रति जागरूकोऽभवत्॥
तस्य बलवती इच्छा आसीद्यत् मुख्यवाणीसु। शिवानन्दस्य ग्रन्थानां शीघ्रमनुवादो भवेत्॥
न केवलं प्रचारार्थं अस्मिन् वैज्ञानिके युगे। तेषां आवश्यकतास्ति अतः तत्करणं शुभम्॥
जातु गत्वा हि गंगायां शिलाखण्डे उपाविशत्। तत्र ध्यानरतो भूत्वा देहध्यानं विस्मृतवान्॥

कदाचित् गांगधारायां तरति स्म निरन्तरम्। अस्मिन्नेव च कालेऽपि गुरुजागरूकोऽभवत्॥
अनेकाः आंग्लपत्रिकाः प्रकाशिता हि तत्रतः। साह्यमकरोत् तासु तु मुद्रणेषु विशेषतः॥
प्रामुद्रशोधनकार्यं टंकनं लेखनं तथा। पुनः रात्रौ अनुवादः करोति स्म स सर्वदा॥
दाक्षिणात्याः अपि तत्र अतिष्ठन् बहुसंख्यकाः। तान् हिन्दीं शिक्षयित्वापि एकीकृतः स्वभावतः॥
योग-वेदान्त-आरण्य-विश्वविद्यालय-कृते। स तु पूर्णप्रयासेन अध्यवसायमकरोत्॥
तत्रमुद्रणशालायाः व्यवस्था यावद्भवत्। तावत्तु तेन तत्रैव वासोऽपि कृतः सर्वदा॥
इयं संस्थापि सत्यस्य कत्सवरेऽवलम्बिता। कर्म कुवन्नपि किन्तु अकर्त्ताभावः तस्य हि॥
जीवनस्य च धर्मस्य तस्य व्याख्या स्वचिन्तिता। पुष्पिता फलिता चैव अभ्यस्ता जीवने सदा॥
संसारं प्रति औदास्यं औत्सुक्यं जीवनं प्रति। संन्यासस्याशयः अस्ति ईदृशी तस्य भावना॥
कर्ममान्यं तथा मान्यं जीवनं हि प्रतिक्षणम्। प्राणदातां प्रति श्रद्धा अपि मान्या सदैव हि॥

अंगीकृत्य इमं भावं स्वजीवनं हि अजीवत्। उपादिशत् च सर्वत्र एषा हि जीवितव्यता॥
संतुष्याध्यात्मभावेन श्रुत्वा वचनगौरवम्। योग-वेदान्त-आरण्य-विश्वविद्यालयकृते॥
द्वाभ्यामाभ्यामुपाधिभ्यां गुरुणा स अलंकृतः। अध्यात्मरत्नमेकं तु प्रवचन-प्रवीणः च॥
तस्यायमनुभवोऽस्ति एष आध्यात्मिकः ध्वनिः। गुरुर्हि प्रथमं तत्त्वं द्वितीयस्तु शिष्यानुगः॥
तयोर्मध्ये यः संवादः गूढतमः स कथ्यते। यः शिष्यः परमशिष्यः स हि भवति सद्गुरुः॥
गुरुर्भवनं कठिनं शिष्यपदं अधिगुणं। शिष्यः यो गुरुर्वचनं पालयति प्रत्यक्षरम्॥
वस्त्रमार्जनं रोगिनां तेषां च पादमर्दनम्। निन्दकान्तु नमस्कारः एषापि आश्रमे कृतिः॥
करणेषु च एतेषु अहंग्रन्थिः विचूर्यते। सेवाभावाः च वर्द्धन्ते आनन्दोऽपि प्रजायते॥
एकदा आश्रमे तत्र कुष्ठरोग्येकः आनीतः। तत्सेवा कठिनासीत् क्रोधनः स स्वभावतः॥
सेवाकाले यदि काचित् क्रिया विपरीताऽभवत्। मुखे च ष्ठीवनं कृत्वा गालिमपि च दत्तवान्॥

सत्येन एकदा तस्य कुर्वता कूर्चमुण्डनम्। चर्मच्छेदोऽभवत्तस्य स जातः अत्युत्तेजितः॥
चपेटं प्रबलं दत्त्वा गालीनां सतत स्नुतिम्। कुर्वन् सः अवदत् सत्यं कथमानीतः मामिह॥
तथापि तस्य सेवायां काचन न न्यून्यभवत्। सत्यानन्दचिदानन्दौ यत्रवन्तौ अहर्निशम्॥



द्वित्रवर्षेषु रुजायाः मुक्तिरासीन्न संभवा। गुरुकृपया स रोगः द्विमासे निर्मूलोऽभवत्॥
समाप्ते रुजि स कुष्ठी सहसा हि लुप्तोऽभवत्। अधुनैव स अज्ञातः किमाश्चर्यमतः परम्॥
अर्द्धकुम्भे हरिद्वारे गन्तुं सत्यं हि इष्टवान्। गुरुः किन्त्ववदत् सत्यं एतत्संभव न दृश्यते॥
श्वस्त्य पूजाप्रसादस्य व्यवस्थापकः त्वमसि। स निशीथे हि उत्थाय सर्वकार्यं समाप्तवान्॥
तथा कृते स मेलायां हर्षान्वितः प्रविष्टवान्। जनाप्लावेन शीघ्रं हि उत्तरीयं अपासरत्॥
स्नानकाले अधोवस्त्रं केनचिद् पदमर्दितम्। तरंगेन जलावर्त्ते कुत्रचित्तु प्रवाहितम्॥
चीरहरणं द्रौपद्याः स्मृत्वा संकुचितोऽभवत्। फलं गुरोरवज्ञायाः मत्वा स अतिलज्जितः॥

येन केन प्रकारेण जलमग्नः दूरं गतः। बहिर्भूत्वा च धावन् हि वृक्षनीचैः उपाश्रयत्॥
भस्मराशिः सुदैवेन संचिताऽसीद् प्रचुरतः। विभूतिभूषितो भूत्वा ध्यानमग्नः इवाभवत्॥
नागासंन्यासी तं मत्वा तस्याग्रे शीघ्रमेव हि। पक्वान्नं धनराशिं च भक्ताः निधाय अगच्छन्॥
वस्त्रदानं न हि दृष्ट्वा व्याकुलः सोऽजायत। अस्मिन् संकटकाले हि दृष्टः एकः परिचितः॥
तेन प्राप्ते परिधाने आश्रमं प्रति आगतः। मुख्यद्वारे गुरुदेवं दृष्ट्वा साष्टांग प्राणमत्॥
'वस्त्रं देहि' गुरुरुवाच श्रुत्वाति लज्जितोऽभवत्। पादपंकजौ गृहीत्वा क्षमादानं अयाचत्॥
विहस्य गुरुः नावदत् किञ्चिदपि तथापि च। मनसि एव प्रतिज्ञातः अवज्ञा नहि कर्हिचित्॥
वर्षे पंचाशतधिकोनविंशतिशततमे। शिवानन्दः महाराजः भारतयात्रां अकरोत्॥
नवसंन्यासीयुक्तः स योगशिक्षां प्रसारितुम्। तेषां सत्यमपि आसीत् तस्य आशुलिपिकवत्॥
'शिवानन्द दिग्विजयः' नामकं एकपुस्तकम्। यात्रान्ते लिखितं तेन प्रशंसितं हि पूर्णतः॥

आर्यावर्ते कृतं सर्वं कर्मोदारं यथाक्रमम्। सुवर्णितं यथाभूतं कलापूर्णं च आदृतम्॥
ब्रह्मानन्देन स्वामिना कथितः वेदपञ्चमः। गुरुज्ञानस्य द्वारं हि उद्घाटयति सद्यतः॥
'चैतन्य ज्योतिः' नामकं पूर्वमपि स्वपुस्तकम्। लिखित्वा तेन सर्वे हि चकिताः विस्मिताः कृताः॥
पुस्तके ऊर्ध्ववर्णिते गुरुगीतामपि कथ्येते। यत् द्वयोर्गुरुशिष्ययोः सम्यक् सम्बन्धवर्णितः॥
यथा कृष्णार्जुनमध्ये बुद्धानन्दान्तरे यथा। शिवासत्यमपि मध्ये तादृशी संन्निकर्षता॥
प्रतन्तुं गुरुसंदेशं 'योगवेदान्त' मासिकीम्। प्रकाशयित्वोत्साहेन संसारमभिषिक्तवान्॥
मग्नः स गुरुगाने तु भूत्वा आत्मस्थः भूतवान्। सर्वप्रिया गुरुसेवा तस्मै आसीत् वरप्रदा॥
प्राचीन-ऋषिसंस्कृत्याः प्रेमी नास्ति हि केवलम्। संगीतज्ञः प्लवप्रियः अश्वारोही तथैव च॥
इथं सर्वप्रकारेण मतिप्रकर्षः उत्तमः। चमत्कारिणी प्रतिभा च नवोन्मेषशालिनी॥
बाल्यकाले हि या इच्छा हृदयदेशे सपल्लवा। गुरुप्रेरिता सा एव पुष्पिताफलिताऽभवत्॥

बाल्ये हि अलमोडायां येन सर्वे चमत्कृताः। सोऽधुना पूर्णविश्वानि स्वतेजसा प्रकाशते॥
ज्ञानकर्महठराजयोगेषु दक्षतार्जितः। तथापि कर्मयोगे हि तस्य अस्ति विशेषता॥
तस्य कथनमस्ति आत्मोद्धारस्य कारणम्। सुकरः कर्मयोगः यत् कर्ममयं हि जीवनम्॥
अश्रान्तोऽतः सद्वैवं हि निष्ठया ध्यानपूर्वकम्। कार्यरतः निरन्तरं विश्रान्ति तस्य कर्म हि॥

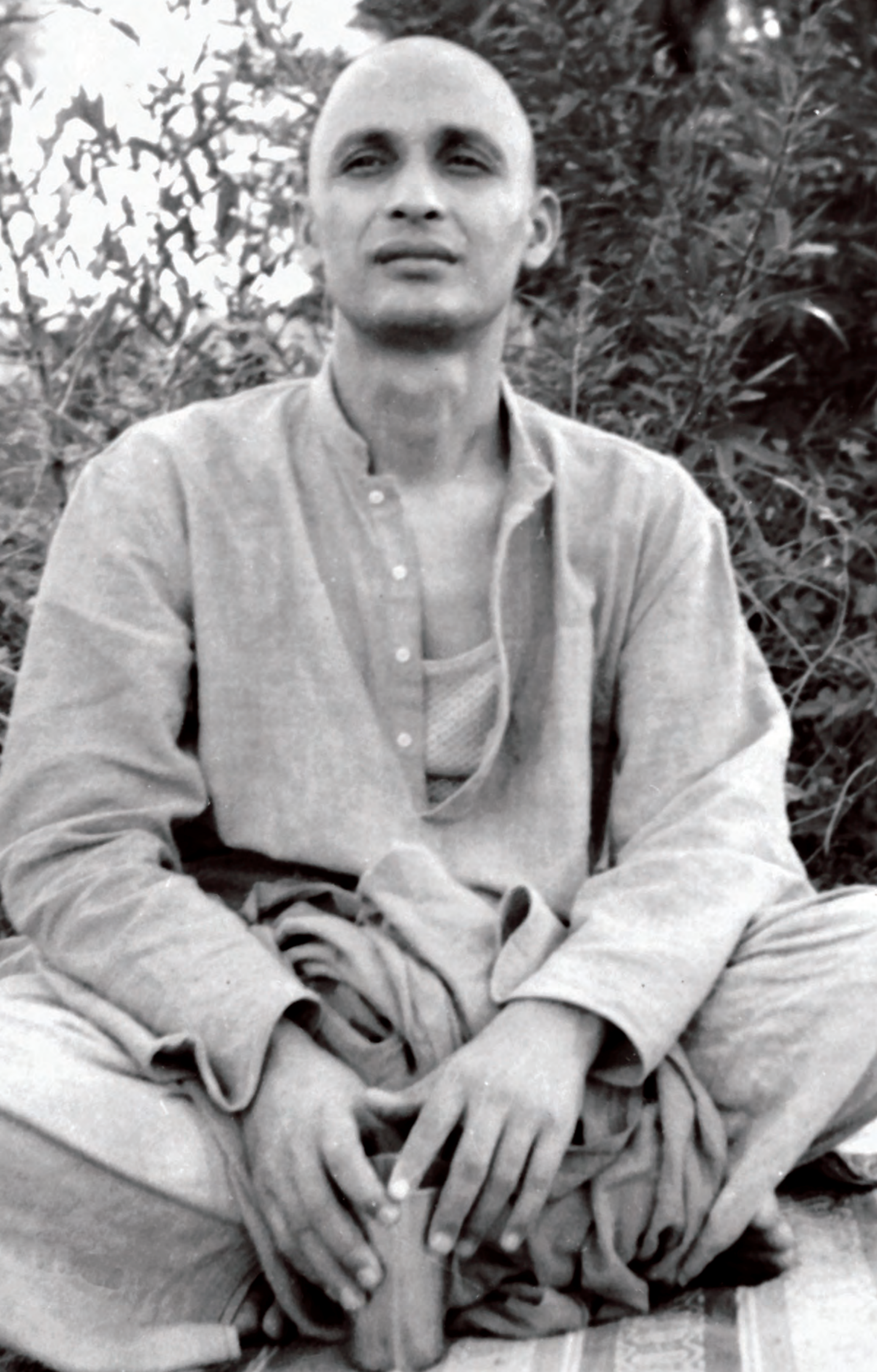


भारतस्य अधोगत्या: कारणं अन्वमन्यत्। लोकधर्मस्य ग्लानिश्च परमपरीणा अन्धता॥
अज्ञानं भौतिकतानां निस्साराणां च रूढीनाम्। प्रतिषेधो न यावत्तु उद्धारो न भविष्यति॥
धर्मेण तु मनुष्यस्य जातं आत्मानुशासनम्। ईदृक्षमानवः बाह्यां शक्तिं न समाश्रयति॥
स्वविकारं विनाशाय अन्तर्मुखी स भवति। सद्गुणं च तनोति स भवति जनसेवकः॥
एवं हि सुकृत्येन शनैः शनैः प्रवर्द्धते। परमां सिद्धिमाप्नोति अयं हि सहजविधिः॥
सहृदयता स्नेहश्च त्यागश्च दूरदर्शिता। सत्यमुदारता प्रेम बालसुलभमार्जवम्॥

विनम्रता च गाम्भीर्यं निष्कामकर्मनिष्ठता। एतैः गुणैः सुसम्पन्नः अनुकरणार्हः सोऽतः॥
आधुनिकार्त्तग्रस्तेभ्यो भ्रान्तिमद्भ्यश्च नरेभ्यः। सत्यानन्द इव देवस्य अपेक्षास्ति न संशयः॥
गुरोर्हि ज्ञानयज्ञस्य संचालकसहायकौ। भूत्वा स पूजितोऽभवत् विश्वस्य गगनांगने॥
गुरोरमृतवाण्याश्च स हि विश्वप्रचारकः। देशे देशे गृहे गृहे कोणे कोणे च सर्वतः॥
गुरोर्प्रत्येकाक्षरालेखः टंकनं मुद्रणं तथा। सर्व कार्यं च सम्पाद्य प्रचारोऽपि सकृतवान्॥
तस्याचला गुरुर्भक्त्या गुणाः तस्य द्विगुणिताः। सरस्वत्यपि जिह्वाग्रे उषित्वा तं प्राबोधयत्॥
आंग्लहिन्दी च भाषायां देववाण्यां तथापि च। तस्य प्रवचनं श्रुत्वा ज्ञायते तस्य विद्वत्ता॥
कोऽस्ति सांसारिकः अत्र यः तस्य अमृतोपमाम्। वाणीं श्रुत्वा न जातो हि अचिरेण आध्यात्मिकः॥
महासंशयग्रस्तोऽपि यदि आयात् सम्मुखम्। शंका तस्य तिरोभूता जाता श्रुत्वा वचोद्वयम्॥
व्यासदेवो गुरुरासीत् सत्यमासीत् गणेशः च। न वाण्यां रोधनमासीत् लेखने न च रुद्धता॥

स्रोतस्विनी च ज्ञानस्य एवमासीत् प्रवाहिता। ये अपि स्नातुमैच्छन्त स्नायुः तस्यां यथोचितम्॥
उद्धरणानां बाहुल्यं तस्य प्रवचने सदा। स्वामित्वं वेदशास्त्राणां अघोषयत् डिण्डिमः॥
कर्मण्येवाधिकारस्ते महामंत्रं स आचरत्। गुरोर्हि ज्ञानयज्ञस्य सुपूर्त्तिः तेन ईप्सिता॥
तस्याः हेतोः तु सर्वस्वं होमं कर्त्तुं स उद्यतः। एकस्यामेव रात्रौ हि एकग्रंथस्य मुद्रणम्॥
कर्त्तुं स गुरुणादिष्टः मनोयोगेन लग्नवान्। कार्यमसम्भवमस्ति तस्य कोषे न शब्दः सः॥
समाप्य यथा समयं अतिमर्त्यं स कृतवान्। 'मुद्रण-स्तम्भ'-पदेन गुरुणा स अलंकृतः॥
किन्तु अस्मात् पदादपि नूनं स प्रत्यारिच्यत। कर्मविनोदी स आसीत् तथा ज्ञानविनोद्यपि॥
हाटके सुरभिरासीत् सुगन्धे अति व्याप्तता। गुरुर्शिष्यपरस्परं आबद्धौ दृढतन्तुभिः॥
शिवानन्द-प्रतिध्वनिः सत्यम् कथ्यते सत्यतः। पुस्तकमुद्रणार्थं स लाहौरे एकदागतः॥
तत्र मुद्रणशालायां निवासः अपि अभवत्। हिन्दू-मुस्लिम-कलहः तत्र जातः अन्तरम्॥

कुत्रचिदपि न गत्वा पिहितस्थानेह्यतिष्ठत्। तत्रैव जपध्याने हि चायं पीत्वा व्यतीतवान्॥
सप्ताहान्ते यदा शान्तिः ऋषिकेशं स प्रेषितः। त्रिपञ्चाशत्तमे वर्षे विश्वधर्म-परिषदि॥
योगवेदान्त-पत्रस्य विशेषांकः प्रकाशितः। सम्पादनकलां तस्य दृष्ट्वाऽनेकेन घोषितम्॥
डिण्डिमः ब्रह्मविद्यायाः सत्येनैव हि वाद्यते। आगत्य शंकराचार्यः अवतीर्य पुनः कलौ॥
सत्यानन्दरूपे हि स करोति अद्भुद्क्रियाम्। तस्मिन वर्षे हि पाटनं नेत्रयज्ञे संप्रेषितः॥



व्यवस्था तस्य यज्ञस्य चिकित्सकेव सोऽकरोत्। एकीभूत्वा गुरुशिष्यौ ज्ञानयज्ञ-प्रवाहणे॥
जीवनस्य च सर्वस्वं दत्तवन्तौ हि आहुतिः। मतौ तस्याद्वैतवादः प्रेमवादः यथार्थतः॥
चराचरे समभावः इयं हि अस्य भावना। दिव्य-जीवन-समित्यां सम्पन्ने उदयपुरे॥
साधनायाः समारोहे तस्य प्रवचनमिदम्। सम्प्राप्तुं दिव्यजीवनं जीवनं परिवर्त्तताम्॥
दिव्यगुणान् हि प्राप्तेषु जीवनमस्ति सार्थकम्। अन्यथा पशुवत्प्राणान् गृहीत्वैव यः जीवति॥

मातुः उच्चारः स अस्ति व्यर्थं तस्य हि जीवितम्। तस्य प्रवचनं श्रुत्वा जाताः जनाः सुसंस्कृताः॥
तेषां जीवनधारा हि पूर्णतः परिवर्त्तिता। एकत्रिंशततमे वर्षे सत्यानन्दस्य जीवने॥
गुरोः तस्य प्रसादेन समारोहोऽभवत् महान्। पुण्यावसरे अस्मिन् ग्रन्थः एकः प्रकाशितः॥
सत्यस्य जीवनवृत्तं कृत्यश्च यत्र वर्णिताः। शिवानन्द महाभागः उक्तवानुक्त अवसरे॥
एतत्तुल्यं सुवैराग्यमल्पे वयसि एव च। दुर्लभं किन्तु सत्येन लब्धं तत्र न संशयः॥
नचिकेता हि तत्त्वेन सत्यानन्दः हि निर्मितः। सर्वकर्माणि सिद्ध्यन्ते तस्य हस्तेन पूर्णतः॥
चतुष्पुरुषवत् कार्यं स करोति स्वमेव हि। असन्तोषं तथापि न कदापि प्रकटयति॥
पूर्णतः प्रतिभान्वितः बहुभाषा-विशारदः। तथापि विनयशीलः ऋजुः निष्कामसेवकः॥
दिव्यजीवनसंघस्य आधारः अस्ति एव सः। ईश्वरः आशिषं दत्त्वा दीर्घजीवी करोतु तम्॥
वयं सर्वे तु इच्छन्ति अमरोभूत्वा जीवेत् सः। एवं हि साधुभिः सर्वैः तथा आश्रमवासिभिः॥

दत्ता स भद्रभावेन स्वकीयाः शुभकामना। स्वामिज्योतिर्मयानन्दः अलिखत् निम्नभाषितम्॥
यदानभश्चरीहोमा त्रिणि अण्डानि अददात्। तेषां शावकौ उर्ध्वं गतौ एकः अधः गतः॥
संशयः नास्ति अल्पिष्ठः सत्यानन्दः स अभवत्। तस्य काव्यस्य निम्नस्य श्लाघा अतिशयाऽभवत्॥
'अहमस्मि खगोलस्य उन्मुक्तः एक खेचरः। तथा धारा सुधायाश्च अजस्रा शाश्वतापि च॥
अहं सनातनः शान्तः हर्षोडुः दीप्तः एव च। विहरामि समोदं च ध्वस्ताकारा दुःखस्य च॥
विगतं क्रन्दनंकष्टं गता विरहवेदना। न सन्ति कण्टकाः मार्गे पथो हि पुष्पसज्जितः॥
आवासस्तु प्रियोऽस्ति मह्यं जंगममन्दिरे। इतस्ततः भ्रमनहं परितृप्तोऽस्मि पूर्णतः'॥
खृष्टे हि पञ्चपञ्चाशे वर्षे पूर्णे च द्वादशे। गुरुं स निवेदितवान् बहिर्गन्तुमिच्छाम्यहम्॥
विश्वे योगप्रसारार्थं भूत्वाहि परिव्राजकः। गुरुणा स निवारितः गुजराते च प्रेषितः॥
तत्र गत्वा गुरोर्शिक्षां विना क्लान्तिं हि प्रसृता। अभवन् हि गुरोर्शिष्याः कृतज्ञता च अर्पिता॥

षट्पञ्चाशे तु खृष्टाब्दे सत्यं दत्त्वा हि साधनां। क्रियायोगस्य होरार्द्धे गुरुः हर्षेण अब्रवीत्॥
'दिग्विजयी भव पुत्र संन्यासी त्वं अलंकुरु। गत्वा संसारमध्ये हि परिव्राजकवत् भ्रम॥
संसारस्य हि देशेषु जनाः रुग्णाश्च व्याकुलाः। तेभ्यः योगस्य संदेशं देहि प्रशिक्षणं तथा॥
अधुनावश्यकरणीयं योगस्य निष्कासनम्। कन्दरेभ्यस्तु शैलानां सर्वलोकहिताय वै॥
योगः आवश्यकोऽस्ति संन्यासिभ्यो न केवलम्। गृहस्थेभ्यस्तु योगः हि अमोघा परमौषधिः'॥
अष्टाधिक शतं रूप्यं उत्तरीयेन द्वे सह। सत्यानन्दः मठं त्यक्त्वा गुरुं नत्वा बहिर्गतः॥



तस्य निर्गमनं श्रुत्वा सर्वे च सहसाधका:। अतीव दुखिता: भूत्वा पृष्टवन्त: परस्परम्॥
गुरुरकथत् यूयं ब्रूत किमस्ति संभव:। अवरोध: समुद्रस्य गर्जनस्य तथैव च॥
सूर्यस्य मरीचीनां कौमुद्याश्च कलानिधे:। झंझावातस्य वर्षाया: ऋतुपरिवर्त्तनस्य च॥
संसारमुपकर्त्तुं हि सत्यानन्दस्तु निर्मित:। तस्यावरोधनमपि न शक्यं न तु संभवम्॥

आश्वस्त: पूर्णत: अस्मि योगविज्ञानसम्मतम्। कृत्वा स अखिले विश्वे नूनं प्रचारयिष्यति॥
भारतं हि पुन: सकृत् जगद्गुरु: भविष्यति। योगक्षेत्रे हि संसारे कश्चिदपि न संशय:॥
गते पाश्चात्यदेशेषु योगोऽपि वर्द्धिष्यते। सम्पन्ना: सन्ति देशास्ते यंत्रागारेण पूर्णत:॥
योगशास्त्रेषु शोधश्च सुकर: अस्ति तत्र हि। विज्ञानेन परिपुष्ट: परिष्कारो भविष्यति॥
दु:खीस्थाने सुखी भूत्वा हर्षोल्लासो हि कुरुत। तस्य इव च चेष्टध्वम् यूयमपि एकैकश:॥303॥

पञ्चमोऽध्याय:

परिव्राजकावस्था, देशविदेशभ्रमणम्, बिहारयोगविद्यालयस्य स्थापना, गुप्तप्रवास: च

अष्टवर्षाणि पर्यन्तं आगत्य गुरु आश्रमात्। अभ्रमत् भारते देशे अफगानिस्ताने तथा॥
नेपाले च श्रीलंकायां बर्मा देशे समन्विते। यत्रापि स गत: तत्र स्वागतं तस्य अभवत्॥
एवं पर्यटनं कृत्वा परिव्रजन काले स:। परिचितोऽभवत् शीघ्रं नानादेशस्य संस्कृते:॥
प्राप्ता: तेन तदवध्यां बहव: शुभावसरा:। योगिभिश्च तथा सद्भि: साकं समागमस्य वै॥
भूत्वा आध्यात्मज्ञानी च गुरुसेवापरायण:। नूतनन्नु: दशां ज्ञातुं तेन देशाटनं कृतम्॥
यात्रामध्ये यदाकदा मुंगेरे हि कृतं पदम्। अथ तत्रैव स्वलक्ष्यं तं स्पष्टमभवत् अत:॥
अस्मिन्नेव नगरे स उपगंगमुषितवान्। स्वस्य निर्धारितं लक्ष्यं निश्चितं तेन दृढत:॥
त्रयस्त्रिंशत्तमे वर्षे आयोरेकं आरब्धवान्। भारते मध्यप्रदेशे राजनाँदगाँवे वरम्॥
अन्तर्राष्ट्रीययोगस्य मित्रमण्डल नामिका। योग प्रचारिका संस्था अभवत् विश्वव्यापिना॥
तत्संस्थाया: प्रयत्नेन देशे एवं विदेशेषु। योगस्य हि सुविस्तार: अभवत् कल्पनातीत:॥

सदस्या: अभवन् अस्या: विश्वांगने सहस्रिण:। योगाश्रमास्तु स्थापिता: बहुत्र विदेशेष्वपि॥
योगस्य एकान्दोलनं द्वारे द्वारे तटे तटे। अभवत् विश्वविख्यातं अस्या: संस्थाया: हेतुना॥
धनाढ्यैक: मुंगेरस्य गोयनका महोदय:। आश्रमाय भूमिं दत्त्वा अभवत् सुप्रशंसित:॥
नाति दूरे हि गंगाया: सा भूमि अतिशोभते। योगविद्यालय: एक: स्थापित: तत्र अभवत्॥
नानादिग्देशादागत्य जना: शिक्षन्ति योगं वै। पश्चात् सोऽभवत् ख्यात: योगविश्वविद्यालय:॥
केन्द्रीकृत्य मुंगेरं हि योगप्रचार: अभवत्। योगस्य मानचित्रे हि बिहार: जगमगायते॥
इयं भूमि अपर्याप्ता सीमितासीत् निश्चितम्। अत: सत्यमचिन्तयत् अन्यत्र नेतुमाश्रमम्॥
पर्वतक: निकटस्थ: एक: आसीत् निर्जनम्। राजधानी पुरा आसीत् कर्णस्य स पुरातन:॥



कण्टकाकीर्णः आसीत् स कोऽपि तत्र न अगच्छत्। तमेव सत्यमचिनोत् आश्रमाय हि उचितः॥
अवस्करापसारणं कारयित्वा तद्स्थलम्। योगविद्यालयः अपि तत्रैव स्थानान्तरितः॥

भवनानि शनैः शनैः निर्मितानि हि बहूनि। वृक्षाणां रोपणं जातं युगपत् हि यथाक्रमम्॥
कतिपयकाल-व्यतीते पर्वतकः सुशोभितः। गृहैः वृक्षैः लतागुल्मैः परिणाहवद्भिः मार्गैः॥
भवनानां उच्चतमं शोभते गंगादर्शनम्। नामवत् सुन्दरमस्ति विशालं च अतीव हि॥
तादृशी कठिनाभूमिः कीदृशी सुषमामयी। भवितुं शक्नोति श्रमेण गत्वा पश्य हि आश्रमे॥
शोभन्ते आश्रमे छात्रावासाः बहवः विस्तृताः। येषु छात्राश्च साधकाः तिष्ठन्ति अधियन्ति च॥
आश्रमस्य परिसरे वर्त्तते ज्योतिमन्दिरम्। ध्यानकक्षः हि तदस्ति प्रशस्तं अति सुन्दरम्॥
प्रार्थना प्रवचनं च तत्र हि प्रायः भवति। तस्मिन् हि अमरा एका ज्योतिः ज्वलति अखण्डा॥
बहुभौमिकी अतिथिशालापि अत्र वर्त्तते। विशिष्टाः हि जनाः यस्यां तिष्ठन्ति सुखपूर्वकम॥
पार्श्वे गंगादर्शनस्य लौहफलकनिर्मिता। यज्ञशाला अपि एका शान्तकोणे हि स्थिता॥
द्विसप्ताहिक चर्यापि स्वास्थ्यरक्षा नामिका। अत्र संचालिता अस्ति रोगग्रस्तेभ्यः सर्वदा॥

गंगातटे हि स्थितं आनन्दभवनमेकम्। गोयनका प्रदत्तं तत् आश्रमस्य हि भागं तत्॥
अस्मिन् भागेऽपि बहवः संन्यासिनः तपस्विनः। निवसन्ति एकाकिनः कुर्वन्तः निजसाधनाम्॥
पूर्वे भागे मढी अस्ति तत्र गमनं वर्जितम्। श्रीनिरंजनानन्दैव तत्र एव तपस्यति॥
अयं हि आश्रमः अस्ति सत्यस्य दीप्तस्मारकः। कणिका कणिका यस्य पूरिता तस्य मेधया॥
श्रमबिन्दुविभूषिता तस्य पाण्डित्यमण्डिता। सत्यंपूता इयं भूमिः स्वर्गादपि गरीयसी॥
पूजा योग्या इयमस्ति साधनया सुगन्धिता। निवासः अत्रभाग्येन प्राप्यन्ते भाग्यशालिभिः॥
अंगीकृत्य गुरोराज्ञां सत्येन हि विदेशेषु। योगस्य हि प्रचारार्थं कृतः प्रवासः निम्नवत्॥

1968 तमे वर्षे

आस्ट्रेलियां गतः सत्यं मई मासे निमंत्रिते। मेलबोर्ननगरे हि गीता-योगविद्यालयम्॥
ततः न्यूसाउथवेल्स-विश्वविद्यालये नीतः। उभयोः स्थानयोः तेन सहस्रिनः हि श्रावकाः॥
विभिन्न-योग-विषये सम्बोधिताः उत्तरिताः। सर्वे चकिताः आसन् श्रुत्वा तस्य प्रवचनम॥
शंकासमाधानं कृत्वा संतुष्यतान् हि पूर्णतः। योगमार्गं दर्शयित्वा देशं प्रति स आगतः॥

1976 तमे वर्षे

पुनः अक्टूबरमासे आस्ट्रेलियां हि स गतः। सिडनीनगरं प्राप्य तत्र विमानपत्तने॥
प्रश्नानां उत्तरं दत्त्वा पत्रकार-सम्मेलने। योगविद्या-विद्वत्वेन आश्चर्यचकिताः कृताः॥
पुनः तत्र हि आकाशवाण्यां साक्षात्कारितः। शंसिताः प्रश्नकर्त्तृभिः श्रुत्वा तस्य सदुत्तरम्॥
तत्पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय-योग-सम्मेलने पुनः। चतुर्दिनानि पर्यन्तं सुप्रवचनवर्षया॥
श्रावकाः पूर्णतः सिक्ताः तस्य गुणगानं कृताः। विमानपत्तने पुनः सत्संगः तेन हि कृतः॥



1977तमे वर्षे

मईमासे बेल्जियमे एण्टवर्पं हि स गतः। ततश्च जुलाई मासे गौसफोर्डं पुनः गतः॥
उभयोः स्थानयोः तेन तंत्रे प्रवचनं कृतम्। शंकानिवारणं कृत्वा प्रश्नोत्तरंच दत्तवान्॥
उपस्थिताः जनाः सर्वे पूर्णसंतुष्टा अभवन्। भूत्वा शिष्याः स्थापितवन्तः योगकेन्द्राणि तत्र हि॥
साग्रहं पुनरागन्तुं सर्वे तं निमंत्रितवन्तः। धन्यवादान् हि तान् दत्त्वा स्वदेशं प्रति प्रस्थितः॥

1978तमे वर्षे

अस्मिन् वर्षे स गतवान् ग्रीसं आस्ट्रेलियां तथा। ग्रीसे एथेन्सनगरे तथा थेसालोनिकीम्॥
एपीमेलितेरियांच कालामाता हि नगरे। आस्ट्रेलियायां होबार्टं गौसफोर्डं मेलबोर्नम्॥
वागावागा च नगरं सर्वत्र जनसंकुलः। स्वागतार्थं एकत्रितः प्रतीक्षारतः व्याकुलः॥
श्रोतुं तस्य प्रवचनं कर्त्तुं च तस्य दर्शनम्। योगस्य विषयेषु च विद्वत्तापूर्णं भाषणम्॥
श्रुत्वा गद्गदो भूत्वा साधु साधु अघोषयत्। स्वप्रश्नान् उत्तरं श्रुत्वा जाता सर्वे हर्षजडाः॥
पुनरागमनाय तं कृतवन्तः निमंत्रितः। कृत्वा तत्र बहून् शिष्याः देशं प्रति आगतवान्॥

1979तमे वर्षे

सत्यमगच्छत् अस्मिन वर्षे स्पेनदेशं प्रति। प्रचारार्थं पुनः योगं स्वीटजरलैण्डमपि॥
स्पेने बारसिलोनायां कोलाबातों च गतवान्। स्वीटजरलैण्डे जिनालं सर्वत्र जनसंकुलः॥
द्रष्टुं श्रोतुं च सत्यं हि उपस्थितः वातुलवत्। तस्य प्रवचनं श्रुत्वा कृत्वा च तस्य दर्शनम्॥
कृतकृत्याः हि अभवन् सर्वे ये तत्र आगताः। तेषां बहवः अभवन् शिष्याः तस्य हि तत्क्षणम॥

1980तमे वर्षे

अस्मिन् वर्षे अपि सत्यं आस्ट्रेलियां पुनः गतः। तथा दक्षिणामेरिकां फ्रांसं स्पेनं च जर्मनीम्॥
स्वीडनं च कैनरीद्वीपं स्वीटजरलैण्डं तथा। फ्रांसे पेरिसनगरं तथा शामरांदपुरम्॥
अमेरिकायां बोगोतां मेदेयिनपुरं गतः। स्पेने बारसिलोनापुरं जर्मन्यांच फ्रैंकफर्टम्॥
स्वीडने स्टौकहोमं च आस्ट्रेलियायां तथैव च। मैंग्रोवपर्वतं स्वीटजरलैण्डे जिनालं च॥
गत्वा प्रवचनं दत्त्वा कृत्वा सर्वान् चमत्कृताः। सर्वेषां प्रश्नोत्तरं दत्त्वा संतुष्य च सहस्रिनः॥
कृत्वा बहून् शिष्याश्च योगकेन्द्राणि स्थापयन्। स्वदेशं प्रति आगत्य देशस्य कार्यमकरोत्॥

1981तमे वर्षे

अस्मिन् वर्षे स ग्रीसस्य इटल्याः फीनलैण्डस्य। यात्रां निमंत्रणं प्राप्य कृतवान् योगव्याप्तये॥
इटल्यां तोरिनोनगरं मिलानं मिनालों तथा। फिनलैण्डे हेलसिंकीं ग्रीसे च थेसालोनिकीम्॥
गत्वा योगविषयेषु भाषणं बहुकृतवान्। जनाः वातुलाः भूत्वा तं श्रोतुं बहुसंख्यकाः॥
एकत्रिताः च सर्वत्र प्रश्नानां वर्षां अकुर्वन्। तेषां च उत्तरं श्रुत्वा चकिताश्च चमत्कृताः॥
भूत्वा शिष्याश्च अभवन् प्रशंसितः अतीव हि। विरहीकृत्य सर्वाञ्च अन्ते स्वदेशमागतः॥



1982तमे वर्षे

उत्तरी-अमेरिकाया: देशानां भ्रमणमेव। अस्मिन् हि वर्षे अभवत् योगविस्तारकार्येषु॥
न्यूजर्स्यां एलिजाबेथं न्यूयार्कं मोनरोपुरम्। कोलाराडोप्रदेशे च डेनवरं बाउल्डरम्॥
वाशिंग्टनडीसीनगरं मिशीगने अनार्बरम्। कैलिफोर्नियायां देशे सानफ्रांसिस्कोपुरम्॥
लासएंजिल्स ओजाई सान्तामोनिकानगरम्। च सानहोसेनगरं तत: वर्जिनियादेशे॥
चारलौटेविलेपुरं क्रमश: स हि अगच्छत्। प्रतिस्थानं प्रवचनं वार्त्तालापश्च भाषणम्॥
तथा शंकासमाधानं प्रश्नोत्तरप्रदानं च। कृत्वा सर्वान् च संतुष्य स्वदेशं प्रति आगत:॥

1983तमे वर्षे

आस्ट्रेलिया महादेशत: प्राप्य सुनिमंत्रणम्। अस्मिन् वर्षे हि सत्येन यात्रा तत्रत्यैव कृता॥
अष्टादशदिनेभ्यस्तु गौसफोर्डे स न्यवसत्। पुनश्च एकदिनाय सिडनीनगरं गत:॥
नगरयो: हि उभयो: तेन संबोधिता: जना:। जयजयकार: कृता: श्रुत्वा तस्य प्रवचनम्॥
जिज्ञासाश्च समाधाय बहुविधसंतुष्य तान्। अति प्रशंसितो भूत्वा स्वदेशं प्रत्यागतवान्॥

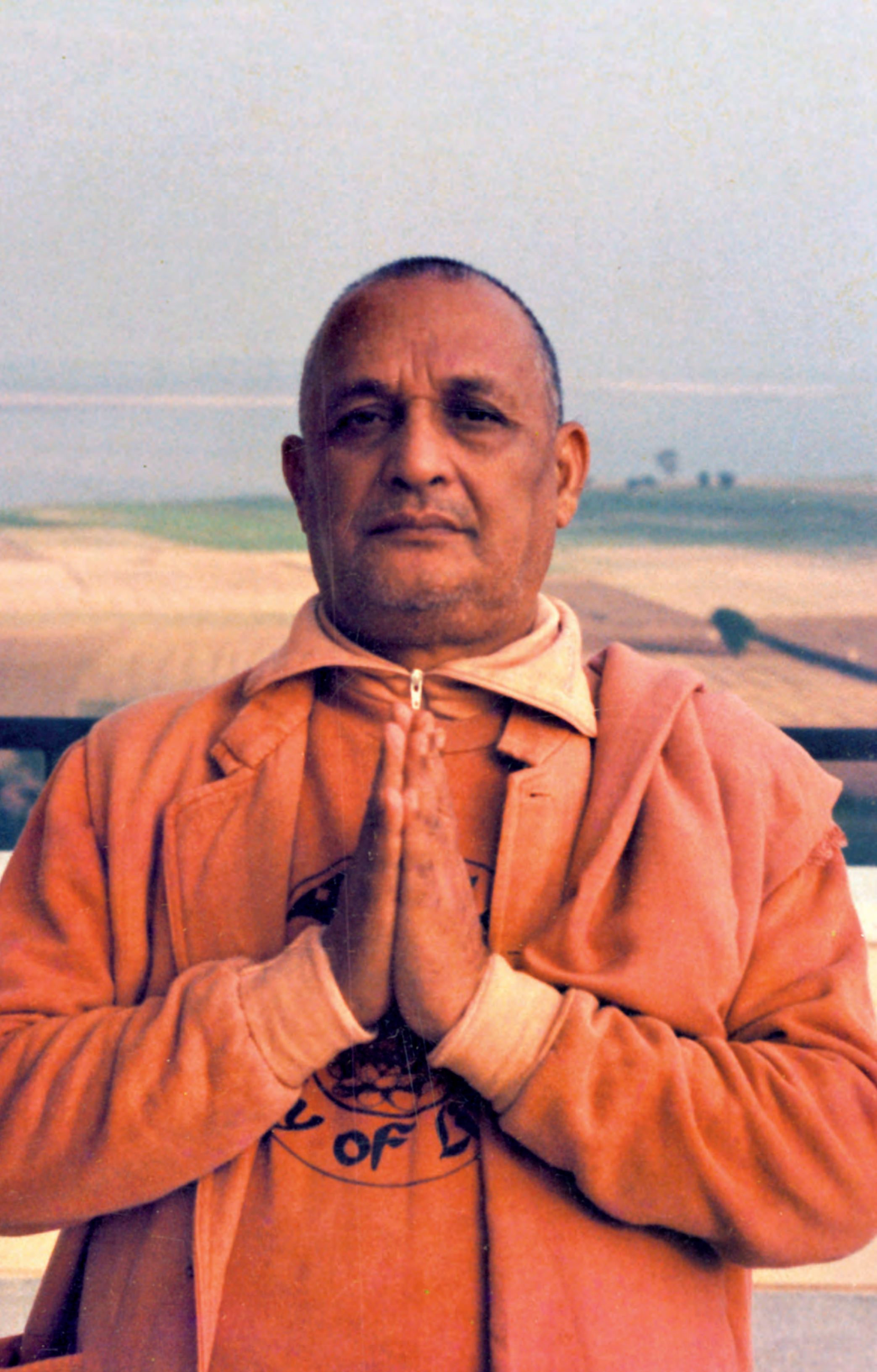
1984तमे वर्षे

अस्मिन् वर्षे अपि ग्रीसे ऑस्ट्रेलियायांच गत:। गौसफोर्डं कैरन्सं च रौकलिनं ब्रिसबेनम्॥
गोल्डकोस्टं लिलियनरौकं निमबिनं तथा। बेलिञ्जेनं न्यूकैसेलं औकलैण्डं पर्थं तारीम्॥
क्रीटं रौड्सं एथेन्सं च हेराक्लियोनं मितिलिनिं। कालामातां कातेरिनीं थेसालोनिकीं च तथा॥
एलेक्जेण्ड्रोपोलिसं गत्वा सम्बोधितवान् च। सहस्रिन: प्रवचनं श्रुत्वा च ध्यानपूर्वकम्॥
हर्षातिरेकेन मूकं भूत्वा आश्चर्यचकिता:। जयकारं कृतवन्त: बारम्बारं पुन: पुन:॥
तेषां प्रश्नानामुत्तरं दत्त्वा च चकिताकृता:। एतादृश: महायोगी तै: कुत्रापि न मिलित:॥

1985तमे वर्षे

अस्मिन् वर्षे ग्रीसदेशे पायनियापुरे स्थिते। सत्यानन्दाश्रमे स्थित्वा पंचदिनेभ्य: सततम्॥
कृत्वा गुरुपूर्णिमोत्सवं सत्संगं प्रवचनम्। आश्रमस्य च उद्देश्यं अबोधयत्तत्र्यां जनान्॥
योगविषयकवार्त्तां समाप्य अत्र आगत:। मुंगेरस्थित-संस्थानां कार्येषु लग्नोऽभवत्॥

उपरिवर्णिता: यात्रा: कुर्वन् मुंगेरनगरे। द्वे संस्थे स स्थापितवान् शिवानन्दमठं तथा॥
योगशोधसंस्थानं तु प्रथमां गुरु स्मृतये। चराचरसेवां कर्तुं मानवानां च दुखिनाम्॥
आपदाग्रस्तक्षेत्रेषु अन्नवस्त्रवितरणम्। भेषजस्य प्रदानं च छात्रवृत्तिं च दीयते॥
मुंगेर नगरस्य च बस-स्टैण्डं हि निर्मितम्। क्षेत्रसर्वेक्षणं कृत्वा पेयजलं प्रदीयते॥
चलन्त-अस्पतालेन प्रतिपक्षं हि भ्रमणम्। कृत्वा नरपशूनां च चिकित्सापि सदा भवेत्॥
उपाया: बहव: अपि भावियोजनान्तर्गता:। भविष्यन्ति क्रियान्विता: कालक्रमेण सत्वरम्॥
योगशोधसंस्थानन्तु शोधनार्थं हि निर्मितम्। वैज्ञानिक-उपायेन योगस्य सर्वपद्धतिम्॥



योगशास्त्रमतिप्रत्नं तं विज्ञानेन साधितुम्। अति आवश्यकं अस्ति अस्मिन् आधुनिकयुगे॥
योगस्य क्रिया: सर्वा: सुयंत्रै: सुप्रमाणिता:। भवन्ति अत्र नित्यं हि अत: सर्वेण गृहणीया:॥
आधुनिकापि रोगेषु योगस्य प्रभविष्णुताम्। परीक्षा भवति अत्र योगदक्षचिकित्सकै:॥

उच्चं षड्भूमिकमेकं एतस्मै भवनं कृतम्। यस्मिन् समृद्ध: एकोहि पुस्तकालयश्च स्थित:॥
यत्रलक्षाधिका: ग्रन्था: शोधाय हि उपस्थिता:। अन्येऽपि बहव: यन्त्रा: उपलब्धा: प्रचुरत:॥
निर्माणपूर्वं स्वप्ने हि गंगादर्शनभवनम्। दृष्टं सत्येन काले हि देशे पश्चात् आयतम्॥
एकैकस्य प्रकोष्ठस्य सोपानानां विवरणम्। दृष्टं स्पष्टत: तेन मानचित्रं तु पूर्णत:॥
यथादृष्टं तथैव हि रचना तस्य अभवत्। दूरादेव आभाति तत् ईशस्य हस्तनिर्मितम्॥
आदौ वाराणसीं गत्वा तत्रैव वासमारभत्। भिक्षापात्रं सदा नीत्वा मार्ग पार्श्वे उपाविशत्॥
दत्तवन्त: जना: किञ्चित् तेनैव येन केन वा। स्वीकृतनिर्धनत्वेन कालयापनमकरोत्॥
स्वारोपितनिर्धनत्वे आनन्दोऽस्ति महत्तम:। ईशदत्तं निर्धनत्वं सदा हि दु:खकारकम्॥
सौराष्ट्रे उर्वरकस्य यंत्रशाला अवर्त्तत। तत्र गत्वा अतिथि: स टाटाकम्पन्यरभवत्॥
एकदा वायुयानेन भ्रमणार्थं गत: तेन। आसीत् चालकपार्श्वे स वार्त्तापि काचिदभवत्॥

पूर्वं चालकेन सह सत्यमपि अशिक्षत। विमानस्य उड्डयनं एकस्मिन्नेव संस्थायाम्॥
अवदत् स विमानस्य चालनं कुरु स्वमेव। सहसा प्रेरणाऽभवत् विदेशगमनाय हि॥
तत: आगत्य मुम्बईं प्राप्य पासपोर्टं तथा। पंचदिनानि अन्तरे सिंगापुरं हि प्राप्तवान्॥
तथा आस्ट्रेलियां गत: फिलिपिंसं तत: गत:। तत: जापानदेशं तु तत: होनोलूलूं गत:॥
तत: अपि अमेरिकां लन्दनं फ्रांसं एव च। अन्ते ईरान देशं च शाही अतिथिरभवत्॥
परिव्रजनकाले तु मध्यप्रदेशे एकदा। सतनाया: हि समीपे रामवने स स्थितवान्॥
तत: 'मानसमणि' एका पत्रिकापि प्रकाशिता। तस्यां तस्य वक्तव्या: मुद्रिताश्च प्रशंसिता:॥
चतुर्मासे रायपुर करचुलियायामपि। साधनायै अतिष्ठत् स तत्रासीत् एकलुण्ठक:॥
चम्बलस्याऽभवत् शिष्य: प्रतिदिनं स आगत:। संज्ञाय आंग्लभाषी तं गुप्तचरं अमन्यत॥
पश्चात् साधक विज्ञाय स्वनिधिं प्रकटीकृत:। माँसमदिराभक्षी स अति प्रेमी स्वभावत:॥

यदा तस्य गृहे सत्यं भोक्तुं कदापि अगच्छत्। नियोज्य पाचक: एक: अपाचयत्तस्याशनम्॥
करचुलियाग्रामिण: सर्वे आसन् महाशया:। यदा सत्यं प्रतिगन्तुं उद्युक्त: ते अकथयन्॥
सत्यं स्वामिन् स्वीकुरुतां यावत् धनं तावदिच्छसि। किन्तु स तु स्वीकृतवान् बसभाटकमेव हि॥
प्रयागनगरं गन्तुं पर्याप्तं बसभाटकम्। अधर्मेण उपार्जितं धनं न हि स्वीकृतवान्॥
पुन: करचुलियायां निमंत्रित: हि स गत:। तत्र आवापनं कार्यं सरघापालनं तथा॥
अशिक्षयत् उद्योगान् सर्वे लाभकरा: अति। त्यक्त्वा विटिकानिर्माणं उद्योगं हि स्वीकृतवन्त:॥
केभ्यश्चन तु दिनेभ्य: गुप्तवास: कृत: तेन। केचिदपि न अजानन् कस्मिन् क्षेत्रे स अतिष्ठत्॥
एकान्तसेवनं कुर्वन् सदैव तेन चिन्तितम्। क्षेत्रसंन्यासकालेषु कुत्र हि वसनं वरम्॥



स्थानमन्वेषणं हेतु: गंगोत्रीं प्रति अगच्छत्। तत्र एकां गुहां चित्वा ऋषिकेशं आगतवान्॥
कोलाहलमयं ज्ञात्वा तत्रापि न उषितवान्। तत्पश्चात् गुरुशिखरं राजस्थाने स गतवान्॥

जलस्य विकटप्रश्न: तत्रासीत् अति त्रासद:। अत: तमपि त्यक्त्वा च स त्र्यम्बकेश्वरं गत:॥
तत्र लीन: यदा ध्याने धूर्जटे: अभवत् हि स:। तदा एका ध्वनि: श्रुत: चिताभूमौ हि गच्छ त्वम्॥
ध्याने च चिताभूम्या: क्षेत्रमपि स दृष्टवान्। तस्य सुवर्णनं श्रुत्वा अन्वेष्टुं तां शुभस्थलीम्॥
तत्क्षणे सचिवा तस्य तस्मिन् क्षेत्रे हि प्रस्थिता। तत्क्षेत्रे अटन्त्या तया दृष्टा सा पावनस्थली॥
अतिशीघ्रं स्थलीं क्रीत्वा सत्यानन्द: हि सूचित:। तत्पश्चात् हि सत्येन चिता सा निजवसति:॥
एकदा सीतामढ्यां हि कायस्थगृहे अतिष्ठत्। तस्य गृहस्य या माता सा आसीत् रूढिवादिनी॥
रजकेन प्रक्षालितं वस्त्रं च क्रीतं ईंधनम्। प्रक्षाल्य हि प्रयुक्तवान् शुद्धिं कर्त्तुं दृष्टया॥
पृष्टा तेन सिता अपि कथं तया न शोधिता। ईदृशी मूढता प्राय: अभवतत्र बहुदिनात्॥441॥

षष्ठोऽध्याय:

रिखियायां क्षेत्रसंन्यासकाल:

देवघरमण्डलोऽस्ति झारखण्डे अवस्थित:। एतस्मिन् रिखिया ग्रामे वसन्ति आदिवासिन:॥
अत्यविकसितग्रामे वृत्तिहीनाश्च निर्धना:। शत-प्रतिशतमासन् निरुपाया: निरुद्यमा:॥
किंवदन्तीदृशा अस्ति शिवोऽपि अत्र आगता:। यदा दक्षमखात् क्रुद्ध: सत्या: शवं स ऊढवान्॥
कानिचिद् शवखण्डानि पतितानि इतस्तत:। किन्तु वक्षस्थलस्वस्या: तस्य स्कन्धे हि स्थित:॥
वक्षखण्डस्य संस्कार: अस्मिन् क्षेत्रे हि कारित:। अत: एव इदं क्षेत्रं चिताभूमिश्च कथ्यते॥
आविष्टाऽस्ति इयं भूमि: महेश्वरस्य शक्तिभि:। अत: एव तपस्यायै उत्तमस्थानं मन्यते॥
पूर्वमेव सचिवया स्वामिने या स्थली क्रीता। अस्मिन्नेव हि ग्रामे सा चिताभूमि: अवस्थिता॥
समाप्य भ्रमणवृत्तिं स्थातुं च तदनन्तरम्। यथा शिवेन आदिष्ट: अत्रैव सत्यमागत:॥
क्षेत्रसंन्यासबेलायां अत्र वासो हि उत्तम:। एवं मत्वा स अत्रैव निवसनमारब्धवान्॥
तत्रत्य ग्रामवासिभ्य: वसनं तत्र भवत:। तेषामुद्धारमार्गं हि कृतमतीव सुकरम्॥

तस्य क्षेत्रस्य ग्रामीणा: आसनति भाग्यशालिन:। अनायासमवतीर्ण: तेषामुद्धारक: स्वयम्॥
तत्समं मानवं प्राप्य ऋषितुल्यं सहृदयम्। नर्यनृत्यन् स्वभावत: सरला: आदिवासिन:॥
अकथयन् महाभाग वयं सर्वे उपकृता:। यदा लग्ना: भविष्याम: कैंकर्ये च आराधने॥
नि:संकोचो भवान् भूत्वा अस्मानादिशतु सदा। आज्ञापालने भवत: आनन्दं प्राप्नुम: वयम्॥
तेषां वर्तनं दृष्ट्वा सत्यानन्दोऽपि अभवत्। अति तुष्ट: प्रसन्नश्च आशिषं सर्वमददात्॥
योगशिक्षां परित्यज्य सेवां भक्तिं च केवलम्। स्वीकृत्यैते अहोरात्रं अनयो: एव मग्न स:॥
विभो: दासस्यदासोऽहं तेन उक्तं पुन: पुन:। अत: मानवसेवायां व्यतीतं शेषजीवनम्॥
मह्यं या सुविधा दत्ता अनायासेन भगवता। दातुमिच्छामि सर्वेभ्य: सैव सुविधा शाश्वतम्॥



रिखियामभित: ग्रामा: सेवाक्षेत्राणि तस्य हि। तेषां सर्वेक्षणं कृत्वा सेवाकार्यं स आरभत्॥
ग्रामीणा: निर्धना: आसन् गृहहीनाश्चप्रायश:। जीविकाहीनाश्च सर्वे हि भूमिहीना: तथैव च॥

अल्पाभूमि: यदि आसीत् कस्यचिद् निर्धनस्य वै। जाता सर्वथा व्यर्था कृषिकार्यं जलं विना॥
एकेन आढ्यशिष्येन दत्तेन ट्रैक्टरेण स:। अहालयत् कृषिभूमिं क्षेत्रे सर्वा: हि स्थिता:॥
विद्युत्-नलकूपेन आरभत् क्षेत्रसिञ्चनम्। फलत: अचिरं भूमि: जाता शस्य समन्विता॥
गृहान् गृहविहीनेभ्य: धेनूश्च विधवास्त्रियै। व्यवसायान्तु सर्वेभ्य: दत्त्वा सर्वानुपाकरोत्॥
वासिभ्य: कल्पनातीतान् पक्वान्गृहान् सदत्तवान्। येषु विविधा: कोष्ठा: आसन् शौचालयश्चतथा॥
एकस्तु स्वपितुमस्ति द्वितीय: पशूनां कृते। तृतीय: भोजनं पक्तुं चतुर्थं धान्यकोष्ठक:॥
केभ्यश्चित्तु नरयानं केभ्यश्चित् हस्तशकटान्। टेम्पोदानं तु अल्पाय सर्वेभ्यस्त्वमेवं कृतम्॥
वस्त्रताम्बूलपण्यं तु अन्नपण्यं तथैव च। आयोजितं कतिपयेभ्य: वृत्तिहीना: न केचन॥
सर्वाभ्य: बालिकाभ्यश्च पाठशाला व्यवस्थिता। आश्रमस्य परिसरे संन्यासिन्य: हि शिक्षिका:॥
ग्रामे दूरस्थे या बाला पठनाय हि अगच्छत्। तस्या: सुविधाहेतु: द्विचक्रिकां स दत्तवान्॥

कन्या: नवपरिणीता: तत्राभवन् निमंत्रिता:। सर्वा: ता: हि प्राप्तवत्य: एका एका सुपेटिका॥
या: सर्वा: शोभिता: आसन् वस्त्राभूषणसज्जिता:। शृंगारसाधनयुक्ता: सर्वथा परिपूरिता:॥
वृद्धस्त्रीपुरुषाञ्च आहूय तत्र आश्रमे। आदिनं भजनं जापं कारितवान् स सर्वदा॥
सायंकाले तु सर्वेभ्य: सादरं तां प्रणम्य च। जीवन-निर्वहणमर्थं सम्यक् राशिं प्रदत्तवान्॥
वर्षान्ते आयोजिते यज्ञे सीताकल्याणं नामके। सत्यानन्द: पिता भूत्वा युवतीश्चाविवाहयत्॥
प्रवचनं सदाऽभवत् श्रद्धाभक्तिसमन्वितम्। श्रोतार: अभवन् मुग्धा: भारतीया: विदेशीया:॥
चिकित्सासदनमेकं स्थापितं जनहिताय हि। सर्वे हि तत्र आगत्य प्राप्ता: नि:शुल्का औषधि:॥
तत्र चिकित्सका: आसन् नृपशूनामपि सदा। येन सर्वे मनुष्याश्च पशव: उपचारिता:॥
पुराणी नूतनानि च वस्त्राणि संचितानि च। दत्तानि च दरिद्रेभ्य: प्रतिवर्षं प्रतिगृहम्॥
आसन्ने प्रसवे काले सगर्भा: महिला: सदा। प्रेषयितुं चिकित्सायै मोटरं हि व्यवस्थितम्॥

सत्यानन्द-प्रसादेन सुखिनो सर्वे अभवन्। अत: एव हि सर्वे तं अमन्यन्त स्व ईश्वर:॥
सत्यस्य हि प्रयत्नेन रिखियापंचायत:। अभवत्क्षेत्रमादर्शं विश्वेऽपि सुप्रशंसितम्॥
सत्यस्य कौतुकं पश्य अल्पे दिने यदभवत्। रिखियाग्रामटिकाया: अभवत् ग्राम गौरवम्॥
सन्ति तस्य उपदेशा: भक्तिसम्बन्धिन: यथा। भक्तिरस्त्येक: सम्बन्ध: अगाध: ईश्वरेण सह॥
मूकास्वादवत् प्रियश्च अनिर्वचनीयस्तथा। पितृवत् मातृवत् चैव दासवत् शत्रुवदपि॥
यत्किञ्चिदपि सान्निध्यं तदपि भवति अलम्। येन केन प्रकारेण तेन सह युक्तो भव॥
भक्ता: तस्यानुभवन्ति तेन व्याप्तं चराचरम्। कस्मिंचिद्धिशरीरे तु सद्य: प्रकटीभवति॥
विद्यामपि स जानाति परकाया-प्रवेशिनी। कथ्यते भारते देशे त्रयो हि ईदृशा: जना:॥



पञ्चाग्नि-सेवनं कृत्वा अत्र सम्पूर्णतां गतः। बहुकृत्वः पुरश्चरणं अत्रैव सम्पादितम्॥
वर्षान्ते हि प्रतिवर्षं राजसूयञ्च नामकम्। यज्ञमकुरुत अत्र सीताकल्याणं सहितम्॥

अत्र गणेशकुटीरे एकोऽस्ति गणेशः अली। अन्ये गणेश रमानी तथा गणेश अय्यरः॥
गणेश भट्टाचार्यश्च गणेश पिचकोनी च। एवंप्रकार पञ्चानां गणेशानां निवासोऽयम्॥
शिवानन्दमठेन विकासकार्याणि बहूनि। कृतानि रिखियाक्षेत्रे काले काले यथाक्रमम्॥
औषधालयः एकस्तु अमरवायां निर्मितः। यत्र निःशुल्कचिकित्सा ग्रामीणानां प्रचलिता॥
धनिकजनदत्तेन धनेन बहवः गृहाः। निर्मिताः गृहहीनेभ्यः यत्र तत्र चतुर्दिशम्॥
दत्तं सेचनकार्याय प्रीमियर हि संस्थया। अमरवा एव ग्रामे नामधेया स्प्रिंकलर॥
एका वृक्षकशालापि अस्मिन् क्षेत्रे हि स्थापिता। वृक्षकाः वण्टिताः सन्ति निशुल्काः ये इच्छन्ति तान्॥
बीजं सीवनयंत्राणि गावश्च वृषभास्तथा। घटिकाः भूषणानि च दत्तानि ग्रामवासिनः॥
खेला-पाठन-सामग्री बालेभ्यस्तु वितरिता। गृहनिर्माणसामग्री गृहस्थेभ्यः तथैव च॥
सर्वतः रिखियाग्रामं जनाः येऽपि वसन्ति ते। अकृत्रिमाः सन्ति सर्वे हि तथा भक्ताः स्वभावतः॥

तेषां पार्श्वे न हि कश्चिद् कृत्रिमोऽस्ति मनाकपि। व्यवहारः अकृत्रिमः सौन्दर्यञ्च अकृत्रिमम्॥
भवनानि च वस्त्राणि कृत्रिमाणि न कुत्रचित्। सर्वं स्वाभाविकं सन्ति सम्पूर्णं जीवनं तेषाम्॥
आध्यात्मिकमनुष्याय रिखियास्ति तीर्थस्थलम्। नानादिग्देशादागताः कर्मयोगाय अत्र हि॥
योगविद्यालयः एकः स्थापितः अत्र एव च। कश्चित् अत्रापि आगत्य योगशिक्षां हि प्राप्नुयात्॥
सेवानिवृत्ताः पुरुषाः सन्ति आमंत्रिताः सदा। शिक्षितुं कर्मयोगञ्च यः अस्ति आत्मशुद्धये॥
कोऽपि आश्रमजीवनं याचनाय यदीच्छति। सुविधा अनुसारः स तत्र गत्वा हि निवसेत्॥
क्रियते योगशिविरं शुभावसरे कर्हिचित्। यस्मिन् योगक्रियाभ्यासाः कारयन्ते समुचिताः॥
कालेकाले च अत्रापि उत्सवः गुरुपूर्णिमा। सम्पद्यते सवैभवं भक्तैश्च हि सहस्त्रिभिः॥
रिखियापीठः शीघ्रं हि अभवत् विश्वविश्रुतः। योगः जीवति यावत् रिखिया जीविष्यति॥510॥

सप्तमोऽध्यायः

तस्य मुख्याः उपदेशाः

(क) बालिका-बालकेभ्यश्च

बालिकाबालकेभ्यस्तु तस्यकथनमीदृशम्। भवन्ति ते स्वभावतः जिज्ञासवः कुचेष्टकाः॥
ऊर्जाधिक्यं हि बालेषु प्रायशः दृश्यते सदा। अतः कूर्दनोच्छलनं धावनं च कोलाहलः॥
तैः सदा करणीयाश्च पठनं न हि केवलम्। संगीतं खेलनं चैव द्वे विधे अति उत्तमे॥
अतः शिशु-अवस्थायां इमयेव हि शिक्षयेत्। सप्तवर्षाणिपर्यन्तं न भव तस्य शिक्षकः॥
समाप्ते सप्तवर्षे हि तेषां शिक्षा समाप्यते। अतः संस्कारशिक्षैव उद्देश्यास्ति प्रथमतः॥



आचरेण इयं शिक्षा पालकेन च दीयते। अन्यथा शिशु: जीवने दोषपूर्ण: भविष्यति॥
प्रकृतिजा हि जिज्ञासा बालकेभ्य: महार्घा:। तस्या: लाभा: हि प्राप्तव्या पालकै: अनिवार्यत:॥
जिज्ञासानां यदि तेषां समाधानं न क्रियते। त्रोटनं-भंजनं-नाश: वस्तूनां च भविष्यति॥
यदि त्रोटयति किंचित् जिज्ञासाया: हि बालक:। तर्जनं भर्त्सनं तस्य न करणीयं कदापि हि॥
त्वं आरक्षी विभागस्य पदाधिकारी मा भव। मित्रं भूत्वैव बालानां व्यवहर सदैव हि॥

प्रविश हृदये तेषां सखाभावेन केवलम्। तदैव शिक्षणं तेषां भविष्यति फलप्रदम्॥
पालका: प्राय: पृच्छन्ति होमवर्कं कृतं न वा। कदापि ते न पृच्छन्ति खेलक्षेत्रं गतं न वा॥
बालिकाबालकेभ्यश्च नृत्यनाटकखेलनम्। अति आवश्यका: सन्ति जीवनेन संयमाय हि॥
विद्यालये च कालेजे सर्वत्र अनिवार्यत:। उत्तीर्णां कास्तु दातव्या: पठने खेलने द्वयो:॥
डिग्रीप्राप्ता: हि बाला: न भवन्ति पुरुषोत्तम:। शिक्षणं संस्कारस्यैव अस्ति अति आवश्यकम्॥
निकृष्टं इदमस्ति वै बालान् कदापि न वद। श्रेष्ठनिन्द्य-विवेकस्तु कुण्ठास्ति दोषीमनस:॥
अपराधबोधमिमं न देहि बालमनसि। वयस्का: ते यदा जाता: निर्णेष्यन्ते स्वयं हि ते॥
सदैव सह पितृभ्यां बालकानां निवासनम्। भवति कारणं तेषां दौर्बल्यस्य स्वभावत:॥
अनावश्यकनिर्भरता पालके बहुकालिकी। सदाहानिकरी अस्ति अत: त्याज्या अतीव हि॥
आधुनिक-परिस्थिति-वशात् भवन्ति बालका:। वय: पूर्वं परिपक्वा: अत: ते परिवर्तिता:॥

तेषां तर्कञ्च चिन्तनं पूर्णत: परिवर्तितम्। अत: पालकै: तै: सह व्यवहरेत् न पूर्ववत्॥
बालक: चिन्तयति अद्य पितृभ्यां स हि बुद्धिमान्। जानाति अधिकं सैव अत: तृणीकरोति स:॥
सदा श्रेष्ठस्य वचनं यथेष्टं चाचरति। पालक: यदि बाधते अनिष्टं सकरिष्यति॥
अत: पालक: तस्य समयानुसाराचरन्। सम्यक् चिन्तयित्वा एव बालकै: सह वर्त्तेत॥
अधुना व्यावहारिकी शिक्षा हि आवश्यकी। न्यूनी भविष्यति शीघ्रं वृत्तिराहित्यं विषमम्॥
नूनं वृत्तिहीनताया: शिक्षापि अस्ति कारणम्। बी-ए-उत्तीर्णता अस्ति सुकरा अति सुगमा॥
परन्तु रोटिकार्जनं तेभ्यस्तु अति कठिनम्। जीविकादात्री शिक्षा हि अत: परमावश्यकी॥
सर्वकारस्य कर्त्तव्य: अधुनास्ति फलप्रद:। विद्यासंस्थासु शिक्षणं उद्योगस्य आवश्यकम्॥
कालेजस्य हि शिक्षापि सर्वेभ्य: न आवश्यकी। छात्र: प्रतिभावानेव इमां शिक्षां हि प्राप्नुयात्॥
सामान्य छात्रान् छात्राश्च उन्नतोद्योगशिक्षणम्। दत्त्वा समाजधारासु करणीयं नियोजनम्॥

यस्य गृहे य उद्योग: प्रचलति पुरातनत:। तदुद्योगस्य शिक्षणं सन्ततये वरं भवेत्॥
तन्तुकर्मकौ विन्दाय ताक्षिकी ताक्षण्याय च। उद्योगसुकरौ तथा सुखसाध्यस्वाभाविकौ॥ 542॥

(ख) गृहस्थेभ्य:

गृहस्थेभ्यस्तु उपदेशा: सन्ति अतीव सुन्दरा:। पालने अति सुगमा: सरलाश्च सुखदायका:॥
प्रात: सायं प्रतिदिनं अवश्यं स्मर ईश्वरम्। तत्प्रसादात् परां शान्तिं प्राप्स्यसि नास्ति संशय:॥



एतत् कर्तुं सदा नित्यं नियते नियमे चल। तदैव जगतः कार्यं कुरु उत्साहपूर्वकम्॥
विस्मर पूर्णसंसारं पतिपत्नीं च सन्ततिम्। त्यक्त्वा सर्वसम्बन्धं भूत्वा ध्यानपरायणः॥
काचिच्चिन्ता न कर्तव्या यद्भाव्यं तद् भविष्यति। को लाभोव्याकुलीभावात् नश्यति शान्तिभावना॥
ईशयुक्तो भव नित्यं प्राप्तुं हि तस्य आशिषम्। यत् त्वया अस्ति प्राप्तव्यं केनापि नहि रुध्यते॥
तथापि न पुरुषार्थः परित्यज्योऽस्ति गेहिभिः। ये तजन्ति पुरुषार्थः अवसादे पतन्ति ते॥
अभिनयं वयं कर्त्तुं आगताः धरणीतले। आसक्तिरहितो भूत्वा स्वचरित्रं हि निर्वह॥
निपुणः क्रीडकः भूत्वा स्वभूमिकां समाचरेत्। पितरौमित्राऽदिनां सम्यक् रूपेण निर्वहेत्॥
मनसि चाचरणे च भव निजनियंत्रकः। मनः तव भवितव्यं दासवत् न तु स्वामिवत्॥

यदि हि म्रियते कश्चिद् दुःखं न प्रकटीकुरु। गच्छति स सुदूरं हि नाशः तस्य न जायते॥
यदा इदं शरीरं तु व्यर्थं भवति आत्मने। तदा हि तत्परित्यज्यनूतनार्थं प्रयाति सः॥
अस्मिन् अर्थे च मृत्युः हि भवति हितकारकः। किन्तु स्वाभाविकोऽस्ति स आत्महत्या न शंसिता॥
पूजया केवलं नैव कर्माणि परिशुध्यते। अपरस्यहि दुखेषु साहाय्यं शुभतरं भवेत्॥
सभ्यता योगप्रधाना अस्ति सम्प्रति चालिता। तद्स्थानेऽधुना श्रेष्ठा सा यदि संयमशीला॥
सा पुत्रवती युवती भक्तं या हि जनयते। सकलेभ्यः गृहस्थेभ्यः संन्यासी विफलः वरम्॥
युष्मासु प्रत्येकस्मिन् हि अमूल्यं एकमौक्तिकम्। तदात्मा परमात्मा वा भगवान् वा खुदा वद॥
यत्महापारितोषिकं परन्तु अगाधमपि। तत्प्राप्तिः समयसाध्या कष्टसाध्या तथा अपि॥
पूर्णायुः हि शतं वर्षं अर्द्धन्तु व्यतीतं वृथा। विवाहे सन्ततिहेतुः क्रीडायां धनोपार्जने॥
अन्वेष्टुं तत्तु मौक्तिकं यदा आयाति समयः। तावत्तु अस्थिपञ्जरं दोलयति शनैः शनैः॥

यावत् यथार्थवैराग्यं जायते तव अन्तरे। तावत्तु अतिकालः तुभ्यं भवति निश्चितम्॥
अत्र महत्त्वपूर्णानि विद्यन्ते यानि वस्तूनि। परिश्रमेण मिलन्ति न तु मार्गे विना श्रमम्॥
गच्छन् ईश्वरपार्श्वेन याति धर्मस्य मार्गोऽपि। मानवता तु पर्यन्तं तदभिव्यक्तिः अतः भवेत्॥
योऽस्ति तव व्यवहारः सर्वैः हि प्राणिभिः सह। तत्सम्बन्धस्य माध्यमः किन्त्वस्ति परमेश्वरः॥
बहवः संन्यासिनोऽत्र युष्मदपि महत्तराः। पत्नी-सन्तति-विहीनाः चालयन्ति परिवाराः॥
युष्माकं सदनेषु तु दश-द्वादश-व्यक्तयः। संन्यासिनां तु आश्रमे निवसन्ति परः शतम्॥
यानि कर्माणि रागेण यूयं कुरुथ सर्वदा। ते कुर्वन्ति तदेव हि आसक्तिरहिताः सदा॥
अतः गृही अपि जातु आगत्य आश्रमे वसेत्। संन्यासिभ्यः च शिक्षेत् अनासक्तिं हि कार्यतः॥
यदि संसारमध्ये हि राज्यं धर्मस्य न भवेत्। तदा सर्वत्र दुष्टाः हि प्रभावशालिनः सदा॥
किन्तु एवं सदा हि न भवति प्रायशः श‍ृणु। व्यतीते समयेषु ते भवन्ति शान्तमनसः॥

जातिप्रथास्ति कारणं भारतस्यं अवनतेः। अतः त्याज्या अतिशीघ्रं यदि कल्याणमिच्छथ॥
सदस्याः परिवारस्य यदा गायन्ति कीर्त्तनम्। ऊर्जैका तदा महती जायते तदवसरे॥
दुष्टात्मानः पलायन्ते गृहे याति पवित्रता। शान्तिः विराजते तत्र सुखञ्च अनुभूयते॥



गृहस्था: सदा स्मरेयु: इदं वचनं शाश्वतम्। नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:॥
स्त्रीषु धर्म-अधर्मस्य ज्ञानं भवति पूर्णत:। सहनशीलतायान्तु ते सन्ति वै अनुपमा:॥
मूलधनानिता: सन्ति गृहस्थानां यथार्थत:। गृहे हि गोपनं तासां तत्धनस्यास्ति कुनीति:॥
गृहात् बहि: आगमनं तासां हि शुभलक्षणम्। चिकित्सका अभियंत्री अधिवक्त्री तथैव च॥
न्यायाधीश: विमानस्य भूत्वा संचालिकादय:। राष्ट्रनिर्माणे स्वकीया योगदाने ता: सक्षमा:॥
अस्ति परमकर्त्तव्य: गृहस्थस्य हि अधुना। ता: उच्चतम शिक्षणं दत्त्वा सज्जीकुर्वन्तु पूर्णत:॥
सर्वोच्च स्थानमासीत्तु स्त्रीणां वैदिकसंस्कृतौ। समाजे अग्रगण्या: ता: राजाधिकरणे अपि॥

गृहस्थाश्रमे बहव: सन्ति शुभा: अवसरा:। निष्कामकर्मयोगस्य चेदवधानं दीयते॥
यत् करोषि उपार्जनं वण्टनं उचितं कुरु। समाजाय पशुभ्यश्च आश्रितेभ्यश्च स्वकृते॥
विकलांगेभ्य: दीनेभ्य: अन्यशुल्केभ्यश्च अपि। न्यायेन वण्टनमस्ति परमा उत्तमा कृति:॥
अहं भावं परित्यज्य ईशाय यत् करोषि त्वम्। सर्वं तत् साधना अस्ति अत: एवं सदा कुरु॥
संसार प्रति या ऊर्जा वहति तव सर्वदा। परिवर्त्तस्व तामेव ईश्वरं प्रति नित्यश:॥
शनै: शनै: विवर्द्धस्व इयं बेलां प्रतिदिनम्। यावत् प्रतिक्षणं तस्य चिन्तनं न भविष्यति॥
प्राथमिकता ईशस्य द्वितीयता च स्वस्य च। अहर्निशं हि कर्त्तव्या एतत् सर्वस्य धर्म हि॥
दानस्य दृष्टिकोणेन दानं देयं कदापि न। आध्यात्मिक हि भावेन सदा दानं प्रदीयते॥
कस्यचित्तु यदि सेवा कदाचित् भवति त्वया। अनुभव यत्तत्सेवा परमेश्वरेण कृता॥
मनो हि लीनं कर्त्तुं कुत्रचिदत्यावश्यकम्। अन्यथा बन्धनं कर्त्तुं तत् सदैव हि तत्परम्॥

नवतिप्रतिशतरोगा: जायन्ते मनस: एव। मन: रमते अन्यत्र तदा स्वास्थ्यं प्रजायते॥
चतुर्षु पुरुषार्थेषु अर्थ: कामश्च द्वौ अपि। नेतुं कुमार्गे शक्नुत: विना धर्मं अविरतम्॥
अर्थ: कामश्च मध्ययो: धर्म: अस्ति नियंत्रक:। आध्यात्मिकजीवनस्य पाठोऽस्ति गृहस्थाश्रमे॥
मां न हि पृच्छ क: मार्ग: प्रभु: पार्श्वे हि गच्छति। सुसंकल्प: यदि अस्ति सर्वत्र अस्ति मार्ग: स:॥
यस्य आवश्यकतास्ति ईश्वर: ते ददाति तत्। यन्न मिलितं अस्ति तत्तु नास्ति आवश्यकम्॥
पुत्र: यदि न प्राप्त: प्राप्तं दु:खं हि केवलम्। अवबोध: वरमस्ति कीर्त्तनं गायनं कुरु॥
रोगा: शरीरसंयुक्ता: प्रभावयन्ति वै मन:। आश्रमे किन्तु निवसन् कदापि तन्न भवति॥
वर्द्धतये हि आश्रमे इच्छाशक्तिं प्रयत्नत:। अत: शारीरिकरोगै: मन: न हि प्रभूयते॥
उग्रतर: भवेत् रोग: यदा मन: प्रभावितम्। मनोवेगाश्चवर्द्धन्ते असाध्य: जायते रुज:॥
रोगे मन: बलादेव नय अन्यत्र पूर्णत:। कीर्त्तने जपने ध्याने स्वाध्याये पठनेऽथवा॥

व्यायामयोगमध्ये च बहुभेदा: भवन्ति वै। श्वसने तापमाने च प्राणवायो: व्यये अपि॥
योगे ते शिथिल: निम्न: निम्नतम: हि क्रमश:। व्यायामे किन्तु सर्वे ते विपरीता: सदैव हि॥
योगाभ्यासे अपचय: नाममात्रं हि भवति। रोधनं चयक्रियाया: स्वयमेव अत: भवेत्॥
अपचय: तु व्यायामे अधिकाधिक भवति। चयापचयौ वर्द्धेते अस्ति य: हानिकारक:॥



मांसपेश्य: प्राप्नुवन्ति भोज्यं च प्राणवायु च। अधिमात्रं अन्य अंगेभ्य: व्यायामे हि हानि: इयम्॥
योगे सर्वाणि अंगानि प्राप्नुवन्ति यथोचितम्। अत: सर्वाणि अंगानि सुपुष्टानि समानत:॥
योगे तु हृदयगति: शनै: शनै: प्रवर्द्धते। व्यायामे किन्तु अकस्मात् मन्दायते च वर्द्धते॥
व्यायामे पुष्टिकारकं भोजनं हि आवश्यकम्। किन्तु साधारणे योगे भोजनपि उचितम्॥
हार्मोनानां समुचित: स्राव: भवति योगे हि। तथा स्नायु हि संस्थाने सम्यक् विद्युत् प्रवाहोऽपि॥
उपायो नास्ति व्यायामे प्रवेष्टुमन्तर्जगति। इमा: विशेषता: सन्ति योगे हि नात्र संशय:॥

असंलग्न: यदा अस्ति मन: देहात् हि पूर्णत:। रोगाश्चापि पलायन्ते कार्मणमिव तत्क्षणम्॥
स्मरणीयं गृहस्थै: हि इदं सूत्रं सदैव हि। यदि इच्छन्ति भवितुं रोगहीना: निरामया:॥
राजयोग: यदि मार्ग: अस्ति चयनित: त्वया। शाकाहारी तदा भव मांसत्याग: वरं भवेत्॥
यदि त्वं तांत्रिकमार्गं करोषि अवलम्बनम्। आमिषभक्षणमपि कर्तुं शक्नोषि सर्वदा॥
वृक्षाश्च जन्तव: सन्ति अस्मद् सोदरसोदरा:। अत: ताञ्च अवबोध स्वजना: इव सर्वदा॥
तपस्यास्ति विधि: एक: कर्तुं कश्चित् सुनिर्मल:। मनसा च शरीरेण आत्मना अपि सर्वथा॥
तपस्या त्रितयी अस्ति सात्त्विकी राजसी तथा। तामसी तृतीया अस्ति सर्वेभ्य: न तु सर्वा हि॥
मनसश्च शरीरस्य स्वच्छता येन जायते। सात्त्विकी हि तपस्या सा स्वसाक्षत्काराय कृता॥
सिद्ध्यते सा हि ध्यानेन ध्यानं प्राणायामेन च। प्राणायाम: अत: अपि तपस्या इव कथ्यते॥
प्राणायामस्तु कर्त्तव्य: बन्धै: सह हि सर्वदा। आसनानि अपि अस्मै आवश्यकानि सन्ति वै॥

निरन्तरमुपवास: शरीरस्य हि नग्नता। सोढुं शीतञ्चउष्णञ्च तपस्या अस्ति राजसी॥
कामना-मोह-नाशाय क्रियते सा तपस्विभि:। कतिपया: न जानन्ति अस्या: मर्मं यथार्थत:॥
बलात् शारीरिकं कष्टं सहनं क्रियते यदा। अन्यान् प्रभाविता: कर्तुं तपस्या अस्ति तामसी॥
कस्याञ्चित् हि तपस्यायां अतिभूमि: न वांछिता। नियंत्रितेन भावेन कृता सा फलदायिका॥
कामना बहुला सन्ति सर्वा चापि स्वाभाविकी। मुष्टामुष्टि: न कर्त्तव्या ताभि: सह कदापि हि॥
घृणापि शत्रुतापि च तटस्थतापि वर्जयेत्। मित्रमिव समाचरेत् प्रथमा साधना इयम्॥
आध्यात्मिक हि मार्गेषु श्रेष्ठा नीति: इयं भवेत्। पालनीया अत: इयं सर्वत्र साधकै: सदा॥
मंत्रजपनं ध्यानञ्च प्रवर्द्धेते यथा यथा। कामनाश्च तथा तथा अपगता: भवन्तिच॥
द्रव्यस्य चेतना याश्च योग: कथ्यते जीवनम्। द्वौ अपि अनुभूयते पृथक् स मोक्ष उच्यते॥
द्वौ अपि केन विधिना पृथक्वत् अनुभूयते। अवलम्बितं भवति प्रकृतौ मानवस्य वै॥

पंचतयी चेतनास्ति मूढा क्षिप्ता नियंत्रिता। एकाग्राच विक्षिप्ता च सर्वाभ्यश्च पृथक् विधि:॥
गुरुणा एव शिक्षेत् अनुबुध्य स्वीयं विधिम्। अयं तु विषय: अस्ति गूढतर: सुनिश्चितम्॥
उपवास: न हि योग: किन्तु योगसहायक:। सप्ताहे एकवारं तु उपवसेत् हि साधक:॥
पक्वाशयव्रणग्रस्ता: अम्लताग्रस्तरोगिन:। उपवास: न हि कुर्यु: अस्ति स हानिकारक:॥
शरीरात् पूर्वं योगेन जातं प्रभावितं मन:। शुभस्य चिन्तनमस्ति सरलं शुभकर्मण:॥



यौन ऊर्जा प्रदत्तास्ति प्रकृत्या प्राणिनां सदा। नीचैः पतनशीला सा ऊर्ध्वं चेत् प्रतिगच्छति॥
सा कुण्डलिनी कथ्यते इयं शक्ति महत्तमा। उपयोगः मनुष्येण यस्याः न कृतः पूर्णतः॥
जलस्य तु स्वभावोऽस्ति नीचैः गमनमेव हि। किन्तु वाष्पीकृतं तत् हि ऊर्ध्वं गच्छति सत्वरम्॥
तथा हि योगक्रियाभिः ऊर्ध्वं सा शक्ति गच्छति। मनुष्यः अतिमानुषः भवति नात्र संशयः॥
मानवस्य मस्तिष्कस्य दशमः भाग एव हि। मनुष्यैः उपयुज्यते सर्वदेशेषु प्रायशः॥

कुण्डलिनी यथा यथा उपरिष्टातारोहति। शेषभागाः तदा तदा प्राप्नुवन्ति सक्रियताम्॥
एवं सामान्यजनस्य शक्तिः दशगुणा भवेत्। अतः संभावनाः गुप्ताः शनैः शनैः प्रकटिताः॥
उत्थानाय इमां शक्तिं आवश्यकास्ति धारणा। धारणया शरीरस्य प्रतिअणुः प्रभावितः॥
कारणेन अनेन हि योगेषु धारणा अति। उच्च पदं हि प्राप्नोति अस्ति सा वस्तुतः एवम्॥
कृतिषु परमेशस्य हृदयं सुन्दरतमम्। द्वितीया अस्ति पुष्पञ्च योगे च उपयुज्यते॥
प्रभावयन्ति पुष्पाणि चक्राणि मनस्तथा। प्रतिनिधिस्वरूपिणी भावनायाः नरस्य च॥
मनः नरस्य मायायां अविद्यायाञ्च भ्रमते। अतः यथार्थता तेन न प्राप्यते कदाचन॥
मायायां अवास्तविकः ज्ञायते वास्तविकवत्। वास्तविकः अविद्यायां ज्ञायते अन्यवत् सदा॥
माया चापि अविद्या च प्रकृत्याश्च बलद्वयम्। अतः यथार्थतां ज्ञातुं सदा जागरूको भव॥
प्रथमं त्वं ऋणी असि अन्यस्य यं न जानासि। तदनन्तरं हि स्वकीय सर्वदा हि अनुस्मरेत्॥

सर्वेषु एकः आत्मा हि वर्त्तते अविच्छिन्न इव। यथा सर्वत्र मालायां एकं सूत्रं हि वर्त्तते॥
आत्मभाव अनुभव सर्वेषु प्राणिषु सदा। वृत्तेषु च मनुष्येषु कीटेषु वा लतासु वा॥
अयं अनुभवः यदा प्रगाढायते निश्चितम्। ईशस्य अनुभूतिः प्रतिक्षणं भविष्यति॥
दानेन सेवया प्रेम्णा शुची कुरुष्व आत्मनम्। ध्यानयोगं कुरुष्व च तं प्राप्तुं यदि इच्छसि॥
प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च मनुष्याणां हि द्वौ पथौ। यस्तु रुचिकरः अस्ति तेन मार्गेण गम्यताम्॥
मार्गः वस्तुषु आसक्तेः प्रवृत्तिमार्ग कथ्यते। अनासक्तेः तु यः मार्गः निवृत्तिमार्ग उच्यते॥
संन्यासिभ्यः निवृत्तिश्च गृहस्थेभ्यस्तु प्रवृत्तिः। उत्तमौ मार्गौ कथ्येते प्रवृत्ति तन्त्रमार्ग च॥
शुद्धिः पर्यावरणस्य यज्ञेन क्रियते सदा। सम्प्रदायात् अतः यज्ञं विगलीकुरु सत्वरम्॥
सम्प्रदायैः स्वीकर्त्तव्यं यज्ञं सर्वत्र सर्वथा। यतः पर्यावरणस्य समस्या अस्ति सदृशी॥
न केवलं एतावत् हि आत्मनः मनसस्तथा। भावनायाः संस्कारश्च यज्ञः करोति सर्वदा॥

दोषपूर्णाः इमे सर्वे सर्वेषां शुद्धिः भवति। अत एव हि यज्ञस्य महत्त्वं अधिकायते॥
वयं स्मः यात्रिकाः इव अस्मिन् काले महीतले। प्रतीक्षारताः आवल्यां गन्तुं स्वीयमूलगृहम्॥
बालकेषु च बालासु त्वं करोषि विभिन्नताम्। घोरानर्थः अयमस्ति आध्यात्मिक अधर्मः च॥
उत्तरदायित्वपूर्णा बालिका अस्ति बालकात्। अतः बालक सदृशं बालिका अपि पाठयेत्॥
न हि निर्माहि धनस्य योजनां पूर्ववत् सदा। किन्तु निर्माहि योजनां योग्यतावर्द्धनस्य च॥
वर्द्धते यदि योग्यता धनं आयाति निश्चितम्। अतः धनस्य पूर्वं तु योग्यता वर्द्धनं कुरु॥



वर्त्तमाने हि त्वमसि मनसः क्रीतसेवकः। मनः पराजितं कृत्वा अधुना भव स्वामी त्वम्॥
षड्वर्षे यदपि कार्यं कृतं अब्रह्मचारिणा। एकस्मिन् वर्षे तदेव करोति ब्रह्मचारी वै॥
योगः प्रारभ्यते सदा अशान्तितः न शान्तितः। शान्तिस्तु फलं अस्ति योगकर्मणः अन्तिमम्॥
किमस्ति केन विधिना चेतनया सहमनः। सम्बद्धास्ति प्रकृतिश्च चेतनायाः ज्ञेया त्वया॥

तदा त्वमपि ज्ञास्यसि क्रियायोगस्य गौरवम्। शिक्षित्वा च इयं विद्यां मनस्तापात् मुक्तो भव॥
अस्मासु हि प्रकाशस्य द्वे विधी वर्त्तते सदा। बहिः कार्याय एकस्तु अन्तः कार्याय द्वितीयः॥
मनोऽस्ति बाह्यज्ञानाय अन्तर्ज्ञानाय तु आत्मा। ज्ञायते तु बहिर्जगत् मनसा न हि तत्परम्॥
आत्मनैव अन्तर्जगत् ज्ञायते सर्वविदितम्। वास्तविकगुरुः अस्ति सर्वेषां हि अन्तस्थले॥
सम्पर्कः तेन सह किन्तु दुष्करः प्रायशः सदा। अतएव बहिर्गुरुः सदैव हि आवश्यकः॥
बहिर्गुरुः गुरुः अस्ति आन्तरिको हि सद्गुरुः। बहिर्गुरोः सहाय्येन व्यक्तिः भवति सद्गुरुः॥
सम्पूर्ण जगत् युगपत् आध्यात्मिकं न हि भवेत्। प्रकृतिः प्रतिकूलं तु कदापि न भविष्यति॥
प्रकृतेः नियमः अस्ति विभिन्नतायां एकता। अतएव सदैव हि विभिन्नता वरं भवेत्॥
जगतः सर्वकर्माणि गृहस्थेभ्यः न संभवम्। कर्त्तुं निष्कामभावेन सर्वत्र च सदैव च॥
किन्तु अन्यस्य सेवया निष्कामकर्म संभवम्। त्रिचतुर्थः कुरु एवं शेषञ्च एकचतुर्थम्॥

त्रिचतुर्थोऽपि निष्काम भवति चेद् प्रतिदिनम्। तथापि गृहस्थेभ्यः वरमस्ति सदैव हि॥
विवाहस्य आधारोऽपि वैज्ञानिको हि उत्तमः। स्थानमपि प्रणयस्य द्वितीयः किन्तु स भवेत्॥
सम्बन्धः स्त्रीपुरुषयोः धार्मिकः चेत् नियंत्रितः। यदास्ति अनियंत्रितः पापकर्म स कथ्यते॥
सामान्याय गृहस्थाय वर्जिता तन्त्रसाधना। गृही विकारशून्यो हि कुर्वीत साधनां इमाम्॥
कश्चित् यौनक्रियाकाले सर्वं विस्मरति सदा। तस्मिन् काले स्वयंलीनः भक्तिकाले यथा भवेत्॥
अतः पापक्रिया नास्ति कदापि हि इयं क्रिया। यदि धार्मिका भवति सन्तानोत्पत्तिकारिका॥
समाजं प्रति इदं तु दायित्वमस्ति प्राकृतम्। तथापि नियमनिष्ठं मर्यादासहितं भवेत॥
शुभे च कर्मणि अपि विधिविधानं वर्त्तते। अतः यौनक्रियां अपि कुर्यात् विधिविधानतः॥
उत्तुंग चेतनावासः ब्रह्मचर्यं हि कथ्यते। शौचं च आत्मसंयमः अंशौ स्तः अस्य निश्चितम्॥
अनया दृष्ट्या ऊढः ब्रह्मचारी हि कथ्यते। स तु पालयति यावत् नियमाः ऊर्ध्ववर्णिताः॥

कामासक्तः दिने एव संभोगः यः करोति सः। प्राणान् नश्यति परन्तु रात्रौ कर्त्ता ब्रह्मव्रती॥
अन्तिम पंचदिनानि प्रतिपक्षस्य निश्चितम्। स्त्रीसंसर्गः न कर्त्तव्यः यदि इच्छसि स्वहितम्॥
गृहस्थेभ्यस्तु स्वावलम्बनमेव श्रेयस्करम्। अन्यस्मिन् निर्भरः यः स कदापि न सुखी भवेत॥
गावो हि सद्गृहस्थस्य उक्ता सम्पत्तिः महती। वृषभां उर्वरकञ्च ईंधनञ्च यच्छन्ति ताः॥
तासान्सेवा न कर्त्तव्या कदापि क्षयिभिः नृभिः। भावो हि क्षयप्रवणाः भवन्ति वै स्वभावतः॥
तथैव कफग्रस्तेन न एवं करणीया वा। अन्यथा क्षयग्रस्ताः ताः भविष्यन्ति सुनिश्चितम्॥
कर्त्तुं किञ्चित्तु जीवने एकान्तवसनं कुरु। सदैव विलयीभूत्वा विद्यमान-परिस्थितेः॥



आत्मसुचिन्तनं कृत्वा नवसंकल्पनं कुरु। अत: अस्मिनवस्थायां प्रबलं आत्मचिन्तम्॥
निर्णय: निराशोत्पन्न: श्रेयस्कर: कदापि न। अत: निर्णय: कर्त्तव्य: आशासहित: सर्वदा॥
ये विवाहितजीवनं त्यक्तुं शक्ताश्च सक्षमा:। ते एव हि समाजस्य उन्नतिं कर्त्तुं सक्षमा:॥

अधुना हि समाजस्य अपेक्षास्ति यदीदृशा:। जना: उत्पत्य कुर्वन्तु राष्ट्रोद्धार: समग्रत:॥
अन्ये एव हि सदोषा: धारणा सदोषा इयम्। स्वदोषा अपि द्रष्ट्व्या विचारवद्भि: पुरुषै:॥
इयं लोकोक्ति स्मर्तव्या सर्वदा सर्वसज्जनै:। न हि एकेन हस्तेन तालिका सम्प्रद्यते॥
स्वभाग्यस्य विधाता त्वं असि इदं हि निश्चितम्। मार्गितव्यं प्रकाशं य: स्वदेहे ज्वलति सदा॥
बाह्य: नास्ति प्रकाशस्तु प्रकाश: अस्ति अन्तरे। त्वं तु प्रकाशित: असि मोघं बहिर्न पर्यट॥
नियोजयसि चेत्कञ्चित् कस्मैचिद् कार्यहेतवे। तत्र प्रेम न द्रष्टव्यं योग्यता एव उचितम्॥
अस्ति सुखी परिवार: करोति कीर्त्तनं सदा। संध्या काले अबाधितं भूत्वा एकत्र प्रतिदिनम्॥
संसार दु:खमयोऽस्ति दु:खं यो न हि इच्छति। निराशां स हि प्राप्नोति संसारस्यास्ति नियम:॥
दु:खं सत्यं न हि सुखं छाया दु:खस्य तु सुखम्। मार्गयति यो दु:खं हि स प्राप्नोति सदा सुखम्॥
अत: भाषन्ते साधन: गत्वा कञ्चित् हि आश्रमम्। जीवनयापनं कुरु भूत्वा सामान्यपुरुष:॥

खादित्वा रोटिका: श्रमभूमौ हि शयनं कुरु। भवति या असुविधा अस्ति सा वास्तविकता॥
निर्धनता आरोपिता सदा सुखकरी भवेत्। अयमस्ति तप: व्रत: त्यागश्च संयमस्तथा॥
विना हि दु:खभोगेन मानव: न हि वर्द्धते। पूर्वं प्रकाशदानस्य ज्वलनमत्यावश्यकम्॥
सर्वान् जीवनेन सह दत्तश्च विवेक: अपि। अत: न हि कथितव्य: मया कारयतीश्वर:॥
पूर्णत: अस्ति स्वतंत्र: मानव: निजकर्मणि। स्वयमस्ति विधाता च भोक्तापि स्वयमेव हि॥
स्वकर्मेभ्य: कदापि न भगवन्तं देहि दोषम्। सदा मार्गं अनुसर विवेकेनैव दर्शितम्॥
ईश्वरस्य निकेतने प्रविष्टुं द्वाराणि षट्। तपस्या त्याग: वैराग्यं भक्ति: शुद्धि: समर्पणम्॥
जीवनं कठिनमस्ति रहस्यसहितं तथा। राजमार्गो न अस्ति तत् अस्तव्यस्तं सदैव हि॥
शरीरं मन्दिरमस्ति वैजयन्ती इव मन:। वायुना सा उड्डीयते मन्दिरं किन्तु स्थिरम्॥
वैजयन्ती इव मन: यदा उड्डीयते नभे। शरीरमचलं तिष्ठेत् मन्दिरवत् हि सर्वदा॥

यदा हि मनसा सह शरीरमपि गच्छति। सर्वनाशं तदा भवेत् जागरूक: सदा भव॥
नकारात्मकविचार: मनसि यदि जायते। अपराधी कदापि न मन्यस्व जातु आत्मनम्॥
सा क्रियास्ति स्वाभाविकी अत: चिन्ता वृथा भवेत्। अन्त: संचित संस्कार: बहिरायाति तत्क्षणम्॥
अत: जागरूको भूत्वा द्रष्टाभावेन पश्य तम्। कस्यचित् हृदयो नास्ति शुद्ध: अत्र महीतले॥
ईर्ष्याचिन्ताभयलोभै: ग्रस्ता: वै सर्वमानवा:। कठिनास्ति मनोशुद्धि: यावत् ते सन्ति हृदये॥
तत्कारणात् कदापिन भर्त्सेत स्वयमेव हि। कुरु सूर्यनमस्कारं गायत्रीजपनं तथा॥
कुर्वन् सूर्यनमस्कारं सूर्यं प्रार्थय सादरम्। तेजं देहि ओजं देहि शक्तिं देहि मयि प्रभो॥
छिन्ने हि वासनामूले विचाराणामपिक्षय:। अत: आवश्यकमस्ति वासनाहीनजीवनम्॥



व्यतीतं जीवनमस्ति आशापूर्त्यां निरन्तरम्। कदापि ताः न पूर्यन्ते अवशिष्यते यथावत्॥
अवबोद्धुं हि जीवनं कुरु श्रमः पुनः पुनः। आशात्यागे हि साफल्यं रहस्यमस्ति वस्तुतः॥

रोगं चेत् स्वीकरोषि त्वं तदा हि रोगी त्वमसि। किन्तु स्वयं यदि मन्यस्व कलाकारश्च सेवकः॥
साधुः वैज्ञानिकः यद्वा योद्धा वा संगीतज्ञः वा। तदा रोगस्य प्रश्नः हि तिरोहितः भविष्यति॥
कैंसर-मधुमेहाभ्यां आस्तां ग्रस्तौ हि क्रमशः। रामकृष्णः विवेकाच अमत्वा किन्तु उभयौ॥
साधनायां प्रवृत्तौ तौ अवरोधः नामन्यत्। कदापि जीवने रोगौ अभवतां यशस्विनौ॥
रोगैः सह हि तादात्म्यं स्थापयति त्वं यदि। तदा भवसि नूनं हि सार्वकालिकरोगी त्वम्॥
स्वानुशासननिमित्तं सेवावृत्यै विना यशः। अनिवार्यं हि स्वज्ञानं अन्यमार्गः न कश्चन॥
गृही ईश्वरं याचेत तं पुत्रमानयेत यः। योगं भोगं च उभयौ सन्तोलनं यथा भवेत्॥ 739॥

(ग) ईश्वर-विषये

ईश्वरविषये कथनं समग्रं न कदापि हि। नेति नेति अतः कथितं साधुभिः च महर्षिभिः॥
निराकारं साकारं च सुन्दरं वा भयंकरम्। यादृशी भावना यस्य तादृशं तत् हि ज्ञायते॥
सर्वाणि तस्य रूपाणि निर्मितानि भावनया। यस्मिन् रूपे त्वमिच्छसि तस्मिन्नेव हि स्वीकुरु॥
चेतनामयी या ऊर्जा ब्रह्माण्डे सुविराजते। सा एव कथ्यते ईशः बुधानैः ध्यानिभिस्तथा॥
तदेव कथ्यते गौडः अल्लातालाथवा खुदा। रामः कृष्णः ईसाथवा अन्यत् योऽपि त्वमिच्छसि॥
तत्श्वासस्य हि श्वासोऽस्ति प्राणानां प्राण एव च। सर्वेषां जीवनी शक्तिः तदेव वास्तविकता॥
सत्यं तदस्ति ब्रह्माण्डे कर्त्ता कारयिता तथा। पूर्णमदः तथा तस्मात् सम्पूर्णं हि उदच्यते॥
परमेशस्य सन्देशः वाण्यातीतः सदैव हि। स आयाति प्रतीकेषु प्रकाशे सुमनेषु वा॥
देवतानां रूपेषु वा चन्द्ररूपे कदाचन। ज्यामितीय आकृतिषु अप्सरसां रूपेषु वा॥
यथा प्रेमी स्वप्रेमिकां सर्वत्र एव पश्यति। तथैव निजभक्तेन ईश्वरः दृश्यते सदा॥

संकीर्णतावशात् लोकः पृथक् मन्यते ईश्वरात्। संकीर्णता यदा नास्ति ईश्वरः जीव एकवत्॥
पितृवत् जननीवत् वा मन्तुं शक्नोषि ईश्वरम्। किन्तु मातृवत् मननं अस्ति नैसर्गिकतरः॥
न हि आवश्यकमस्ति ईशस्य अवबोधनम्। केवलं अनुभूतिः हि तस्यास्ति आवश्यकी॥
दानेन सेवया प्रेम्णा यदा शुद्धो भविष्यसि। अनुभूतिस्तु ईशस्य प्राप्स्यसि शीघ्रमेव हि॥
स्वार्थहीना न हि सेवा प्रेमभावसमन्विता। न भविष्यति तावत्तु अनुभूतिः कदाचन॥
दृष्टं तत्तु हि सर्वत्र वीक्षणयंत्रं शुद्धं यदि। अतः यंत्रं कुरु शुद्धं उपरि उक्त विधिना॥
विभिन्नेन प्रकारेण प्राप्यते तदनुभूतिः। प्रेरणा भावना रूपे संगीते अथवा लये॥
कदाचित् प्रेरणा रूपे कदाचित् लिखिता तथा। यथा सिनाई पर्वते मोसेस तत्र प्राप्तवान्॥
भगवान्तु सदैव हि सखावत् तिष्ठति सह। वयं एव न जानीम अन्धवत् स्मः सदैव हि॥
उक्तं सत्यं कबीरेण महिमा ईश्वरस्य हि। सर्वत्र प्रकटितास्ति अहमपि तदेव हि॥



उक्तं मोहम्मदेनापि ग्रीवाया: रक्तवाहिन्या:। अति निकटतरमस्ति तदेव हि खुदा सदा॥
दुर्भाग्यो हि मनुष्याणां कल्पनातीत: वर्त्तते। भवन्त: भगवत्युक्ता: वर्त्तन्ते ते विपन्नवत्॥
रक्षति तत्तु मातृवत् दासं अहं विरहितम्। तस्य दास: अत: भव भूत्वा समर्पितं सदा॥
ईश्वर: यं हि चिनोति कर्त्तुं तं पुरुषोत्तम:। अग्निकुण्डे हि दु:खस्य क्षिप्यति नास्ति संशय:॥
यदा दु:खे प्रक्षिप्त: त्वं चिन्तय परमेश्वर:। कृत्वा अनुग्रहं त्वयि जागरयति निद्राया:॥
ईसां वा स्मर गान्धिनं रामं च अन्य पुरुषान्। दु:खं प्राप्याभवन् सर्वे अमरा: मृत्युलोकेषु॥
ईश्वर: योऽपि ददाति सर्वेषां मंगलाय हि। अत: तेन हि दत्तानि सादरमेव स्वीकुरु॥
दैवी वा भगवदिच्छा सार्वलौकिका भवति। सा एव महतीशक्ति: यया संचालितं जगत्॥
सीमातीतं मनो यदा तदैव अनुभवति। इच्छां परमेश्वरस्य फलत: अवगच्छति॥
कथंकुर्यात्क्रिया:सर्वा:कथंप्राप्येत्क्रियाफलम्। नजीवनेतदाकाचित्समस्याअवशिष्यते॥

यत् किंचित् जीवने याति याति भगवदिच्छया। जीवनदर्शनमेतत् तदानन्दं सदैव हि॥
मनुष्य: निमित्त: अस्ति ईश्वरेच्छा बलीयसि। अत: जीवनयापनं कुरु ईश्वर इच्छया॥
त्वं तु केवलरथोऽसि चालक: अस्ति ईश्वर:। अत: त्वं न हि स्वतंत्र: सर्वदा त्वमिदं स्मर॥
ईश्वर: मनसोऽतीत: तथा च इन्द्रियातीत:। अनुभवो हि संभव: चित्तशुद्धि: यदि भवेत्॥
जाते अनुभवे तस्य कर्त्ताशीघ्रं विलीयते। अत: कर्त्तुं अशक्त: स अनुभवस्य वर्णनम्॥
भाग्यशाली मनुष्योऽस्ति कर्त्तुं शक्नोति चिंतनम्। तस्य किंतु नहि अन्ये जन्तव: शक्नुवन्ति वै॥ 775॥

(घ) भक्ति-सम्बन्धिन:

यथा पुष्पेषु सुरभि: मयंके अस्ति चन्द्रिका। तथा मानवहृदये ईशभक्ति: स्वाभाविकी॥
शीतलता च उष्णता स्वभाव: चन्द्रसूर्ययो:। श्रद्धा अस्ति मनुष्याणां जन्मजातगुण: तथा॥
श्रद्धाभक्ती मनुष्येषु न हि आयात: कुत्रचित्। मनुष्यहृदये अस्ति तयो: वास: सुनिश्चितम्॥
तथा बीजेषु वृक्षाणि दुग्धे नवनीतं लीनम्। तथाहि हृदये श्रद्धा भक्तिश्च अपवारिते॥
हृदयस्य इमौ भावौ स्वीकुरु च सदा स्मर। यत: श्रद्धा आधारोऽस्ति परमेश्वर भक्तये॥
बीजवपनं समये वांछितं मृत्तिका जलम्। श्रद्धाया: जागरणाय प्रेरणा अस्ति वांछिता॥
प्रथम प्रेरणा माता द्वितीया इष्टदेवता। तृतीया तु गुरुरस्ति त्रयो हि आवश्यका:॥
यदि स्वमातरं प्रति नास्ति श्रद्धा हि मनसि। तदा कदापि जीवने कस्मिंचिद् न हि जागृता॥
सृज एकोऽपि सम्बन्ध: ईशेन सह सत्वरम्। पितृवत् जननीवत् वा दासवत् शत्रुवदपि॥
नारीं प्रति यथा कामीधनं प्रति च लोभिन:। यथासक्ता: भवन्ति त्वं अपि भव ईशं प्रति॥

कुर्वन् तु सर्वकर्माणि माता स्मरति स्वशिशुम्। तथा हि त्वमपि सदा ईशं स्मर निरन्तरम्॥
भावनाया: मनुष्याणां द्वे एव गति दृश्यते। सांसारिका तु एकास्ति आध्यात्मिकी च द्वितीया॥
आध्यात्मिकी तु वर्द्धते क्रमश: हि शनै: शनै:। सत्संगेन हि प्रारभ्य साधुसंगेन पूर्णत:॥
तत्पश्चात् तु गुरौ भक्ति: अन्ते च ईश्वरे श्रद्धा। क्रमश: एवं वर्द्धन्ती भक्ति: भवति निश्चला॥



बुध्या एव य: सम्बन्ध: जायते ईशेन सह। कदापि भक्तिरस्ति न मनश्च नातिक्रमते॥
शुद्धा भक्ति: हि उत्पन्ने क्षणमात्रं अपि यदि। विस्मृत: अस्ति संसार: नास्ति आश्चर्यमहो॥
मनस्तु शमनं कर्त्तुं भक्ति: सर्वोत्तमा विधि:। मनस: किन्तु प्रवृत्ति: चेदस्ति भक्तिप्रवणा॥
भक्ति: यदि प्रगाढास्ति ध्यानयोग: स्वाभाविक:। अतस्तु ध्यानयोगाय भक्तिं वर्द्धस्व निश्चितम्॥
भावनानां हि सर्वाणां भक्तिरस्ति सम्मेलनम्। जागर्ति यदा हृदये विश्वं हि दृश्यते महत्॥
यदा परमसत्तायां व्यक्तिसत्ता विलीयते। अहं भाव: विलीयते भक्ते: हि अस्ति पूर्णता॥

यथा क्षिप्रे समुद्रे त्वं जीवितुं व्यग्र: भवसि। तथा परमसत्तायै व्यग्रता भक्ति: कथिता॥
सदा अस्मिन् अहंभावो विलीन: भवति स्वत:। उपास्य एव शेषोऽस्ति संज्ञा भक्तस्य नश्यति॥
भक्तये हि उपवास: न कदापि आवश्यक:। किन्तु शरीर-स्वास्थ्याय उपवास: आवश्यक:॥
भक्तये अपितु स्वास्थ्यं आवश्यकमतीवहि। अत: भक्ति: भवेत् सम्यक् उपवाससमन्विता॥
यथा नद्या: हि निर्मान्ति मिलित्वा सागरं मिथ:। तथा भक्तौ निहितानि शुभकर्माणि सर्वाणि॥
स्वकुलं कुरुते भक्त: पवित्रं च प्रशंसितम्। स्वमातरं च पितरं कृतार्थौ च करोति स:॥
जन्मभूमि: अपि तस्य पुण्यवती च पावनी। सदाफला सदानन्दा भवति नात्र संशय:॥
भक्तिस्तु अस्ति सम्बन्ध: अंतरंग तेन सह। य: अस्ति सर्वलोकानां नियंत्रकश्च मातृवत्॥
गुह्यश्च मूकास्वादवत् अनिर्वचनीयस्तथा। तन्मयतापि तं प्रति वृत्तियुक्ता तेन सह॥
आध्यात्मिक साधनायां भक्ति: हि सरलतमा। अकृत्रिमं प्रेम एव भक्ति: कथ्यते वस्तुत:॥

संसारे कुरुथ यूयं विशुद्धं नास्ति प्रेम तत्। यत् अपि कुरुथ भूयं आसक्ति: अस्ति पूर्णत:॥
न शरीरेण मनसा भावनया हि केवलम्। प्रेम वास्तविकं अस्ति भावना अस्ति निमित्तम्॥
चत्वार: प्रकारा: हि भक्ता: सन्ति महीतले। एकस्तु भजते ईशं कष्टात् हि मुक्तिहेतवे॥
किंचित् प्राप्तये द्वितीय: तृतीय: कृतक: इव। प्रेमवशात् हि चतुर्थ: किंचिदपि न इच्छति॥
आस्थाविश्वासौ उभौ स्त: भक्त्या: आधार केवलम्। उभयौ किन्तु न दृष्टौ अन्तरे एव तौ स्थितौ॥
मानवविषयोर्मध्ये सम्बन्ध: आसक्ति: यथा। तथैव भक्तईशयो: सम्बन्ध: भक्ति: भवति॥
उभयौ सम्बन्धितौ स्त: मनोवैज्ञानिक स्तरे। मापनं संभवं तयो: चुम्बकीय तरंगवत्॥
रक्तचाप: प्रभावित: तथा च चयापचयौ। परिणाम: अत: तयो: शुभतर: हि भवति॥
ईशं ज्ञात्वा सदा भक्त: मत्तोस्तब्धश्च भवति। प्रफुल्लित: तथा शान्त: आत्मरामो च जायते॥
कीर्त्तनं भजनं भक्त्यां शरीरस्थ रसायनम्। परिवर्त्तते मनसि शान्तिधारा प्रवाहिता॥

भक्ति: केवलमात्रं न मार्गोऽस्ति ईशप्राप्तये। किन्त्वस्ति संस्कृति: एका समाजस्य आधारोऽपि॥
आगामीसमये भक्ति: निर्मास्यति सेतु: एक:। भोगसंयमयोर्मध्ये अत्र नास्ति हि संशय:॥
अत: भक्ति: हि द्रष्टव्या शक्तिशालिनी हेतिवत्। मानव-संस्कृतिरूपा तद् रूपेण प्रवाहिता॥
विश्वासश्च आस्था चैव स्त: अपक्वे सामग्रयौ। तयो उत्पन्ना: भक्तिस्तु उत्पादास्ति परिष्कृता॥
भक्ति: मानसरोगाणां परमौषधि: मन्यते। अनुपान: श्रद्धा अस्ति सदैव संस्मर इदम्॥ 820॥



(ङ) गुरुशिष्य-सम्बन्धिन:

शिष्यत्वं अति कठिनं गुरुत्वं सरलतरम्। शिष्येण इदं स्मर्तव्यं सर्वदा गुरुणा सह॥
यावत् शिष्यस्य चेतना गहना न हि भवति। तावत् न प्रकाशयति गुरुणा दत्तं विद्युतम्॥
शिष्य: जागरूको भूत्वा उत्तम: ग्राहक: भवेत्। सर्वभावेन गुरुणा दत्तां शिक्षां गृहणीयात्॥
प्रत्येक: हि गुरु: अस्ति आलोकस्य प्रकाशक:। न कश्चित् लघु: अस्ति महानस्ति न अन्यश्च॥
तुलना नैव कर्त्तव्या कदापि गुरुभ्यां सह। सर्वै: शिष्यै: हि स्मर्तव्या: अस्मिन् काले विशेषत:॥
दु:खेषु वा सुखेषु वा सम्पत्तौ वा विपत्तौ वा। तारुण्ये वा जरायां वा मन: शिष्यस्य सर्वदा॥
एकवत् यदि वर्त्तते तदा अस्ति स्वतंत्र स:। धने यशसि ख्यातौ च इयं ऊर्जा व्ययीकृता॥
क्षीणं सर्वस्य कुर्वते काञ्चन साधकानपि। शिष्य: जागरूको भूत्वा सर्वमिदं हि वर्जयेत्॥
द्वितीयगुण: शिष्यस्य मनस: शुद्धि: भवति। विना इमं गुण: तस्य कार्याणि अशुभानि हि॥
प्रेमपात्र: न क: अपि गुरो: अस्ति कदाचन। यत् किंचित् हि करोति स: शिष्यस्य मनशुद्धये॥

स्वव्यक्तित्वं न पोषयेत् जातु शिष्य: प्रमादत:। अन्यथा गुरु: अक्षम: तस्य कर्त्तुं सहायताम्॥
योग्यता महती अस्ति शिष्यस्य हि स्वतंत्रता। सम्पूर्णेभ्य: विषयेभ्य: पूर्णरूपेण शून्यवत्॥
मन: यदा हि भवति स्वतंत्रं पूर्णत: तदा। एक: सबल: बोध: जायते परिणामत:॥
ईदृशी योग्यता शिष्ये गुरुणा हि अपेक्ष्यते। न कस्यांचित् परिस्थितौ स्वतंत्रेयं बाधिता॥
गुरु: शिष्यौ हि भवेताम् वस्तुत: एकमानस:। तदा हि भक्ति: शिष्यस्य भवति अति सबला॥
तदा स अनुभवति स्वगुरुं आत्मस्थितम्। यद्यपि गुरु: बहिस्थ: अन्तरस्थ: अपि भवेत्॥
ऊर्जास्ति गुरु: विद्युत: शिष्योऽस्ति बल्बवत् सदा। यदि प्रभा आदाने तु बल्बं न अस्ति सक्षमेम्॥
गुरो: दोष: न हि अत्र शिष्य: न यदि ग्राहक:। स शिष्य: अस्ति वस्तुत: य: अस्ति श्रेष्ठग्राहक:॥
देहत्यागेऽपि न गुरु: मोक्षं कदापि इच्छति। अन्तरिमलोके स्थित्वा शिष्यं हि उपकुरुते॥
उत्प्रेरित: ऊर्जान्वित: करोति शिष्यं सदा। यदि गुरुश्च शिष्यश्च एकाकारौ प्रच्छन्नत:॥

राजमार्ग: गुरुरस्ति शिष्यस्य लक्ष्यप्राप्तये। जीवने कर्त्तुं उत्थानं स यदि अस्ति उद्यमी॥
यदा गुरुश्च शिष्यश्च न लीनौ स्त: परस्परम्। एकाकारौ कदापि न भवत: इह जीवने॥
गुरुशिष्ययोर्मध्ये हि अहंकार: महान् रिपु:। आदानस्य प्रदानस्य मार्ग: तेन हि रुध्यते॥
उभयोर्मध्ये सम्बन्धं मालामंत्रौ हि कुरुत:। मंत्र: गुरो: प्रतीकोऽस्ति माला च ध्यानसाधनम्॥
स्मारयत: सदैव तौ सबलं सम्बन्धमिमम्। जागरूको यदि शिष्य: विस्मरति न हि गुरुम्॥
सुबीजाकुरुते गुरु: शिष्ये मत्वा इदं बीजम्। अग्रे अंकुरितो भूत्वा सुवासितो भविष्यति॥
किन्तु यावत् सुशिष्योऽयं भक्तिरसेन हृदयम्। सिञ्चति न हि तावत्तु अंकुरितो भविष्यति॥
गुरुणा दत्तमंत्रस्य जपनं मालया सह। करणीयं नियमत: मत्वा गुरु: उपस्थित:॥
प्राप्ते उच्चस्तरे शीघ्रं चेतने गुरुशिष्ययो:। भवत: एकाकारा अनुभवप्रत्यक्षत:॥
गुरुशिष्यौ महाशक्ती ध्रुववत् हि आकर्षकौ। तयोर्मध्ये य: संबंध: अति उच्चस्तरीय: स:॥



ईदृक् प्रेम कदापि न समाज: अनुभवति। यदस्ति हि तयोर्मध्ये अतिशय उच्चास्ति तत्॥
समर्पणमावश्यकं शिष्यस्य च गुरुं प्रति। अन्यथा तयो: सम्बन्ध: कदापि न दृढायते॥
समर्पणस्य अर्थोऽस्ति सम्पूर्णा एकता तथा। नितान्तं च अभिन्नता सम्पर्कश्च अच्छेद्यहि॥
यदा त्वं गुरु विषये चिन्तयति कदाचन। लीनतां च मनस्तव तं प्रति यदि भवति॥
अवगच्छ समर्पणं सम्यक् रूपेण अभवत्। तदा हि त्वां गुरु: शीघ्रं शक्तिमय: करिष्यति॥
समर्पणं यदापूर्णं शिष्यस्य हि विचारणा। एकाकारा गुरुणा सह भवति शीघ्रमेव हि॥
गुरो: हि मार्गदर्शनं सात्त्विकं यदि भवति। सुशिष्यो हि कदापि न असफलं भविष्यति॥
शिष्य: भवेदीदृक् योग्य: समर्थोऽस्ति कथयितुम्। शिष्यस्तेऽहं त्वं शाधि मां यथैव त्वं हि इच्छसि॥
गुरुशिष्यौ च स्वतंत्रौ शिष्यश्च अतिरिच्यते। गुरुं यदि गुरुचेष्टा पूर्णत: सफलीभूता॥
पत्नी अपि यदि शिष्या ब्रह्मशक्ति सा भवति। रामकृष्णश्च शारदा अस्य स्त: उदाहरणम्॥

निमीलिते यदा नेत्रे गुरुरेव हि दृश्यते। यदि ईदृक्षगाम्भीर्यं सम्बन्धे गुरुशिष्ययो:॥
तदा स शिष्य ईप्सितं गुरो: प्राप्नोति निश्चितम्। स शिष्य: एव शक्नोति भवितुं गुरोरुत्तम:॥
गुरुशिष्ययोर्सम्बन्ध: परमगोपनीय: च। शिष्य: भ्रान्त: गुरुं विना शिष्यं विना गुरुरपि॥
अलौकिकं च स्वीयं च व्यक्तित्वस्य गुरो: रूपे। प्रथमेन ससंपर्कं करोति शिष्येण सह॥
प्रत्येकस्य मनुष्यस्य अन्तरात्मा एव गुरु:। किन्तु बहि: गुरुणैव कृत: सजग: तं प्रति॥865॥

(च) संन्यासिभ्य:

कदापि नास्ति संन्यास: वस्त्राणां परिवर्त्तनम्। नाम्नश्चन तु देशस्य अस्ति स्वपरिवर्त्तनम्॥
संन्यासी कस्यचिन्मित्रं नास्ति वैरी च कस्यचित्। सर्वे हि समं मत्वा विचरति अलिप्तवत्॥
स्वजीवने हि स्वश्राद्धं यदि सम्पद्यते स्वयम्। नवजीवनदायिन्या: मृत्यो: स न बिभेति वै॥
संन्यासिनस्तु चतस्र: अवस्थिति: सुनिश्चिता। नूनं दशवर्षाय गुरुणा सह अवस्थिति:॥
भूयस्तावन्मात्रं हि भवेत् स परिव्राजक:। मठं निर्माय तत्पश्चात् तत्रैव सह हि तिष्ठति॥
तमपि च परित्याज्य विजनं प्रतिगच्छति। परमहंस जीवनं क्षेत्रसंन्यास कथ्यते॥
परमहंसा: कदापि न मिलन्ति केनचित् सह। यत: तेषां न कर्माणि न कर्त्तव्यं जगत् प्रति॥
न आदानं प्रदानं च दीक्षन्ति न हि मानवान्। आत्मकाम: भवन्ति ते भूत्वा निर्जनवासिन:॥
स्वयं हि सेवक: अस्ति स्वयमस्ति च आश्रय:। पूर्णत: स्वावलम्बी स संन्यासी न हि निर्भर:॥
संन्यासिभ्य: गीता अस्ति उत्तमा मार्गदर्शिका। तै: सदा पठितव्या सा जीवितव्या च जीवने॥

संन्यासिन: तु निचिता: आत्मभावेन पूर्णत:। तदैव भवितुं शक्ता: सेवायोग्या: हि वस्तुत:॥
आत्मभावस्य अर्थोऽस्ति अन्यस्य हि अनुभव:। आत्म अनुभव: सम: यदास्ति परिपूर्णत:॥
यदि अन्यस्य पीडावा समस्या अथवा दु:खम्। समस्या स्वकीय इव ज्ञायते आत्मभाव स॥
अधुना जनसंख्यापि वर्द्धते द्रुतवेगेन। संन्यासेन अत: तस्या: वृद्धिरपि निरुध्यते॥
वृत्तिहीनसमस्याया: निराकरणं संभवम्। या अस्ति अस्य युगस्य विकट: एकप्रश्न: वै॥



संन्यासिन: न इच्छन्ति भोगं कदापि जीवने। य: अस्ति उत्तम: अस्ति तेषां तु भावना इयम्॥
साधना सरलतमा भगवत्सेवा वर्त्तते। संन्यासी अथवा भोगी कर्त्तुं शक्त: कश्चिदपि॥
निश्चितरूपेण संन्यासी कर्मविनोदी च भवेत्। यदि ज्ञानविनोदी च स: अस्ति अति उत्तम: ॥
संन्यासिन: ईशं प्रति कथनं ईदृशं भवेत्। पारितोषिकं दण्डं च हर्षेण स्वीकरोम्यहम्॥
संन्यासिनां तु आश्रय: भगवन्नाम केवलम्। स्वविद्वत्वे अवलिप्त: पतनं तस्य निश्चितम्॥

संन्यासी अति उत्तम: भक्त्यै भक्ति: करोति य:। कठिनास्ति इयं किन्तु चेष्टा करणीया सदा॥
किंचिदिव बिभेति न संन्यासी परमेशत:। स्वकर्मभ्य: सदैव हि भेतव्यं तेन उचितम्॥
संन्यासी जीवनमस्ति न्यास: एक: प्रतिष्ठित:। शरीरं तस्य न अस्ति मन: अपि न तस्य हि॥
उपयोग: तयो: अस्ति अन्येभ्य: न हि आत्मने। नियमोस्ति सनातन: संन्यासी सदैव स्मरेत्॥
संन्यासिनां समक्षे तु आदर्श: अति उत्कृष्ट:। संन्यास: सेवामार्गोस्ति राष्ट्रस्य च विश्वस्य च॥
तृणादपि महातुच्छ: कुर्यात् संन्यासी आत्मानम्। सहिष्णु: अपि स भवेत् दद्यात् मानं अमानिन: ॥
असुविधासु जीवितुं न शक्तश्च सुखेच्छु: च। न संन्यासी भवेत् जातु यदि अस्ति स पामर: ॥
चतुर्षु पुरुषार्थेषु संन्यासिन: स्त: द्वौ एव। धर्ममोक्षौ न अन्यौ च इदं स्मृत्वा समाचरेत्॥
असफलोऽपि संन्यासी सफलगृहवासिन:। सर्वभावेन उत्तम: अत: संन्यासी त्वं भव॥
संन्यासिन: स्वयं दासा: अन्येषामपि सर्वदा। न सन्ति तस्य अधिकारा: दायित्वं एव केवलम्॥

कर्त्तव्यो हि अधिकार: संन्यासिन: तु भवति। तयो: कदापि विलग: करोति न स्वजीवने॥
संन्यासी उदरहेतु: कदापि न हि जीवति। सेवैव तस्य उद्देश्य: स्वार्थभावो मनाक् न हि॥
संन्यासी न हि मन्यते ईशस्य नाम किंचन। सर्वनामानि ईशस्य स जानाति हि वस्तुत: ॥
रूपमपि न हि किंचित् ईश्वरस्य हि भवति। किन्तु सर्वेषु रूपेषु स एव वर्त्तते सदा॥
संन्यासाय न हि काचित् आयुसीमा हि निश्चिता। मनोवृत्ति: यदि अस्ति: बालकोऽपि भवेत् तथा॥
संन्यासजीवनमस्ति नितरां असुरक्षितम्। सुरक्षा यदि वांछिता अस्मिन् मार्गे न आगच्छ॥
आध्यात्मिक: हि उत्कर्ष: प्राप्य: अस्ति समानत:। संन्यासिभि: तथैव हि जागरूकै: गृहिभिश्च॥
न्यूनतमं एकं क्षेत्रं अंगीकृत्य च स्वेच्छया। संन्यासी हरितक्रांतिं आनेतुं प्रयत्नं कुर्यात्॥
संन्यासी न हि कदापि दास: भवति रूढीनाम्। मनस: इन्द्रियाणां च सर्वेषां स नियंत्रक: ॥
संन्यासिन: तु जानन्ति भावनाया: नियंत्रणम्। अहंकार विद्वेषयो: तथा च मनस: सदा॥

संन्यासी गेरूवस्त्राणि न धारयति मुक्तये। सेवायै किन्तु सर्वेषां तत: तु आत्मशुद्धये॥
देशस्य कस्यचिद् नास्ति न राष्ट्रधर्मयोरपि। बन्धने बद्ध: संन्यासी सर्वोपरि स वर्त्तते॥
शिष्या: अपि भविष्यन्ति गुरु: किन्तु न त्वमसि। आगमिष्यति धनं च तदपि न तव धनम्॥
आश्रमं भवनं चैव यदि प्राप्नोसि कुत्रचित्। ते अपि तव सम्पत्ति: कदापि न भविष्यत: ॥
यशसे अथवा नाम्ने करोषि किंचिदपि न। सेवक: सर्वकालिक: सर्वेषामसि त्वं स्मर॥



संन्यासी सततं स्मरेत् गुरुः तस्य वियुक्तः न। शरीरात् यद्यपि भिन्नः एकवत् अन्तरे सदा॥
संन्यासी गुरोः आश्रमात् बहिरागच्छति तदा। नितरां परिवर्त्तितः भृंगः मृद्विवरात् यथा॥
कर्त्ताभावं परित्यज्य करोति कर्म यो गृही। कथ्यते कर्मसंन्यासी सोऽपि संन्यासदीक्षितः॥
अहंकारः महान् शत्रु संन्यासिनोऽस्ति सर्वदा। आदरं इच्छति तस्य अहंकारः न म्रियते॥
आन्तरं अनुशासनं संन्यासिनः दृढभूमिः। बाह्यं प्रदर्शनार्थं हि कोऽपि कर्त्तुं हि सक्षमः॥

यदि कोऽपि समर्थोऽस्ति भावनानां च मनसः। वेगाघातान् नियंत्रयितुं संन्यासी स वस्तुतः॥
आजीवनं हि संन्यासी सर्वदा सर्वदेशेषु। स्मरेत् द्वे अक्षरे नित्यं योगः योगः योगः योगः॥
योगस्य विषये कर्त्तुं तस्य कर्त्तव्य एको हि। संवर्द्धनं प्रशिक्षणं वार्तालापं प्रवचनम्॥
यावत् सर्वे जनाः न हि शिक्षन्ति योगपद्धतिम्। तावत्तु तव संन्यासः पूर्णः न मन्यते मया॥919॥

(छ) योग-सम्बन्धिनः

योगः सम्पूर्णविज्ञानं मनसः शरीरस्य च। भावनायाश्च नरस्य अतः करणीयः सदा॥
कस्यचिद् केनचिद् मेलः अर्थः योगस्य शाब्दिकः। योगविद्या प्रसंगे तु विशेषः अर्थ मन्यते॥
ब्रह्माण्डीया च जीवस्य चेतने मिलिते यदा। योगस्योद्देश्य पूर्यते तदैव परिपूर्णतः॥
पतंजलि महर्षिणा अष्टांगयोग वर्णितः। यमाश्च नियमाश्चैव आसनानि प्राणायामः॥
प्रत्याहारश्च धारणा च ध्यानं समाधिरेव च। अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्यः असंग्रहः॥
कथ्यन्ते ते यमाः सर्वे नियमाः सन्ति निम्नवत्। शौचः सन्तोषः तपश्च स्वाध्यायेशप्रणिधानम्॥
सर्वे एते आवश्यकाः कर्त्तुं मानव शक्तिमान्। मनसा च शरीरेण आत्मनापि न संशयः॥
त्रिविधानि शरीराणि स्थूलं सूक्ष्मं च कारणम्। स्थूलं नाशवदस्ति कारणमस्ति शाश्वतम्॥
सर्वे योगेन क्रियन्ते शक्तिसम्पन्नाः सक्रियाः। चेत्कृतः ध्यानपूर्वकं नियमितश्च निष्ठया॥
मनःएवास्ति मानवः शरीरं तस्य वाहकः। अतः पतंजलिकृता योगस्थ परिभाषेयम्॥

चित्तवृत्तिनिरोधः हि योग वर्त्तते वस्तुतः। अतः सर्वतोभावेन निरोधं त्वं हि साधय॥
आसनानि प्राणायामाः निरोधाय हि उत्तमाः। प्रत्याहारः तदायाति कर्त्तुं तं अति सबलः॥
आसनानि बहूनि च प्राणायामश्च बहवः। योग्यप्रशिक्षकेण त्वं शिक्ष एताः सर्वाः क्रियाः॥
उर्जे द्वे हि गतिमाने सदैव स्तः कलेवरे। इडा वामनासिकातः पिंगला तु दक्षिणतः॥
इडा तु मानसिकी हि पिंगला च शारीरिकी। क्रियातः ते स्तः सम्बद्धे संतुलिते वरं भवेत्॥
वामभागे मस्तिष्कस्य संयुक्ता अस्ति पिंगला। तस्य दक्षिणभागे तु संयुक्ता भवति इडा॥
यावत् एका प्रभवति मन्दा तावत्तु द्वितीया। प्रवहति स्पष्टतया अनुभवः प्रत्यक्षतः॥
युगपत् चेत् उभे उर्जे समानं हि प्रवाहिते। सुषुम्ना तृतीया ऊर्जा तदा जायते सत्वरम्॥
इयं ऊर्जा प्रवहति मेरुदण्डस्य मार्गे। यदा सा जागृता अस्ति किंचित् कर्म न क्रियते॥
ध्यानं एव हि कर्त्तव्यं आत्मज्ञानं तदा भवेत्। अन्या काचिद् क्रिया अस्ति सदैव हि भयंकरी॥



समासे अस्ति योगस्तु सर्वेषु अनुशासनम्। शरीरे मनसि बुद्धौ भावनायां तथैव च॥
निहिते अनुशासने अस्ति सम्यक् प्रशिक्षणम्। अत: प्रशिक्षणं विना योग: भवति दु:खद:॥
ध्यातव्यास्ति इयं वार्त्ता मुख्यत: ब्रह्मवेलायाम्। इडा च पिंगला चैव समरूपे प्रवाहिते॥
योगाभ्यासाय उत्तम: ब्रह्मवेलास्ति समय:। अत: तस्यां हि वेलायां शय्यात्यागं सदा कुरु॥
स्वच्छस्थाने रिक्तोदर: भूत्वा हि योगसाधनाम्। करणीया अतिश्रेष्ठा सूर्योदयपूर्वं सदा॥
दीर्घकाल पर्यन्तं च सततं श्रद्धासेवित:। योग: चेत् तस्य तदैव दृढभूमि हि निर्मिता॥
प्राणायामेषु वर्णितं नाडीशोधनमुत्तमम्। करोति नाडीशोधनं रक्तसंशोधनं तथा॥
मस्तिष्क-वामभागस्तु क्रियाकेन्द्रं हि कथ्यते। दक्षिणस्तु मन:केन्द्रं योगिभि: वर्णितं तथा॥
द्वयौ हि केन्द्रयोर्मध्ये सन्तोलनं प्रवर्द्धते। यदि हि नाडीशोधनं क्रियते विधिपूर्वकम्॥
सर्वरोगस्यकारणंआकर्ष:अस्तिमुख्यत:।अत:यत्नंसदाकुर्यात्तस्मात्रक्षयितुंस्वयम्॥

आकर्षा: त्रिविधा: सन्ति शारीर: मनस: तथा। मनोवेगस्य तृतीय: सर्वे रोगप्रवर्द्धका:॥
दूरीकुर्वन्ति शारीरं आसनानि विशेषत:। मनसश्च प्राणायामा: मनोवेगस्य जपनम्॥
अनन्यचेतनाप्राप्ति: साधकानां उद्देश्य वै। योगेन तु इदं लक्ष्यं केनचिदपि प्राप्यते॥
मन: यदि वशीकृतं यथेष्टं ध्यानमेव हि। किन्तु मन: यदि रुग्णं अन्ये योगा हि हितकर:॥
योगेषु कर्मसिद्धान्त: महत्त्वपूर्ण: वर्त्तते। तस्योपयोग: जीवने प्रतिक्षणं हि दृश्यते॥
त्रिविधं सन्ति कर्माणि क्रियमाणं कृतं तथा। प्रारब्धं चास्ति तृतीयं सर्वाणि सन्ति स्वकृतम्॥
क्रियमाणं तु यत्कर्म शोधनं तस्य संभवम्। इच्छाशक्त्या सदैव हि अत: जागरूको भव॥
सन्तोलितुं कृतं कर्म अध्यात्मो हि आवश्यक:। प्रारब्धं परिवर्त्तितुं उपाया: न हि केचन॥
प्रारब्धं वै हि भोक्तव्यं रुदित्वा वा विहस्य वा। उपभुंक्ते विहस्य हि ज्ञानी न अज्ञ तत्सम:॥
अज्ञ: तु दुखी भूत्वा स्वं करोति दुखीतर:। शोधनं कृतं कर्मस्य कर्मयोगेन उत्तम:॥

स्वार्थविरहितं कर्म कर्मयोग हि कथ्यते। यत्कर्म त्वं करोषि तत् भगवते कुरु अर्पणम्॥
सद्विचारा: हि निर्मान्ति सत्संस्कारान् असंशयम्। ते सन्ति बीजवत् नूनं यान्ति जीवात्मना सह॥
पुनर्जन्मनि परन्तु आयान्ति ते महीतले। आत्मना सह सदैव अत: जागरूको भव॥
योगस्तु अस्ति विभक्त: चतुर्षु मुख्यभागेषु। कर्मभक्तिराजज्ञानं अंगानि सन्ति तस्य हि॥
कर्मशील-पुरुषाय कर्मयोग: प्रशंसित:। भावनाशील-व्यक्तये भक्तियोग: हि उत्तम:॥
मननशील-जनाय ज्ञानयोगो हि शंसित:। अन्यस्मै राजयोगो हि अति उत्तम वर्त्तते॥
राजयोग: पुन: अस्ति विभक्त: बहुभागेषु। हठयोगे लययोगे कुण्डलिन्यां च मंत्रेषु॥
तंत्रयोग: अपि अस्ति सर्वाणां च समुच्चय:। क्रियायोग: तेषामपि मुख्यक्रिया हि कथ्यते॥
सर्वेयोगा: आवश्यका: मनसे शरीराय च। अत: समग्रयोगस्य अभ्यासं कुरु क्रमश:॥
कतिपया: कथयन्ति योगोऽस्ति कष्टदायक:। पूर्णत: कथनमिदं निर्मूलमस्ति वस्तुत:॥



योगकर्तृषु कोऽपि न बन्धनं हि आवश्यकम्। यः इच्छति स स्वतंत्रः कर्तुं योगं निःसंशयः॥
मुण्डनं गेरूवस्त्राणि संस्कृतभाषणं तथा। आवश्यकं कदापि न योगमार्गे हि वस्तुतः॥
जीवनात्तु पलायनं योगः नास्ति कदाचन। विपरीतः अयमस्ति सम्यक् जीवनपद्धतिः॥
योगस्य तु आधारः श्रद्धाभ्यासौ उभौ अपि। श्रद्धां विना मनुष्यस्तु अन्धवत् अस्ति वस्तुतः॥
नियमित योगाभ्यासी गृहस्थः योगशिक्षणम्। कर्तुं शक्नोति स यदि सिद्धान्तमपि जानाति॥
केवलं नैव पुस्तकैः योगस्य शिक्षणं वरम्। कुशलः योगशिक्षकः वर्त्तते अत्यावश्यकः॥
प्रशिक्षकः हि जानाति अनुभवेन शिक्षणम्। कस्मिन्चन हि विज्ञाने नियमः उत्तमः अयम्॥
योगस्य शिक्षणमस्ति अधुना अत्यावश्यकम्। मनुषस्य अस्तित्वस्य रक्षणमस्ति निहितम्॥
योगप्रशिक्षकाः सर्वे स्मरेयुः सर्वदा इदम्। सन्ति ते ध्वजवाहकाः भविष्यस्य हि संस्कृतेः॥
शान्तिस्तु संभवा अस्ति जीवने न पलायने। यदि निष्कामकर्मस्य अभ्यासः भवति सदा॥

शरीरशुद्धि कर्तुं च कर्माणि सन्ति योगे षट्। कपालभाति त्राटकः बस्ति धौति नौलि नेति॥
फुफ्फुसयोः हि शोधनं कपालभाति कुरुते। त्राटकेन अक्षिज्योतिः ध्यानशक्ति प्रवर्द्धते॥
नासिकामार्गशोधनं नेति क्रिया हि कुरुते। वृहदन्त्रस्य शोधनं बस्तिना भवति सदा॥
क्रियते धौति नौलिभ्यां पुरीततः हि शोधनम्। इमानि सर्वकर्माणि हठयोगः हि कथ्यते॥
देहशुद्धिं घटशुद्धिः कथ्यते योगिभिः बुधैः। स्वास्थ्याय हि घटशुद्धिः परमावश्यकी भवेत्॥
आध्यात्मिकं च भौतिकं जीवनं हि आवश्यकम्। एकं विना द्वितीयं च अपर्याप्तं भविष्यति॥
द्वौ पक्षौ हि विना यथा उड्डीयन्ते न पक्षिणः। तथा मनुष्यजीवने उभौ हि स्तः आवश्यकम्॥
भविष्यं तु मनुष्यस्य यथापूर्वं भविष्यति। योगाभ्यासेन परन्तु सानन्दं सहनीयं च॥
कारणशरीरमेव आत्मा कथ्यते योगिभिः। अनुभूतिः यदा तस्य भवति सा हि अन्तिमा॥
योगस्य अन्तिमं लक्ष्यं अस्ति इयं अनुभूतिः। न हि आवश्यकः योगः किन्तु इमां हि प्राप्तये॥

विना योगं हि बहुभिः प्राप्ता इयं अनुभूतिः। पुनर्जन्मनि पूर्वस्य साधनया हि संभवा॥
मानवजीवनस्य तु साफल्यप्राप्तिर्भवति। सर्वे हितस्य कर्माणि सुसंगतानि स्वमेव॥991॥

अष्टमोऽध्यायः

आत्मनः सम्बन्धिनः वार्त्ताः

स्वजीवने अत्युत्तमाः प्राप्ताः अनुभवाः मया। द्वाविंशति मम गृहे भूरासीत् एकरमिता॥
अवयः पंचशतं च कुक्कुराः दशसंख्यकाः। अश्वाश्च द्वादशाधिकः भृत्याश्च समसंख्यकाः॥
अहमासं प्रबन्धकः अतिक्रोधी निरंकुशः। गालिं पदप्रहारं च भृत्यान् दत्त्वा प्रसन्नोऽहम्॥
किन्तु अन्वाभवं अन्ते कृतं मया अनुचितम्। प्रत्येकस्य मनुष्यस्य आत्मसम्मानं भवति॥
आत्मसम्मानं अन्यस्य स्वीकरोमि अतः यदि। अधिकाधिक कार्याणि कारयितुं शक्नोम्यहम्॥
प्राप्ताः बहु अनुभवाः गुरोः सान्निध्ये मया। लेखनानुवादस्य टंकनस्य तथापि च॥



विक्रयक्रमे तु प्राप्ता क्षतिसहनयोग्यता। इमे गुणाः कथयन्ते व्यवहारकुशलता॥
चिदानन्दः गुरुभ्राता गुरोः आसने तिष्ठति। अतः सोऽपि गुरुः अस्ति गुरुभ्राता कदापि न॥
तस्य पूजा परम्परासम्मता अस्ति निश्चितम्। गुरुणा एव निर्मितः न मात्रा जनकेन वा॥
सन्तानः अस्मि गुरोः हि न तु पितुः मातुर्न वा। मात्रापित्रा अपक्वा हि आसीत् सामग्री प्रस्तुता॥

गुरुणा एव सा पक्वा अहं अस्मि तथा कृता। दौर्बल्यं आनुवांशिकं न किन्तु आध्यात्मिकता॥
मह्यं तु गुरुणा दत्तं सम्यक् लक्ष्यं हि जीवने। ममान्तरे शिला आसीत् निर्मातुं मंजुप्रतिमाम्॥
अतः हि गुरुणा इयं प्रतिमा अस्ति निर्मिता। लौहं कुरुते सुवर्णं स्पर्शमणिः सत्वरम्॥
तथैव हि सद्गुरुणा शिष्यः क्रियते स्व सदृश्। मुंगेरे खृष्टवर्गेण विद्यालयः प्रचलितः॥
बाइबिले अहं तत्र योग उक्तिं अदर्शयम्। योगप्रशिक्षणं तत्र अद्यापि सुप्रचलति॥
बड़ौदा नगरे अपि अहं मुस्लिम सज्जनान्। अबोधयम् नमाजे हि कृतानि आसनानि वै॥
पंचवारं प्रतिदिनं कुर्वन्ति योग आसनम्। एतादृशं न संसारे कोऽपि अन्यः करिष्यति॥
तेषां एकेन विज्ञेन लिखितं एकपुस्तकम्। इस्लामे योगः नामकं सुप्रसिद्धं हि अभवत्॥
तत् पठित्वा गुणिजनाः योगं कुर्वन्ति प्रायशः। यतः योगः न धर्मोऽस्ति विज्ञानमस्ति निश्चितम्॥
अहं परिचितः अस्मि देवघरस्य वासिभिः। नवाडीहस्य तथापि देवीचकस्य सर्वैः हि॥

मम अस्ति एका नीतिः ज्ञातुं वै प्रतिवेशिनः। तैः सह शुभसम्बन्धं निर्माणकरणं सदा॥
ददामि निर्णयमहं अन्यस्यस्मै केवलं तदा। यदा कश्चिदपि अन्यः विघ्नकरः न भवति॥
नदी गच्छन्ती अग्रे हि सागरं मिलति सदा। तथा एव अहमपि सदैव अग्रे अगच्छम्॥
गृहं त्यक्त्वा कदापि न तत्र जातु हि अगच्छम्। गुरोः हि आश्रमपि कदापि न गतः पुनः॥
मुंगेरमपि त्यक्त्वाहं रिखियायां हि आगतः। गमनाय पुनः तत्र न इच्छामि कदाप्यहम्॥
ईशस्य गृहमेव अस्ति मम गृहमपि। भ्रमणार्थमिहागतः प्रयाणबेला अधुना॥
मार्गयितुं स्वसम्बन्धं ईश्वरेण सह मया। व्यतीतानि च पंचाश वर्षाणि अनवरतम्॥
धैर्यशाली अतः भूत्वा मार्गय तं निरन्तरम्। कदाचित्तु यदि लग्नः सफलता भविष्यति॥
संश्लेषणं मनुष्याणां शक्तिशून्यता महती। स्वभावः नितरामयं मह्यं जातु न रोचते॥
संश्लेषणं मया सह कदापि न हि संभवम्। संन्यासिनः गृहस्थस्य कश्चिदन्यस्य अथवा॥

अतः अहं न इच्छामि शिष्यः मम कोऽपि भवेत्। विजने शून्यवत् भूत्वा भवेयं एकलः प्रभो॥
युवाकाले कदापि न मया तु चिन्तितमिदम्। संन्यासी भविष्याम्यहं किन्तु अभवत् तादृशः॥
पूर्वं तु अवगतवान् मया सर्वं कृतं सदा। परन्तु अद्य स्पष्टोऽस्ति कश्चिदन्यः अकारयत्॥
आन्दोलने तु योगस्य सदा मुंगेरवासिनः। पूर्णतः तत्परो भूत्वा सहायकाः हि अभवन्॥
गंगापारात् प्रतिदिनं पटोलाश्च दुग्धं दधिम्। जनः पर्याप्तमात्रायां सदा आनीय दत्तवान्॥
रिखिया आगमनं पूर्वं अशान्तः सर्वदा अहम्। प्रभुः कदा मेलिष्यति परमशान्तोऽस्मि अद्य वै॥
उक्तं बाइबिले अस्ति मम पिता तथा अहम्। एकैव स्म अहं किन्तु न मन्ये कथनमिदम्॥



अहं तस्य कणादपि तुच्छ: अस्मि स्वजीवने। सूर्य: स: अस्ति अहं तु प्रकाश: तस्य केवलम्॥
मार्गेषु भक्तिमार्गो हि परमोत्तम कथ्यते। विशेषत: य: ईशस्य दर्शनं कर्त्तुमिच्छति॥
एका किन्तु द्वयोर्मध्ये बाधा वर्त्तते निश्चितम्। शरीरं अथवा मन: किंचिदन्यत् वा भावना॥

दूरीकर्तुं इमां बाधां मार्ग: एको न द्वितीय:। स मार्ग: अस्ति सम्बन्ध: निर्मित: ईशेन सह॥
स सम्बन्ध: मया प्राप्त: अहं दास: स हि प्रभु:। करोमि अत्र यत् किंचित् तस्य हि आज्ञया एव॥
भृत्य: य: अपि करोति स्व इच्छया कदापि न। तस्य अर्पणमस्ति ईशं प्रति हि सर्वदा॥
ध्यानं जपं करोम्यहं परमेशस्य आज्ञया। यदि अनुमति: नास्ति अतिशीघ्रं त्यक्ष्यामि तौ॥
कश्चित्तु मार्गभ्रष्टोऽपि पुन: प्राप्नोति स्वगृहम्। स एव कथ्यते धर्म: येन प्राप्त: हि ईश्वर:॥
अन्याकाचित् परिभाषा धर्मस्य अमान्या मया। ईश्वरभक्तयोर्मध्ये सम्बन्ध: अस्ति धर्म स:॥
न मम हृदये रिक्तं स्थानं हि अस्ति अधुना। सम्पूर्णं होटलमेव तस्मै एव आरक्षितम्॥
उषित्वा हि त्रिमासेभ्य: महात्मागान्धी-आश्रमे। तस्य जीवनपद्धतिं दृष्टा मयाति निकटे॥
सर्वे तस्य व्यवहारा: संन्यासिवत् हि पूर्णत:। सर्वतोभावेनासन् नास्ति किंचित् हि संशय:॥
तस्यजीवनपद्धतिंदृष्ट्वाशक्नोमिकथितुम्। गृहस्थ:राजनेताचकोऽपिसंन्यासजीवनम्॥

यापयितुं शक्नुवन्ति गान्धिना इत्युदाहृतम्। शौचालयं स्वकीयं च वस्त्राणि अपि पात्राणि॥
प्रक्षालनमकुरुत अतिव्यस्त भवन्नपि। वस्त्राय तं तु निर्माणं कूपात् जल उदंचनम्॥
स्वसम्बधित सर्वाणि कार्याणि स्वयमकरोत्। विचारधारामीदृशीं दृष्ट्वा अहममन्यत॥
तं स्वनेता च आदर्श: वै अद्यपर्यन्तमपि। राजनेतापि भूत्वा स अस्मान्यप्यति रिच्यते॥
परमोत्तम अहिंसक: तस्य एतेन शौर्येण। जातं भारतं स्वतंत्रं सर्वै: ज्ञातं तथ्यमिदम्॥
महात्मासीत् स शब्दश: स्वावलम्बी च भक्त: च। विश्वे तु स: अद्वितीय: उत्कृष्ट: आस्थावानपि॥
शताब्दी तु इयमस्ति प्रौद्योगिकी हि नामिका। किन्तु आगामी शताब्दी शताब्दी भक्ते: एव हि॥
नृणां तिस्र: प्रवृत्तय: वित्तैषणा दारैषणा। पुत्रैषणा तृतीया च सर्वा: हि अति प्रबला:॥
शुल्कान् उपरिवर्णितान् दत्त्वा हि कोऽपि सक्षम:। अग्रे गन्तुं विकासाय भवति प्राय: जीवने॥
किन्तु अहं अदत्त्वैव अनुसृत्य हि संयमम्। सर्वा: पारगत: अस्मि भगवत् कृपया श्रुणु॥

कस्मिंचित्तु चतुर्थ्यपि लोकैषणा प्रवर्द्धते। किन्तु भगवत् आज्ञया सेवाकार्यं करोम्यहम्॥
भावनायां विशेषता ममास्ति दासभावो हि। गुरो: द्वादशवर्षेभ्य: शिष्याणामपि तत्समम्॥
ईशस्य शेषजीवने स्वभाव: अद्य दासता। गुरु: गर्दभ: अस्ति शिष्य: अस्ति कुक्कुरवत्॥
गुरो: द्वादशवर्षेभ्य: अहमासं कुक्कुरवत्। अधुना अपि ईशस्य अहमस्मि कुक्कुरवत्॥
यस्मिन् स्थाने अहमस्मि तदस्ति मम मन्दिरम्। यस्मिन् कर्मणि लग्नोऽहं तदस्ति भगवत्सेवा॥
गुरुणा शिवानन्देन आहूता: मलवाहका:। कृत्वा पादप्रक्षालनं स्वहस्ताभ्यां अखादयत्॥
भूत्वापि शक्तिशालिन: भारतस्य संन्यासिन:। देशसेवां न कुर्वन्ति धिक् इहेक् जीवनं अहो॥
ते यदि उत्सुका: जाता: सर्वकारा: न चिन्तिता:। जनता सुखिनो जाता सुखस्य वर्षा भवेत्॥


A

येऽपि संन्यासिन: मया मिलिता: जीवनपथे। शिवानन्दस्य जीवनं नितरां दृश्यते पृथक्॥
अखादयत् यदि किंचित् कस्मैचित् किंचिददात्। तदा हर्षितो भूत्वा धन्यवादा: अकथयत्॥

उत्तम: गायक: आसीत् तस्य वाणी सुमधुरा। प्रभावशालिनी अपि आकर्षिकी अतीव हि॥
हिन्दीतमिलभाषायां आंग्लसंस्कृतयोरपि। भक्तिमयरचना: कृत्वा अगायत् मधुरस्वरे॥
नृत्यप्रेमी अपि आसीत् तेन पृष्ट: नवागत:। जानाति गायनं यदि गीत्वा श्रावय सत्वरम्॥
सर्वप्रथमं नारीभ्य: स हि संन्यास दत्तवान्। तत्पश्चात् अहमपि नि:संकोचं ददामि वै॥
अहं रथोऽस्मि ईश्वर: रथवाहो हि वर्त्तते। अहं तु यंत्रपुत्रक: यंत्रक: स हि सर्वदा॥
स्थित्वा मयि परमेश: सर्वं कारयति मया। सेवामपि न हि अहं करोमि कारयति स:॥
ईश्वरस्य हि दासोऽहं सोऽस्ति मम अधिपति:। यथैव स आदिशति तथैव क्रियते मया॥
सकृत् हि जीवने मया याचित: परमेश्वर:। परन्तु दण्डनं तस्य अद्यपर्यन्तं भुङ्क्तेऽहम्॥
तत्याचनं मम आसीत् योग विस्तृति: भुवने। गुरो: आज्ञानुसारेण करवाणि अहं प्रभो॥
याचना तु पूरिताभवत् परन्तु दण्डनं श्रृणु। मेलनं केनचित् सह न इच्छामि तथापि च॥

सर्वदा परिवेष्टित: जनै: अस्मि अनिच्छित:। अहं नितान्तं एकान्ते वसितुमिच्छामि वस्तुत:॥
अधुना नैव संन्यासी न गृहस्थ: न क्षत्रिय:। ब्रह्मचारी न पुरुष: वानप्रस्थी न नारी च॥
न गुरु: नैव शिष्यश्च भारतीय: न जर्मन:। नैव कश्चिदहमस्मि नितरां शून्यवत् श्रृणु॥
संविष्ट: एकदा आसं वेदिकायां हि सुखत:। भयानक: ध्वनि: एक: श्रुत: बमविस्फोटवत्॥
कुटीरमधुना अस्ति तत: ध्वनि: स आगत:। उत्थाय अपश्यमेकं सकूर्चं अति जरठम्॥
गच्छन्तं स अतिशीघ्रं अदृश्य: किन्तु अभवत्। तत्र गत्वा खाता एका गर्त्ता दृष्टा महीयसी॥
अपरेद्यु: न दृष्टा सा आसीत् सा भूमि: पूर्ववत्। महाश्चर्यं कथमियं अविश्वसनीयाभवत्॥
घटनेयं यदाऽभवत् जागरूक: अहमासम्। अलौकिकी घटनेयं अत: नास्ति मतिभ्रम:॥
जीवने ईदृशं वृत्तं भवति हि यदा कदा। किन्तु आवश्यकं नास्ति तस्मिन् विचारकरणम्॥
गर्भगृहस्य एकान्ते एकदाहं निरंतरम्। त्रिवर्षेभ्य: उषित्वा हि अभवं साधनारत:॥

नवानुभवा: अभवन् ये बहि: न हि संभवा:। अत: एकान्तसेविन: संन्यासिनां हि उत्तमा:॥
अहं तु गुरो: आज्ञया देशे देशे तटे तटे। घोषितुं योगसंदेशं अटामि आर्तिनाशाय॥
गुरो: अन्वेषणे काले मया प्राप्त: महागुरु:। अहं क्रोधी स सुशान्त: अहं मूर्ख: प्रबुद्ध: स:॥
महाऽधीर: अहमासं स: आसीत् धैर्यसागर:। मिथ्यावादी अहं यदि सत्यवादी च नित्यश:॥
दयाहीन: अहमासं दयामूर्त्ति सदैव स:। कृपण: वै अहमासं उदार: स महत्तम:॥
मार्गय ईदृशं गुरुं य: अस्ति तव पूरक:। अन्यथा जीवनं वृथा भविष्यति न संशय:॥
अहं तु कंचन धर्मं महत्त्वं न ददामि वै। सर्वोपरि महत्त्वं तु मानवतां ददाम्यहम्॥
तत्पश्चात् क्रमश: राष्ट्रं धर्मं तु हि तृतीयत:। मानवतां विभजते स्वीकरोमि न धर्मं तम्॥



अहमिच्छामि कोऽपि न जानातु अत्र सहिक: । हिन्दू: अथवा मुस्लिम: ईसाई अथवा अन्यत् ॥
इष्टकानां हि निर्माता रिखियायामासीत् नर: । पृष्ट: मया स: अवदत् न जानीम अहं तु क: ॥

हिन्दू: अथवा मुस्लिम: नितरामज्ञात: हिस: । वरमस्ति यदि कश्चित् विभेदोऽयं न जानाति ॥
यदि एवं हि भवतु कियत् वरं भवेत्तदा। हिन्दूमुस्लिमकलह: कदापि न भविष्यति ॥
अंगीकरणं कस्यचिद् गुरो: जीवनपद्धतिम् । अति कठिनं भवति प्रायश: हि असंभवम् ॥
आत्मसात् करणे गुरो: जीवनशैलीं पूर्णत: । अनेकानि च वर्षाणि व्यतीतानि मया अहो ॥
तथापि अधुना मन्ये न प्राप्त: तस्य पूर्णताम् । गुरुरस्ति अद्वितीय: अनुकरणं न संभवम् ॥
काचित् आर्थिक समस्या ममाग्रे न हि वर्त्तते । कुर्वन्ति सर्वकार्याणि मम शिष्या: समर्थका: ॥
मम तु सम्पत्ति: नास्ति रूप्यकाणि अपि नहि । अहं तु भिक्षुक: अस्मि सम्बन्धी नापि कुत्रचित् ॥
संन्यासजीवनं नास्ति कठिनं यथा मन्यते। जीवनं सांसारिकं हि मन्येऽहं कठिनतरम् ॥
जीवनं वैभवपूर्णं व्यतीतं मया स्वगृहे । ईषदपि विलासिता किन्तु आकर्ष्टुं नाशक्नोत् ॥
यदाहि गुरो: आश्रमं अगच्छं नास्तिक: अहम् । गुरो: सामीप्येनाहं तु अभवं पूर्ण आस्तिक: ॥

जीवने मे साफल्यस्य कारणो भगवद्कृपा । तथा च आत्मविश्वास: मनाक् शंका न स्वोपरि ॥
यावज्जीवनं कदापि धनं न याच्यते मया। आनन्दमयजीवनं धनं विनापि संभवम् ॥
श्रृणोमि कीर्त्तनं यावत् ऊर्ध्वं मनो हि गच्छति। आत्मलोके अहं तावत् विचरामि दूरे दूरे ॥
यदा मन: लये नादे ध्वनौ मंत्रे निमज्जति। पवित्रो हि परिवेश: दिव्यश्चभवति सदा ॥
यदा मुंगेर आश्रम: स्थापितोऽभवत् मया। तदा अहं गुरुरासं पाचकश्च प्रशिक्षक: ॥
शनै: शनै: वर्द्धित्वा स अद्यास्ति विश्ववंदित: । बिहारयोगभारती योगविश्वविद्यालय: ॥
अहं एकान्तवासाय रिखियायां हि आगत: । नेच्छामि मेलितुं कश्चित् मार्गबाधासमा इदम् ॥
न गुरु: अस्मि कस्यचित् कश्चित् शिष्यो न हि मम । नितरां एकलो भूत्वा इच्छामि जीवितुमहम् ॥
मम आवेदनपत्रं प्रेषितं तस्य आफिसे। कदा स्वीकृतं भवति प्रतीक्षेऽहं प्रतिदिनम् ॥
मोक्षमथवा निर्वाणं नैव कदापि कामये। रिटर्नटिकटं प्राप्य पुन: आगमिष्याम्यहम् ॥ 1111 ॥

– स्वामी प्रज्ञातीर्थ सरस्वती







'गुरु-भक्ति योग का मुख्य सिद्धान्त है गुरु को साक्षात् परमेश्वर के रूप में देखना। गुरु और इष्ट के ऐक्य का अनुभव ही इस सिद्धान्त का व्यावहारिक पहलू है। इस योग-मार्ग के द्वार सबके लिए खुले हैं। इस योग में आचार्योपासना द्वारा गुरु-कृपा प्राप्त करने पर विशेष बल दिया गया है। योग्य एवं समर्पित शिष्य को इस योग का फल शीघ्र मिलता है। गुरु-भक्ति योग अन्य सभी योग-मार्गों का आधार है, सभी मायनों में यह सर्वोत्तम योग है।'

'सत्यम् आराधना' पूज्य गुरुदेव, श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को समर्पित स्तुतिसंग्रह है, जिसमें स्तोत्रों के अतिरिक्त गायत्री, चालीसा, अष्टोत्तरशतनामावलि, सहस्रनामावलि तथा सुमधुर चरितावलि का समावेश किया गया है। श्री स्वामी शिवानन्द जी के आदेश की पूर्ति हेतु श्री स्वामीजी ने जिस योग-क्रांति का शंखनाद किया, उसकी स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर प्रकाशित यह ग्रंथ, श्री स्वामीजी की कृपा, स्नेह और आशीष प्राप्त करने की स्वर्णिम कुंजी है।



[bar code here]

ISBN : 978-93-81620-39-7